

प्रति,
सचिव
संगीत नाटक अकादेमी
रविंद्र भवन
नई दिल्ली

विषय : ICH स्कीम 2015-16 के अंतर्गत **निमाड़ के जनपदों की गणगौर परम्परा के आख्यान, लोकगीतों, नृत्य, संस्कार/विधानों के शोध प्रलेखन तथा गीतों के ऑडीओ दस्तावेजिकरण** की दूसरी रिपोर्ट।

संदर्भ : ICH स्कीम 2015-16 के पत्र क्रमांक 28-6/ICH Sc/PAC/1303/45

महोदय,

हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि संगीत नाटक अकादेमी ने विलुप्त होती सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और प्रलेखन के संदर्भ में ICH स्कीम 2015-16 हेतु हमें चयनित कर सांस्कृतिक धरोहरों एवं परम्परा से जुड़ने का सृजनशील अवसर दिया। **निमाड़ के जनपदों की गणगौर परम्परा के आख्यान, लोकगीतों, नृत्य, संस्कार/विधानों के शोध प्रलेखन तथा गीतों के ऑडीओ दस्तावेजिकरण** विषय पर आधारित शोध कार्य करते हुए हमने मध्यप्रदेश के निमाड़ प्रांत के खरगोन, हरदा, भुवानिया, खंडवा, झाबुआ के सुदूर अंचलों- जनपदों की यात्रा की। निमाड़ के प्रमुख पर्व गणगौर के महत्व को जाना समझा। गणगौर के पौराणिक पर्व की उत्पत्ति के संदर्भ में मिथकीय कथाओं और लोक कथाओं के आधार को जाना और उनका प्रलेखन किया। विभिन्न गांवों में यात्रा करते हुए बुजुर्ग पीढ़ी की महिलाओं से गणगौर गीत सुने, पूजा पद्धति को समझा और उनकी रिकॉर्डिंग भी की तथा दस्तावेजिकरण किया। कई घरों में गीत संपदा को अंकित करके भी रखा गया है। हमने गणगौर गीत की संपदा को बड़े कृतज्ञता के साथ उनसे ग्रहण किया। चैत्र माह में होने वाली गणगौर के पर्व के हम साक्षी बने।

आशा है निमाड़ की गणगौर के सम्बंध में गीतों, कथाओं तथा पूजा विधियों का यह प्रलेखन इस विषय में जिज्ञासु तथा शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शन का काम करेगा तथा लाभकारी सिद्ध होगा।

भवदीय

हेमंत देवलेकर

विहान सोशयो कल्चरल वेलबीईंग सोसायटी, भोपाल

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा प्रदत्त

ICH SCHEME 2015-16 के अंतर्गत

**निमाड़ के जनपदों की गणगौर परम्परा के आख्यान,
लोकगीतों, नृत्य, संस्कार/विधानों के शोध प्रलेखन
तथा गीतों के ऑडीओ दस्तावेजीकरण**

— द्वितीय रिपोर्ट का अनुक्रम —

गणगौर पर्व की प्रस्तावना

गणगौर पर्व गीत तथा उनके प्रसंग और आशय

गणगौर पर्व का पौराणिक महत्व

गणगौर पर्व का लौकिक महत्व

गणगौर पर्व की कृषि से संबद्धता

गणगौर पर्व की पूजा- अनुष्ठान विधियाँ

शोध व संकलनकर्ता

हेमंत देवलेकर

विहान सोशयो कल्चरल वेलबीईंग सोसायटी, भोपाल

गणगौर की प्रस्तावना

गणगौर पर्व एक जीवित परम्परा

गणगौर मूलतः गौरी याने पार्वती और शिव का पर्व है। रणुबाई और धणियर राजा की जोड़ी उन्हीं का प्रतीक हैं। गणगौर दाम्पत्य जीवन का सबसे प्रमुख पर्व है। यह पर्व दाम्पत्य जीवन का आनुष्ठानिक उत्स है। गणगौर पर्व में निमाड़ के प्रत्येक दम्पति अपने आपको शिव और गौरी महसूस करते हैं, इसीलिए भाव-विह्वलता में रणु-धणियर के रथ सिर पर रखकर ढोल की थाप पर नाचने लगते हैं और नाचते-नाचते शिवत्व के चरम तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। नृत्य के माध्यम से आत्म तत्व की तलाश का इससे बढ़कर और कोई पर्व नहीं हो सकता, दाम्पत्य जीवन का इससे चरम सुख और क्या हो सकता है ? सुखी और समृद्ध वैवाहिक जीवन की कामना का ऐसा लोक पर्व है, जिसके मूल में पौराणिक आख्यान हैं अर्थात् देवी देवता हैं। गणगौर न केवल एक पर्व है बल्कि व्रत भी है। यह पर्व जब कुँवारी कन्याएँ मनाती हैं तो उत्तम जीवन साथी की कामना उनका ध्येय होता है। तथा जब विवाहिता या सुहागिनें इसे मनाती हैं तो उनकी यही कामना होती है कि पति दीर्घायु और समृद्ध रहे। इन कामनाओं में ही व्रत का उत्स छिपा हुआ है। इस कारण यह पर्व स्त्रियों का प्रमुख पर्व है। यह पर्व इस बात को भी मुखर रूप से प्रकट करता है कि गृहस्थ धर्म के लिए या सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए स्त्री का साहचर्य कितना महत्वपूर्ण है। स्त्री के साथ, प्रेम और भरोसे के बिना पुरुष की कोई पहचान नहीं होती। स्त्री तत्व शक्ति के रूप में सदैव पुरुष तत्व के साथ रहा है। जब हम स्त्री को शक्ति के रूप में अनुभव करते हैं या स्मरण करते हैं तो सहज ही लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा की अवधारणा पर हमारा ध्यान जाता है। यदि हम स्थिति, उत्पत्ति और संहार के तीन देवताओं विष्णु, ब्रह्मा और शिव पर विचार करें तो पाएँगे कि उनकी प्रेरक शक्तियाँ वही हैं। यह प्रकृति में व्याप्त एक प्राकृत सत्य है कि किसी भी कर्म और सृजन के लिए एक शक्ति तत्व की सदैव वांछना रही है। मनुष्य के संकल्प में वह शक्ति तत्व निहित है। हर्ष उल्लास में भी वह शक्ति तत्व है, प्रेम के भीतर भी वह शक्ति तत्व है। पर्वों - त्यौहारों में भी वही शक्ति तत्व उपस्थित है। गणगौर ऐसा ही एक पर्व है जो स्त्री-पुरुष के साहचर्य तथा प्रेम पर आधारित है। जो जीवन की परिपूर्णता की कामना करता है। यह पर्व समस्त सांसारिक सुख वैभव की कामना करता है। यव पर्व जो वास्तव में व्रत है स्त्रियों की स्वाधीनता का पर्व है। उनके अस्तित्व व अस्मिता की खोज का पर्व है। उन पर जो गृहस्थ जीवन का उत्तरदायित्व है उसके प्रति उनके त्याग व समर्पण का पर्व है।

गणगौर चैत्र माह में नौ दिन तक मनाया जाने वाला सबसे प्रमुख और प्रथम पर्व है। चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी से लेकर शुक्ल पक्ष की तृतीया तक मनाया जाता है। यह मातृदेवी गौरी की आराधना का पर्व है। गौरी जी को बेटी के रूप में पाहुणी स्वरूप आमंत्रित किया जाता है। जिस तरह कोई विवाहित स्त्री अपने मायके में आती है उसी तरह रणुबाई (गौरदेवी) अपने पीहर में आती हैं। एक बेटी कि तरह उनकी समस्त इच्छाओं कामनाओं की पूर्ति करने में सारा परिवार उत्साह उमंग से जुट जाता है।

अब जहाँ राजस्थान और पश्चिमी मध्यप्रदेश के लोग देश के और भागों में बस गये हैं वहाँ भी गणगौर पर्व मनाया जाने लगा है। मध्यप्रदेश का पश्चिमी क्षेत्र निमाड़ और मालवा के नाम से जाना जाता है।

इसमें पश्चिम उत्तर का वह हिस्सा भी शामिल है, जो राजस्थान से लगा हुआ है। अर्थात् अशोकनगर गुना, शिवपुरी, मुरैना, ग्वालियर तक में गणगौर पर्व की परम्परा देखी जा सकती है। "गणगौर का पर्व उत्तरप्रदेश के ब्रज तथा बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों में अधिक मनाया जाता है। ब्रज में मनाये जाने वाले इस त्यौहार पर राजस्थान का पर्याप्त प्रभाव है बुन्देलखण्ड में शिव-गौरी और गणेश जी का अधिक महत्व है। मेवाड़ में यह त्यौहार उदयपुर, नाथ- द्वारा तथा गोगुन्दा में विशेष रंगोल्लास के साथ मनाया जाता है। उदयपुर की गणगौर की विशेषता महाराजाओं की भव्य एवं कलात्मक सवारी के कारण है। इसे देखने के लिए दूर-दूर तक के लोग उमड़ पड़ते हैं।

इसे मूलतः मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में मनाए जाने की परम्परा है। इसे कहीं गनगौर, गणगौर, गनागौर और कहीं गौरी पर्व के नाम से जाना जाता है। मध्यप्रदेश में यह पर्व निमाड़ प्रांत में मनाया जाता है। इसका निमाड़ में इतना अधिक महत्व है की इस पर्व की प्रतीक्षा वर्ष भर की जाती है और महीने भर पूर्व से उसकी तैयारी की जाने लगती है। जिस घर में गणगौर की स्थापना होने वाली होती है उस घर-परिवार का उत्साह और उल्लास अवर्णनीय होता है। नौ दिन तक चलने वाले इस पर्व का एक-एक दिन पवित्रतम और भावमय होता है। इस अवसर पर निमाड़ के विभिन्न जनपद गीतमय हो उठते हैं और शिव-पार्वती, ब्रह्मा-सावित्री, विष्णु-लक्ष्मी तथा चंद्र-रोहिणी की वंदना के गीत गाए जाते हैं। इनमे सबसे अधिक गीत रणु देवी और उनके पति धणियर राजा (सूर्य) के सम्वाद रूप में कहे गए हैं। गणगौर गीतों को गाते हुए गणगौर नृत्य भी किया जाता है। मटकी तथा झालरिया गणगौर के प्रमुख पारम्परिक नृत्य हैं। गणगौर जवारों के माध्यम से फसल कटाई की खुशी का कृषि पर्व भी है। गणगौर पर्व में घर के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी होती है। इसके पूजा, अनुष्ठान तथा अन्य रिवाजों में केवल स्त्रियों की सहभागिता होती है और पुरुषों का प्रवेश वर्जित होता है। पूजा अर्चना के शास्त्रीय विधानों में मंत्रों तथा ऋचाओं को गाया जाता है जबकि लोक विधानों में गीतों का गायन होता है। इससे लोक गीतों की महत्ता प्रतिपादित होती है। साथ ही गीत सिरजने की लोक की रचनाशीलता और कल्पनाशीलता का प्रमाण मिलता है।

गणगौर पर्व कब से मनाया जाता है इसकी पृष्ठभूमि की प्रामाणिकता के लिए अनेकों विद्वानों ने विचार किया है लेकिन वे किसी लक्ष्य या किसी निश्चित निर्णय पर नहीं पहुंचे। गणगौर मैया राजस्थान की हैं या गुजरात की मालवा - या निमाड़ की? इसके बारे में तर्क वितर्क करना बेमानी होगा क्योंकि जनमानस में उनके प्रति अपार आस्था और विश्वास है। युगों से चली आ रही परम्परा के पीछे कौन सी शक्ति काम कर रही है जो उसे आज तक जीवित रखे हुए है। किसी पर्व या परम्परा को जीवित रखने के लिए इतिहास कुछ नहीं कर सकता। उसके लिए संवेदनशील संस्कृति की ज़रूरत होती है। इतिहास हमें किसी घटना या तिथि की जानकारी भर देता है। लेकिन संस्कृति किसी जीवित परम्परा का अहसास कराती है। गणगौर पर्व एक जीवित परम्परा है। पर्व आने से पूर्व ही घर-घर में एक विशेष सक्रियता- हलचल देखी जाती है। बच्चों से लगाकर बूढ़ों में हमारी माताओं और बहनों के चेहरों पर हर्ष की अमिट आशा झलकने लगती है। यही गणगौर पर्व की सजीवता है। जिस दिन यह सजीवता समाप्त हो जाएगी उस दिन गणगौर पर्व इतिहास बन जाएगा।

"गणगौर" के उद्भव का अर्थ कुछ भी रहा हो। आज तो यह नारियों का अटल अमर सुहाग का प्रतीक बना हुआ है। जहां लड़कियों के लिए गणगौर लोक देवी 'पाहुणी - बहन- सखी-सहेली' सब कुछ है, वहां "गणगौर" उन्हें अच्छा वर देने वाली माता भी हैं। परन्तु जहां महिलाओं के लिए गणगौर सुहागदायिनी है, वहां वह उनकी, पड़ोसी किशोरी कन्या भी है। जिसे परिणिता लड़की की तरह पर्व काल के अंतिम दिन सभी स्त्रियाँ, बालिकाएँ विदा करती हैं। गणगौर मैया का पर्व इतना सरल सहज और विश्वसनीय है कि वह हर भाई की बहन, पिता की पुत्री - बच्चों की माता और सर्वसाधारण की देवी माँ लगती हैं। गणगौर मैया सबकी मनोकामना पूरी करती हैं। वे पवित्रता और शुचिता की देवी हैं। सुख और दुःख में समान रूप में रहने वाली माता हैं। वह तरुणी हैं- प्रौढ़ा हैं - उनका हृदय प्रेम और स्नेह से लबालब भरा हुआ है। माँ के सामने न कोई बड़ा है, न कोई छोटा- वह तो निश्छल भाव से सबकी पुकार सुनने वाली दया की सागर, दयालू- कृपालू माँ हैं। जिस किसी ने गणगौर मैया को हृदय की अनन्त गहराई से दीन भाव से आर्त हो कर पुकारा- माँ ने अविलम्ब उसे अपनी उपस्थिति का अहसास कराते हुए उसकी पुकार सुनी। (यहां समर्पण भाव के साथ पुकार लगनी चाहिए) उसके निर्मल आंचल कि छांव की सभी कामना करते हैं। वह कभी सामान्य स्त्री की तरह दिखाई देती हैं, तो कभी महान विदुशी और शक्ति की तरह दिखाई देती हैं। वह अपने भक्तों के थोड़े ही दुःख और तकलीफ़ में विह्वल हो जाती हैं।

माँ भगवती गणगौर मैया का प्रकृति से गहरा नाता है। प्रकृति की समस्त ऊर्जा को धारण करने वाली गणगौर मैया में परिवार की केन्द्रीयता - मोहल्ले की पारिवारिकता है। उसमें गांव की एकता, प्रदेश की व्यापकता है। और सम्पूर्ण भारत की सार्वभौमिकता है। वे लोक देवी हैं। इसी रूप में कुल मिलाकर गणगौर मैया का एक सहृदय मानवी पूजा प्रतिष्ठा अनुष्ठान सभी जगह होता है।

गणगौर पर्व पश्चिम भारत का विशिष्ट अनुष्ठानिक पर्व है। खास कर राजस्थान - गुजरात और पश्चिम मध्यप्रदेश में गणगौर पर्व मनाने की प्रथा है। अब जहां उक्त स्थानों के लोग देश के अन्य भागों में बस गए। वहां भी गणगौर पर्व उतने ही उल्लास से मनाया जाने लगा है। यह त्यौहार मनाने की अद्वितीय प्रथा, मैया के गीत, झालरे के साथ स्वांग, इत्यादि रंगारंग कार्यक्रम को देख कर - अन्य देश वासी भी प्रभावित हुए हैं। आज देश में अपनी विशिष्ट अमिट पहचान बनाने वाली गणगौर मैया को सभी लोग भक्ति और श्रद्धा के साथ मनाते हैं और मनवांछित फल प्राप्त करते हैं। यहाँ इस बात के उल्लेख ज़रूर करना चाहेंगे कि पूरे भारत वर्ष में गणगौर पर्व के बारे में वे लोग भी जानते होंगे, जिनका गणगौर से सीधा सरोकार नहीं है। देश में गणगौर पर्व से कोई अपरिचित नहीं है। इस शोध के बाद ऐसा हम मानते हैं।

गणगौर पर्व काल एवं विधान

‘गणगौर पर्व’ चैत्र और वैशाख माह के कृष्ण पक्ष में क्रमानुसार इस प्रकार करते हैं, जिसका समापन चैत्र में अमावस उपरान्त दूज को एवं वैशाख में अक्षय तृतीया को हो सके। जिस परिवार में यह अनुष्ठानिक पर्व मनाया जाता है। उस परिवार के बड़े बुजुर्ग सावा लेने के लिए, जहां गणगौर मैया को पाहुणी लाने के लिए सावा देने वाला पडिहार (वड़वा) रहता है, उस के पास जा कर उससे मैया के नाम बैठक बिठा कर पूछते हैं। पडिहार के सिर जो देवी शक्ति आती है वह अपनी समझ अनुरूप चैत या वैशाख में मैया की पाहुणी बुलाने का समय और विधि बताता है। उसी अनुरूप गृह स्वामी अपने घर मैया को पाहुणी लाने की तैयारी करता है। सावा मिलने पर परिवार के सभी सदस्य बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ अपने घर को साफ-सफाई कर पवित्र करते हैं। इसी बीच ‘सेवामाय’ जो इस अनुष्ठान की मुख्य होती है, से मिल कर पर्व काल में लगने वाली समस्त पूजन सामग्री के साथ आवश्यक बाज़ार किया जाता है। इसी सेवामाय के निर्देशन में नौ दिवसीय गणगौर महोत्सव सम्पन्न किया जाता है। जैसे-जैसे गणगौर पर्वकाल का समय निकट आता है परिवार के सदस्यों के साथ रिश्तेदार एवं ईष्ट मित्र सभी लोग तन, मन और धन से इस पावन कार्य में अपना वांछनीय सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं। इस पवित्र अनुष्ठानिक नौ दिवसीय कार्यक्रम की पत्रिका छपाई जाती है जिसे गृह स्वामी भजन मंडलियों को आमंत्रित करने के लिए उनके गांव जाकर पत्रिका देकर आमंत्रित करते हैं।

जब मैया को पाहुणी लाने का समय आता है, उस दिन परिवार की माताएं बहनें अपने गाँव- कस्बे, शहर में घर-घर जाकर महिलाओं को प्रातःकाल मुहुर्त अनुसार निश्चित समय पर अपने घर बुलाने का आमंत्रण करती हैं। उस निश्चित समय पर परिवार एवं ग्राम की महिलाएं मैया गणगौर के मंगल गीत गाती हुई होलिका दहन स्थल पर जाकर भूमि पूजन कर होलिका दहन की भस्म एवं यहां की मिट्टी लेकर घर आती हैं। उसे सेवामाय लेकर उस पवित्र भस्म एवं मिट्टी पर मैया का कलश स्थापित करती हैं। माताएं गाती हुई बांस की बनी हुई कोरी टोकनीयां पांच सात नौ की संख्या में लेकर गांव से बाहर उस स्थान पर जाती हैं, जहां से ऐसे उत्सव कार्यक्रम के लिए पवित्र मिट्टी को कुदाली से खोद कर अपनी अपनी टोकनियों में लेकर गाती हुई घर आती हैं। यह जो मिट्टी लाई जाती है इसे केशर एवं कस्तूरी के नाम से संबोधित किया जाता है। जिसे कूट कर अच्छे प्रकार से बारीक कर गणपति जी के नाम एक पटे पर एवं मैया के नाम टोकनियों में डले दोनों में ज्वारे बोये जाते हैं- जिन्हें नर्मदा जी आदि पवित्र नदियों के जल से सिंचन किया जाता है। मैया की जहां बाड़ी बोई जाती है वह स्थान सेवामाय अपनी पसन्द अनुरूप चुनती है जहां उन्हें किसी भी प्रकार का व्यवधान ना हो सके जिस कमरे में मैया की बाड़ी बोई जाती है उसके द्वार पर रेशम की साड़ी का पट लगाया जाता है। सेवामाय नौ गवरनीयों की साक्षी में मैया का आवाहन कर विधिपूर्वक कलश स्थापना कर कलश को सोने के ज़ेवरों से सजाया जाता है, ज्वारे बोये जाते हैं। मैया के प्रतीक रूप में कलश का पूजन सभी

गवरणियां करती हैं। मैया की आरती गायी जाती है। यह क्रम नौ दिन व्रत के साथ घर परिवार के सदस्य एवं गवरणियाँ बड़ी ही पवित्रता और सदाचार शुचिता के साथ करते हैं।

मैया के पूजन में गौरबाइयों की सेवामाय के साथ विशेष भूमिका रहती है। यह उपरोक्त सभी कार्य दोपहर बारह बजे के आसपास सम्पन्न कर दिया जाता है। तत्पश्चात फलाहार उपरांत परिवार के पुरुष एवं महिलाएँ ग्राम में आस-पड़ोस में घर-घर जाकर रात्री में मैया के मेवा प्रसादी-झालरे का बुलावा देते हैं। रात्रि में आठ और नौ बजे के लगभग ग्राम के आमंत्रित पुरुष महिला मैया गणगौर के दरबार में पहुंच कर मैया के स्थान को प्रणाम कर देवी माँ गणगौर के गाने गाते हैं। झालरे देते हैं। गांव की माताएं भी हिल-मिल कर नए वस्त्र (चुनरी घाघरे) पहन कर गीत गाते हुए बड़ा सा घेरा बना कर नाचते हुए मैया की आराधना सेवा करती हैं। इस बीच बाहर ग्राम की आमंत्रित भजन मंडली आती है। वो अपना रंगारंग कार्यक्रम झालरे स्वांग आदि की प्रस्तुति करते हैं।

मैया के जवारों की प्रतिदिन तीन बार आरती की जाती है। सुबह के समय गौर माताएं स्नान के तुरंत बाद गीले कपड़े (एकसरा) में मैया के जवारे बोये मकान के गर्भगृह में जाकर आरती पूजन करती हैं। मैया के आगे हाथ जोड़कर लोट लगाती हैं। इस नौ दिवसीय पर्व काल में परिवार का प्रत्येक सदस्य आगन्तुकजनों से हाथ जोड़कर सम्मान के साथ संवाद करता है। अपने मुंह से किसी प्रकार का भी अपशब्द ना निकले, सत्य ही बोलें, इस बात का विशेष ध्यान रखता है। इस प्रकार कई नियमों का पालन करते हुए इस को पूर्ण किया जाता है।

गणगौर मैया की भक्ति की शक्ति का ऐसा अनूठा प्रभाव रहता है। जिसके चलते चैत्र और वैशाख की भरी दुपहरी में मैया के सेवक नंगे पैर घुमते रहते हैं। प्रतिदिन पाती खेलने जाने वाली माताएं, बहनें गौर माताओं के साथ, पूजन स्थल से गांव से बाहर आम्र वृक्ष तक, नंगे पैर जाती हैं। गौर माताएं जवारे स्थल से पूजन कर एक ताम्र कलश को फूलपाती एवं स्वर्ण आभूषणों से सजाकर मैया के मंगल गीत गाती हुई अपनी सहेलियों के साथ पाती स्थल पर पहुंचकर कलश स्थापन पूजन कर मैया के गाने गाते हुए झालरे देती हैं। जहां आम्र वृक्ष तले मैया के कलश का स्थापन किया जाता है वहां गौमाता के गोबर से लीप कर स्वास्तिक बनाकर रखा जाता है। कलश पूजन आम्र वृक्ष की पूजन के पश्चात पाती खेलने का कार्यक्रम प्रारम्भ होता है। बाहर गांव से मैया को पाहुणी बुलाने वाले परिवार के रिश्तेदारों के यहां से बाइयां आती हैं। वे और ग्राम की सभी माताएं बहनें हिलमिल कर झालरें गाकर स्वांग का तमाशा करती हैं। यह क्रम तीन

चार बजे तक चलता है वहां से आने के बाद बाहर से पाती खेलने वाली माताओं का भोजन होता है और उन्हें विदाई दी जाती है। महिलाओं के पाती स्थल पर किसी भी पुरुष वर्ग के जाने की पाबंदी रहती है। पाती का खेल माताओं का बहुत ही निराला और गोपनीय रहता है। माताएं बहनें पाती स्थल पर स्वतन्त्रता पूर्वक अपना पाती खेल गीत झालरें करती हैं। यह क्रम प्रतिदिन चलता रहता है। वहाँ से आने के बाद गवरनियां फलाहार कर थोड़े विश्राम उपरांत शाम की आरती करती हैं और घर आंगन में बाइयों का झालरा गीत कार्यक्रम सात बजे के लगभग प्रारंभ हो जाता है जो नौ बजे तक

चलता है। नौ बजे के बाद पुरुष वर्ग अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। जहां पर मैया के झालरे दिए जाते हैं। स्थान को बड़े ही सुन्दर तरीके से सजाया जाता है। झालरा स्थल के मध्य में एक बीस-पच्चीस फीट लम्बी बल्ली गड़ाई जाती है, उसके आसपास गोलाई पच्चीस फीट के गोले में बल्लियां गढ़ा कर जिलेटिन पन्नियों से सीरिज का आकर्षक ढंग से घेरा सजाया जाता है। वहां मध्य में गायक कलाकारों की सुविधानुसार टेबल वगैरह रखा जाता है। ग्राम के एवं बाहर के कलाकार अपनी प्रस्तुति से उपस्थित मैया के भक्तों का मनोरंजन करते हैं। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहता है।

'गणगौर पर्व बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ ग्रामवासी मनाते हैं। इस पर्व काल में मैया के दर्शन के लिए जो भी भक्त मैया की बाड़ी अन्तर पट तक पहुंचता है, वह स्नान कर मैया के दरबार में पहुंचेगा। वहां पहुंचकर मैया के द्वार पर प्रणाम करता है और मैया से अपनी प्रार्थना करता है। दर्शनार्थियों को गंगाजल, गौ मूत्र, तुलसी दल के छींटे नीम के झरे से दिए जाते हैं। अंतर पट के अन्दर गौर माताओं एवं सेवामाय के अलावा अन्य का प्रवेश वर्जित रहता है।

गण और गौर इन दो शब्दों से मिलकर 'गणगौर' बना है। गण का अर्थ शिव तथा गौर का अर्थ पार्वती से लिया जाता है जैसे मालवा में ईसर, ईश्वर भगवान शंकरजी की मूर्ति को कहा जाता है। ईसर - ईश्वर शब्द का अपभ्रंश है। इस नाते ईश्वर को शंकर भगवान का स्वरूप मानना भी स्वभाविक है। मालवा के प्राचीन मंदिर अवंतिका के ईश्वर रूप राजा महाकाल (शंकरजी) ही माने गए हैं। निमाड़ में रणु के पति को धणियर राजा कहा जाता है। गीतों के माध्यम से रणुबाई और धणियर राजा को सर्वोच्च सम्मान दिया गया है। वहीं गऊर ईश्वर-सईत ब्रह्मा-रोपण चन्द्रमा के नाम के भी गीत गाए जाते हैं। आखिर इनका संबंध गणगौर पर्व से क्या है- जो इनके इस पर्वकाल में गाने गाए जाते हैं। इस हेतु लोक में ऐसी मान्यता है कि गणगौर के माध्यम से ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों महादेवताओं की वन्दना की गई है। एक निमाड़ी गीत में गऊर बाई (रणुबाई) के पिता का नाम हिमाचल का उल्लेख हुआ है।..

**जल जमुना पाणीख गई ओ गऊरबाई
लुखडो धोयो न टीकी खोई,
एक वारी की टीकी पाउ रे हिमाचल
गऊरबाई का दादाजी न जात नी जाणी
जोगिडा रव दिनी परणाय
जोगिडा म्हारा मन वस्या
खुटी बल्या अम्बा तुम्बा
आंगणा में राख के ढेर ।**

गौरी ही गऊरबाई- गणगौर मैया रणुबाई है, माता गौरी के पति भगवान शंकरजी हैं। जन्म जन्मान्तर से गौरी ने शिव को अखण्ड सौभाग्य के रूप में प्राप्त किया है। इसलिए लोक में शिव और पार्वती की

प्रतिष्ठा सर्वोपरि रही है। इस निमाड़ी गीत से भगवान शिवजी के विचित्र रूप का बड़ा ही सुन्दर वर्णन दर्शाया है। हे गौरी- तुम्हारे पिता ने न जाने किस जाति के साधू से तुम्हारा विवाह कर दिया है। न उसकी जात पात का न घर-द्वार का न सूरत का ठिकाना है। वह विचित्र वेशधारी है। उसके घर खूंटियों पर तुम्बे लटके हैं और आंगन में धुनी की राख के ढेर के सिवाय कुछ भी नहीं है। तुम्हारे पिता-काका- भाई और मामा ने ऐसे वर को किस प्रकार स्वीकार किया।

भील जनजाति में गणगौर

हिंदू धर्म में कई त्यौहार ऐसे हैं जिन्हें विभिन्न जातियाँ और जनजातियाँ मिलकर मनाती हैं तथा जीवन में उत्साह-उल्लास का वातावरण बनाए रखती हैं। ये त्यौहार भारतीय संस्कृति के अभिन्न और ऊर्जस्वी अंग हैं। इनमें कुछ त्यौहार धार्मिक हैं, कुछ प्राकृतिक हैं, तो कुछ मानव केंद्रित भी हैं।

मध्यप्रदेश को बोलियों के अनुसार चार वृहत भागों में बाँटा जाता है। निमाड़, मालवा, बुंदेलखंड, बघेलखंड। इनकी बोलियाँ क्रमशः निमाड़ी, मालवी, बुंदेली तथा बघेली हैं। हमारे शोध का विषय निमाड़ प्रांत के एक प्रमुख त्यौहार गणगौर पर केंद्रित है। गणगौर पर्व क्या है? यह क्यों मनाया जाता है? कब मनाया जाता है? कैसे मनाया जाता है? गणगौर पर्व पर कौनसे गीत गाए जाते हैं? आदि का शोध व प्रलेखन हमारा ध्येय है। निमाड़ के विभिन्न जनपदों में गणगौर पर्व मनाने की क्या रीतियाँ हैं, यही केंद्रीय विषयवस्तु है। हम देखते हैं कि भौगोलिक दृष्टि से निमाड़ क्षेत्र में विभिन्न जातियाँ - जनजातियाँ भी रहती हैं। भील ऐसी ही एक प्रमुख जनजाति है। भीलों की पहचान मुख्य रूप से तीर कमान से होती है। भीलों में कई तीज त्यौहार ऐसे हैं जो ग्रामीण और शहरी इलाकों में होते हैं। गणगौर ऐसा ही एक पर्व है जो भीलों में भी मनाया जाता है। उनके भी अपने गीत इस पर्व पर गुंजायमान होते हैं। यहाँ हम गणगौर को भीली परम्परा के अनुसार देखने का प्रयत्न करते हैं।

प्रस्तुत आलेख में गणगौर की पूजा विधियों के बारे में जानकारी संकलित है तथा उस अवसर पर गाए जाने वाले प्रमुख गीत संलग्न हैं। साथ ही उन गीतों की भावभूमि का भी वर्णन किया गया है।

चैत्र मास में संवत्सर प्रतिपदा (गुड़ी पड़वा) के बाद तृतीया के दिन से प्रदेश में 'गणगौर उत्सव' मनाया जाता है। गणगौर पार्वती जी का और ईश्वरजी (धणियर राजा) भगवान शंकर का स्वरूप माना जाता है। इस जोड़े को सुन्दर मुखौटों से वस्त्र आभूषण पहनाकर हूबहू शंकर-पार्वती जी का रूप दिया जाता है। होलिका दहन के दस दिन बाद बाँस की टोंगियों में मिट्टी-खाद भरकर एकादशी के दिन गेहूँ बोये जाते हैं, इसे 'माता के जवारे' कहते हैं। जड़वाँ की तीज के दिन माता खेलती हैं, ढोल बजता है और खेलने वाली महिला को माता का भार चढ़ता है, उसे 'झाड़' कहते हैं। झाड़ खेलकर जाते हैं, फिर गणगौर तथा ईश्वरजी को सिर पर उठाकर स्त्री-पुरुष या कोई भी ढोल बजाते हुए, बिना चप्पल के बाड़ी में जाते हैं। बाड़ी की पूजा तो प्रातः से ही प्रारम्भ होकर दोपहर तक कर लेते हैं। झाड़ खेलकर बाड़ी उठाने की आज्ञा देते हैं। सभी जन माता के जवारे, गणगौर और ईश्वरजी के लिए बने आसन पर रखकर घर लाते हैं। इस जोड़े को 'माता का रथ' भी कहते हैं। घर लाकर जवारों को दातौन कराना, खिलाना-पिलाना आदि क्रियाएँ विधिवत् करते हैं। माता के अनुरूप ही जोड़े की भी पूजा की जाती है। जवारों को झूले पर भी रखा जाता है। घर का प्रत्येक व्यक्ति पूजा-अर्चना करता है। उसके बाद भोजन ग्रहण करते हैं। दिन में तीन बार जवारों को पानी पिलाते हैं।

रात्रि में माता को रथों में रखकर पूरे गाँव में ढोल बजाते हुए पानी पिलाने ले जाते हैं। महिलाएँ-लड़कियाँ सभी को पानी पिलाती हैं और फिर ढोल बजना प्रारम्भ होता है। रथों को सिर पर उठाकर महिलाएँ-लड़कियाँ एवं पुरुष नृत्य करते हैं। रथों की पोशाकों में गोटा-सितारे चमकते हैं।

पानी पिलाकर वापस लाते हैं, फिर ग्राम के बड़े चौक में सातये मांड कर आसन पर रथों को एक पंक्ति में चौक में बैठा देते हैं, फिर ढोल पर स्त्रियाँ - पुरुष, लड़के-लड़कियाँ मनमोहक नृत्य करते हैं। कहीं रात्रि में दो बजे तक, कहीं प्रातः चार बजे तक नृत्य चलता है। जब तक विसर्जन नहीं होता है, तब तक यह कार्यक्रम प्रतिदिन चलता है। बुधवार के दिन विसर्जन नहीं होता है।

माता रात रखना

कोई अपनी मनोकामना पूर्ति के लिये माता को रात में रखता है। झाड़ खेलते हुए जाते हैं। रथों को जवारों में रखते हैं, जो रथ नहीं बनाते हैं, वे बाँस की टोकरियों को कन्धे या सिर पर उठाकर निकलते हैं। ग्राम की जनसंख्या अनुसार लोग विसर्जन जुलूस में जाते हैं। घर से विदाई की रीति बेटे की विदाई के रूप में होती है। माता को रात रखने वाला व्यक्ति परम्परा से चले आ रहे स्थान पर, माता की मनुहार कर वापस लाता है और सभी रथों को अपने घर या उचित स्थान पर रखकर पूजा-अर्चना करता है। रात्रि में फिर पूर्व अनुसार पानी पिलाने और नृत्य के कार्यक्रम होते हैं। माता रात रखने वाला दूसरे दिन प्रातः जाति वालों को तथा अन्य मिलने वालों को भोजन करवाता है। झाड़ को भी फलाहार कराता है। संध्या को विसर्जन जुलूस में लोग 'गणगौर माता की जय, ईश्वर राजा की जय, धणियर राजा की जय' बोलते हुए निकलते हैं और ग्राम की परम्परा अनुसार कुँए या नदी पर जवारों को विसर्जित करते हैं। इस रात्रि में चौक में नृत्य का कार्यक्रम होता है। दूसरे दिन अपने-अपने घरों पर रथों को खोलकर सुरक्षित रख देते हैं। बड़े उल्लास के साथ सभी श्रद्धालु जन गाते हुए निकलते हैं

चालो गजानन जोशी रे जावाँ, आछा-आछा लगन लिखावाँ गजानन

कोठारी गादी पे नोबत वाजे।

नोबत वाजे इन्दरगड़ गाजे, झिणीं-झिणीं झाँझर बाजे गजानन

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

निमाड़ क्षेत्र के हरदा ज़िले के कुकरावद जनपद के लोक संस्कृति प्रेमी श्री ललित कुमार शुक्ला से हुए संवाद के आधार पर -

वैसे तो गण माने समूह होता है लेकिन गण को भगवान शिव भी माना गया है और गौर मतलब माता पार्वती हैं। रणुबाई मतलब मां पार्वती और धणियर राजा भगवान शंकर हैं। इनकी आराधना नौ दिन विभिन्न प्रकार से की जाती है। जैसे नौ दिन नवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है। उसी तरह इसमें चैत्र और वैशाख माह में कृष्ण पक्ष में जवारे बोये जाते हैं। चैत्र में नवरात्रि के दूसरे दिन इसका समापन होता है और वैशाख में अक्षय तृतीया के दिन इसका समापन होता है और इसमें जो भी यजमान या जो साधक अपने घर देवी को आमंत्रित करता है, वो परंपरा अनुसार गुरुओं या देवी देव से अनुमति मांगते हैं। विधि प्रकार उनसे विनती की जाती है। देवी जी को पाहुणी हर कोई आमंत्रित नहीं कर सकता। माता जी का या गुरु का आदेश होना चाहिये। कई बार वे मना कर देते हैं कि नहीं आप ईश्वर नहीं बुला सकते तो उस व्यक्ति को पात्रता नहीं होती। क्योंकि देवी की, गुरु की या जिसे भी हम श्रेष्ठ मानते हैं उनकी आज्ञा के बाद ही गणगौर सम्पन्न हो सकता है। वैसे भी हम जो भी धार्मिक अनुष्ठान करते हैं उसके लिए हम गुरु या पंडित से आज्ञा लेते हैं। गणगौर में देवी की कृपा होनी चाहिये, तभी आप उन्हें आमंत्रित कर सकते हैं। दूज से पहले, होली की जो राख होती है, उसे पवित्र कर लाया जाता है और जवारे बोए जाते हैं। गेहूँ के जवारे शुद्ध और पवित्र भाव से कलश में बोते हैं या किसी गमले में गणपति के स्वरूप में बोते हैं या बांस की टोकरियों में बोते हैं। जहां बोए जाते हैं उस घर को पहले साफ किया जाता है, लीपाई-पुताई की जाती है। गंगा जल, नर्मदा जल तथा गौ मूत्र से आँगन को नौ दिनों तक बुहारा जाता है। एक सेवा माय होती है जो उनका ध्यान रखती हैं, कब उन्हें जल देना है। उन पर सूरज की किरणें और किसी की भी छाया नहीं पड़ने देना है, यही सब। परिवार की जो बहन बेटियाँ हैं उन्हें गौर बाई कहते हैं, जो माता पूजती हैं जो दिन भर गौरा माँ की पूजा अर्चना करती हैं। उन नौ दिन, कपाल कुँकू से भरा होता है और उन्हें देवी स्वरूप ही माना जाता है। इस आयोजन के दौरान जो आयोजक है, उसके मन में काम क्रोध मद लोभ नहीं आना चाहिये। उसमें केवल भक्ति के भाव होना चाहिये। बहुत ही पवित्र मन के साथ इसे मनाया जाता है। मुख्य तत्व 'भाव' ही होता है। आयोजक परिवार एक तरह से साधु बन जाता है और जितनी भी गौरबाईयाँ होती हैं, उनमें देवी का स्वरूप देखता है। गौरबाईयाँ हर दिन 3 बार आरती करती हैं, जहां जवारे बोये जाते हैं। फिर वो एक कलश लेकर आम के वृक्ष के नीचे पूजा करने जाती हैं। कलश लिए हुए गौरबाईयों के बीच हास-विनोद, परिहास भी होता है। वहाँ सिर्फ महिलाएं होती हैं। वहां से वापस आने के बाद पुनः वे पूजा करती हैं। शाम को फिर एक भव्य आयोजन होता है। पंडाल लगता है, समूह में नृत्य संगीत होता है। झालरे दिए जाते हैं। बीच बीच में हास-परिहास युक्त स्वांग भी होता है। इसमें जो मुख्य भाव होता है वो माता पार्वती और भगवान शंकर की आराधना ही होता है। माता पार्वती को बेटे के रूप में आमंत्रित किया जाता है, जिनकी आखरी दिन शादी भी की जाती है। जैसे सीता जी ने राम को पाने के लिए गौर की पूजा की, माँ पार्वती ने शंकर जी को पाने के लिए हरतालिका जैसे कई व्रत किये हैं, रुक्मिणी और सत्यभामा ने कृष्ण को पाने के लिए पूजा की। जैसे नवरात्रि का पर्व बहुत श्रद्धा के साथ मनाते हैं, गणगौर थोड़ा उससे अलग है, लेकिन भाव वही है।

गणगौर

विभिन्न पुराणों में गौरी - शंकर के विवाह की कथाएँ

वाल्मीकीय रामायण

उमा (गौरी) तथा शंकर के विवाह का प्रसंग प्रस्तुत करते हुए कहा गया है - हिमवान् पर्वत की दो कन्याएं हैं। मेरु पर्वत की पुत्री मेना, हिमवान् की पत्नी है जो इन दोनों कन्याओं की जननी है। ज्येष्ठ कन्या का नाम गंगा है और दूसरी कनिष्ठ पुत्री का नाम उमा है। गिरिराज ने अत्यंत कठिन तप साधना में निरत अपनी पुत्री का विवाह अनुपम प्रभावशाली और सर्व शक्तिमान भगवान् रुद्र से कर दिया। अन्यत्र गंगा को भी शिवपत्नी और उमा की सौतिन कहा गया है।

श्रीमद्देवीभागवत

(सातवी स्कन्ध) के अनुसार मणिद्वीप में निवास करने वाली आदि शक्ति जगदम्बा ने अपनी तीन शक्तियों गौरी, लक्ष्मी और सरस्वती को - प्रकट कर क्रमशः शंकर, विष्णु और ब्रह्मा को सौंप दिया जिससे वे सृष्टि संबंधी कार्यों (संहार, स्थिति और सृजन) में लग गए। कालांतर में हलाहल नामक दैत्यों को पराजित कर देने से शंकर और विष्णु अहंकार वश अपनी शक्तियों गौरी और लक्ष्मी की अवहेलना करने लगे जिससे वे उनसे अलग होकर अन्तर्धान हो गईं। इससे वे दोनों देवता शक्तिहीन होकर असमर्थ और निस्तेज हो गए। तब ब्रह्मा के मानस पुत्र प्रजापति दक्ष ने भगवती जगदम्बा की आराधना कर गौरी नामक शक्ति को पुत्री रूप में प्राप्त किया जो, सत्यांश से उत्पन्न होने के कारण सती कहलाई। समय आने पर यह सती, महादेव शंकर की पत्नी बनी। परन्तु बाद में प्रमाद वश दक्ष, शंकर और सती की अवहेलना करने लगा जिससे क्षुब्ध होकर यज्ञ वेदी पर सती ने अपने शरीर को योगाग्नि से भस्म कर दिया। तब वीरभद्र और भद्रकाली ने प्रकट होकर दक्ष का वध कर दिया। देवताओं की प्रार्थना पर शिव ने दक्ष के धड़ पर बकरे का सिर जोड़ कर उसे पुनः जीवित कर दिया फिर अत्यंत उदास शिव ने यज्ञ में जल रहे सती के शरीर को उठा लिया और पागलों की भाँति देश देश में भटकने लगे, इससे जगह-जगह सती के शरीर के विभिन्न अंग गिर गए। जिन १०८ स्थानों पर ये अंग गिरे वहाँ-वहाँ देवी के सिद्ध पीठ हुए। इन इन स्थानों पर, सती के विरह में अधीर शंकर समाधि में संलग्न रह कर समय व्यतीत करने लगे।

इस तरह सती की अनुपस्थिति में त्रिलोकी के सभी चराचर प्राणी सौभाग्य से वंचित हो गए, सभी रस स्रोत सूख गए, सृष्टि के नियम शिथिल हो गए और देवता- मनुष्य उच्छृंखल से हो गये। उसी समय तारक नामक भयंकर असुर उत्पन्न हुआ जिसे ब्रह्मा से वर प्राप्त था कि भगवान् शंकर के औरस पुत्र के हाथों ही उसकी मृत्यु होगी। तब भगवान् विष्णु के नेतृत्व में सभी देवता हिमालय पर जाकर भगवती जगदम्बा की आराधना करने लगे। समस्त देवताओं द्वारा उसी समय तृतीयादि व्रत का आयोजन बन गया। तब चैत्र शुक्ल नवमी शुक्रवार को अत्यंत तेजोमय ज्योति प्रकट हुई जो थोड़ी देर में देवी रूप में दृष्टिगत होने लगी। उन देवी की कुमार अवस्था और यौवन अभी-अभी खिल रहा था। वे अत्यंत शोभा सम्पन्न और अलंकृत थीं। देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवती परमेश्वरी ने कहा, "हे देवताओं! मेरी शक्ति जो 'गौरी' नाम से विख्यात होगी, हिमालय के घर प्रकट होगी।" यह सुनकर सभी देवताओं ने हर्ष से जयजयकार की और हिमालय तो गदगद हो उठा। परमेश्वरी ने कृपा कर हिमालय को स्वयं से संबंधित अनेक प्रसंग सुनाते हुए अपने तृतीया व्रतों अनन्ततृतीयाव्रत, रसकल्याणिनीव्रत एवं आर्द्रानन्दकरीव्रत की तथा प्रदोषव्रत, शुक्रवार, मंगलवार, सोमवार, चतुर्दशी के व्रतों एवं चैत्र- आश्विन के नवरात्रों की चर्चा करते हुए कहा कि ये मुझे प्रिय हैं। देवी ने कहा कि श्रावण मास के पवित्रोत्सव से मैं प्रसन्न होती हूँ व्रतों के अवसर पर झूला सजाकर उत्सव मनाना चाहिए। इसी तरह शयनोत्सव, जागरणोत्सव, रथोत्सव तथा दोलोत्सव आदि मेरे अनेक उत्सव हैं।

शिवपुराण में उमा संहिता में महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती की पार्वती उमा से उत्पत्ति व उनके चरित्रों का संक्षिप्त वर्णन है। हैमवती उमा का प्रसंग है जिसने चैत्र शुक्ल नवमी को ज्योति रूप में प्रकट होकर देवताओं से कहा, "मैं ही परब्रह्म हूँ, मैं ही सब कुछ है, मेरे अतिरिक्त कुछ नहीं है।" शिव पुराण के इक्यावनवें अध्याय में लिखा गया है चैत्र शुक्ल तृतीया को भवानी की - प्रसन्नता के लिए व्रत करने से जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति मिलती है। तृतीया को शंकर सहित जगदम्बा उमा की पूजा कर दोलोत्सव करना चाहिए। पुष्प, कुंकुम, वस्त्र, कपूर, अगरु, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्पहार व अन्य गन्ध द्रव्यों द्वारा शिव सहित सर्वकल्याणकारिणी महामाया महेश्वरी श्री गौरी देवी का पूजन कर उन्हें झूला झुलाना चाहिए। जो प्रतिवर्ष इस तिथि को देवी का व्रत व दोलोत्सव करता है उसे शिवा देवी सम्पूर्ण अभीष्ट पदार्थ देती हैं। वैशाख एवं ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को भी शिवा की पूजा करना चाहिए।

आषाढ शुक्ल तृतीया को देवी का रथोत्सव करना चाहिए। यह उत्सव देवी को अत्यंत प्रिय है। पुष्पों आदि से सुसज्जित रथ में शिवा देवी को विराज दें। फिर रथ को धीरे-धीरे चलाते हुए जय-जयकार करें और प्रार्थना करें, यात्रा के समय नाना प्रकार के बाजे बजवाएँ। ग्राम या नगर की सीमा पर जाकर रथारूढ देवी की पूजा कर नाना स्तोत्रों से उनकी स्तुति करें और फिर रथ को वापस घर ले आएँ। जो जगदम्बा देवी गौरी का यह रथोत्सव करता है वह लोक में सम्पूर्ण भोगों का 'उपभोग कर अन्त में देवी-धाम को प्राप्त होता है।

श्रावण व भाद्रपद शुक्ल तृतीया को अम्बा का व्रत-पूजन करने से पुत्र-पौत्र-धन की प्राप्ति होती है। आश्विन शुक्ल में नवरात्र व्रत करना चाहिए। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ व फाल्गुन की तृतीया को जो कनेर आदि पुष्पों से देवी की पूजा करता है वह मंगल को प्राप्त होता है, स्त्रियों को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

स्कन्दपुराण

देवी सती ने गिरिराज हिमवान् के घर में जन्म लिया, उनका नाम उमा और पार्वती पड़ा, इन गिरिजा या गौरी देवी ने एकान्तवास में तपस्या कर महादेव को प्राप्त किया। तत्पश्चात गौरी देवी के द्वारा शुम्भ निशुम्भ दैत्यों के वध की कथा दी गई है। मार्कण्डेय पुराण में देवी के महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती चरित्रों की कथा दी गई है। इनमें महासरस्वती का चरित्र, अम्बिका (गौरी) द्वारा शुम्भ-निशुम्भ के वध की कथा है। मार्कण्डेय पुराण के आधार से निर्मित श्री दुर्गासप्तशती के प्राधानिक रहस्य में महासरस्वती ने विष्णु और गौरी को प्रकट किया। फिर मूलप्रकृति महालक्ष्मी ने, महाकाली से उत्पन्न नीलकण्ठ शिव को गौरी (उमा, सती, सुभगा) दे दी।

पद्मपुराण

तारकासुर नामक राक्षस को ब्रह्मा ने यह वरदान दिया था कि तुम अमर अवश्य हो किंतु महादेव शिव के पुत्र द्वारा ही तुम्हारा वध होगा। अब तारकासुर को मरवाने के लिए शिव-पुत्र की आवश्यकता थी। अतः देवराज इन्द्र की प्रेरणा से समाधिस्थ शिव में कामदेव ने प्रवेश किया जिससे क्षुब्ध होकर महादेव ने कामदेव को भस्म कर दिया और स्वयं से उत्पन्न कामाग्नि को आम्रवृक्ष, वसन्त ऋतु, चन्द्रमा, पुष्पों और कोयल के मुख में बाँट दिया। कामपत्नी रति द्वारा विलाप करने पर शिव ने उसे आश्वासन दिया कि समय आने पर कामदेव अनंग रूप से प्रकट होगा। नारद से अभिप्रेरित होकर हिमालय अपनी कन्या पार्वती को, महादेव को समर्पित करने को तत्पर हुआ था परन्तु मदन दाह के समाचार से निराश हुआ। परन्तु पार्वती ने वृषध्वज शिव को प्राप्त करने हेतु हिमालय के अगम्य प्रांत में जाकर वल्कल धारण कर सौ वर्ष तक गुलाब का फूल खाकर, फिर एक पत्ता खाकर, फिर उसका भी त्याग कर तपस्या की। सप्तर्षियों ने पार्वती के शिवानुराग की परीक्षा ली और संतुष्ट होकर शिव को अवगत कराया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। तत्पश्चात् दोनों का विवाह हुआ और कालांतर में पार्वती की कोख से कार्तिकेय का जन्म हुआ जिसने तारकासुर का वध किया।

देवाधिदेव भगवान् शिव के स्वरूप का वर्णन एवं पुलोमा कथा

देवाधिदेव भगवान् शिव अपने स्वरूप और स्वभाव के कारण सबसे अलग हैं। गणगौर पर्व का सिलसिला अनवरत सतयुग से चला आ रहा है। माँ भगवती गणगौर सौभाग्य दायिनी हैं। जैसा कि पूर्व में शक्ति उपासना अंक के लेख के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। यह पर्व ऐतिहासिक साक्ष्य के साथ लोक मान्यता के आधार पर अनवरत चला आ रहा है। विभिन्न मिथकथाओं और किंवदन्तियों के आधार पर गणगौर पर्व शिव पार्वती की पूजा का पर्व है। गणगौर बहन, बेटी, बहू का पर्व है। राजस्थान में गणगौर के अनेक नाम प्रचलित हैं। गौर- गिनगौर - गवरल-गौरल-गवर - गऊर-गौरा- गौरज्या-गवरोर गवरी आदि नाम मुख्य हैं। निमाड़ और मालवा में गणगौर को गौर-रनुदेवी - रणुबाई -मातामाम आदि नामों से जाना जाता है। इसी प्रकार इनके पतिदेव धणियर राजा-ईश्वर राजा- महाराजा नाम से विख्यात हैं।

लोक जितना वास्तविक संसार है, उतना ही काल्पनिक भी, उतना ही कामना से उपजा हुआ भी। इसमें कई कथाएँ ऐसी हैं जिन्हें उपरोक्त हर स्तर पर अनुभव किया जा सकता है और आनंदित हुआ जा सकता है। साथ ही वे कथाएँ मानव समाज को गहरी सीख भी दे जाती हैं। ऐसी ही एक कथा पुलोमा नामक दैत्य की कन्या ने अपने मनवांछित वर प्राप्ति हेतु शंकर भगवान की पूजा की तब शंकर भगवान ने उससे कहा कि चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया को अपनी सहेलियों सहित मौलश्री के पुष्पों का हिंडोला बनाकर उसमें ईशर और गौरी को झुलाते हुए महोत्सव मनाओ। निःसंदेह तुम्हें मनवांछित फल प्राप्त होगा।

शिवजी की सलाह अनुसार पुलोमाजा ने वैदिक रीति से गणगौर की पूजा शुरू की। प्रतिदिन जलाशय पर जाकर प्रातःकाल दुर्वादल संचय कर फूल लाकर गणगौरी की पूजा करने लगी। इधर उसके पिता पुलोमा का कालासुर नामक दैत्य से झगड़ा हो गया। पुलोमा ने उसके नाश के लिए इन्द्र से मदद माँगी। गणगौर पूजन के प्रभाव से इन्द्र के द्वारा पुलोमा का शत्रु मारा गया। पुलोमा ने अपनी पुत्री का विवाह इन्द्र से कर दिया। कालान्तर में पार्वती जी ने भी शिवजी को प्राप्त करने के लिए गणगौरी पूजन किया और त्रेता में जानकी जी ने श्रीरामचन्द्रजी को इसी पूजन के प्रभाव से प्राप्त किया।

**गौरी पूजन के विधान से सम्बंधित
पौराणिक कथाएँ**

माता जानकी द्वारा गौरी पूजन

जानकी जी जब अपनी सहेलियों के साथ पुष्प वाटिका में गौरी पूजन करने जाती हैं और वहां नगर दर्शन करने निकले रामजी भी अपने गुरु पूजन हेतु पुष्प चुनने पुष्प वाटिका जाते हैं। वहां सखियों के माध्यम से श्रीरामजी के दर्शन सीताजी को हो जाते हैं। वहीं से सीताजी, रामजी की हो जाती हैं और माँ गौरी के चरणों की वन्दना करते हुए हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हैं। माता सीता को गौरी पूजन से मन वांछित वर प्राप्ति के बाद से ही गौरी पूजन का प्रचलन हुआ। कालान्तर में मन वांछित फल प्रदान करने वाली माँ गौरी को प्रत्येक घर में गौरी की मिट्टी, लकड़ी, बांस, कपड़े आदि की प्रतिमा बनाकर नौ दिवसीय पूजा अनुष्ठान किया जाता है, जिसमें जवारे रखना - खड़ा रखना भी कहा जाता है के साथ गौरी पूजन की प्रक्रिया चलती है। वही आज तक चली आने वाली गणगौर पूजा पद्धति है। गण का अर्थ समूह से भी होता है। जो गौर-गौरी-पार्वती, मातृदेवी के अर्थ से प्रयुक्त होता है। इस प्रकार गण और गौर का अर्थ समूह की देवी गणगौर से होता है। एक कथा के अनुसार श्री रामजी ने लंका विजय के पूर्व और बाद में गौरी की पूजा की थी।

राधा-रुखमणी-सत्यभामा एवं कुब्जा द्वारा गौरी पूजन

एक लोक कथा के अनुसार श्री कृष्णजी के द्वारिका चले जाने के बाद राधा-रुखमणी-सत्यभामा, कुब्जा आदि ने मनौती के रूप में मिट्टी की प्रतिमा बना कर गौरी की पूजा प्रारंभ की जिससे श्री कृष्णजी का शीघ्र ही आगमन हुआ।

फलतः इसी स्मृति में गौरी पूजा अनवरत क्रम आज भी जारी है। यहां इस गीत से भी बहुत कुछ स्पष्ट होता है।

बहुत भई रे महाराजा धणियर राजा,
बंद करो रे मुरली मुरली - रणुबाई हो रही वन वन की । । टेक ।।
जीव जन्तु अरु कीडी-मकोड़ी कुहकी रया रे
वन म- कच्छ मच्छ नाची रया रे जल म ।।1।।
नाना ताना झोलई म्याना झूली रया रे
वन म- दूध तज दियो रेगऊ को बछुवा ।।2।।
आधि रात का मस्त समैया हरि ऐसी बजाई वनसी
इन्द्र घन घोर घटा छाई ।।3।।
राधा, रुखमा-भामा-कुब्जा अरज कर रे
हरि स उदासी ठाडी (छाई) तीन दिन स ।।4।।

ऊपर दी गई पौराणिक कथाओं से स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि "गणगौर" मातृ देवी है जिसकी पूजा आराधना की प्रथा लोक में अनादी काल से चली आ रही है। इस तरह गणगौर और रनुवाई एक ही देवी के समयातीत दो नाम प्रचलित हो गए। जैसे माँ भगवती की आराधना करने के लिए श्री दुर्गा सप्तशती में तन्त्रोक्त देवी सुक्त के पच्चीसवे श्लोक में कहा गया है :

"या देवी सर्व भूतेशु मातृ रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

इसी प्रकार माँ को शक्ति रूप में दया रूप में, क्षमा रूप में आदि विभिन्न नामों से वन्दना करते हुए नमस्कार किया है। अतः माँ का यह स्वरूप 'गणगौर मैया' के नाम से इस जगत में विख्यात एवं वन्दनीय हुआ। क्योंकि माता ही सहज और सरल होती है- अपने बालकों को कभी भी कष्ट में नहीं देख सकती- पूत कपूत सुने हैं जग में पर माता नहीं सुनी कुमाता। माँ करुणामयी है। अपने बच्चों की करुण पुकार सुनते ही दौड़ी चली आती है। ऐसी कृपालू दयालू माँ के श्री चरणों में बारम्बार प्रणाम-हे माँ आपकी जय हो! जय हो! ।

माँ गणगौर का अन्नपूर्णा स्वरूप

गणगौर मैया के जो पुरातन याने परंपरा से चले आ रहे गीत हैं वे ही मैया की मूल संस्कृति को प्रकट करते हैं। उन गीतों में मैया के विभिन्न स्वरूपों का साक्षात्कार होता है। उनकी अलौकिक शक्तियों का परिचय प्राप्त होता है। नीचे दिए जा रहे गीतों में मैया के 'अन्नपूर्णा' स्वरूप के दर्शन प्राप्त होते हैं।

अन्नपूर्णा मैया का गीत

भवर डोंगर म झूलो वन्ध्यो- म्हारी रणुबाई झूलन जाय जी
झूलता, झूलता तपसी आया- माय-हमरव भिक्षा देओ जी,
थाल भर मोती गरुबाई लाई
लेओ न जोगी भिक्षा जी
काई करुं थारा मानक मोती
अन्न की भिक्षा देओजी
खेतनी पाक्यो खलो नी गायो
अन्न की भिक्षा नहीं देवाजी
आवण दरे चैत- वैशाख को महिनो
जावा हमरा पीयरजी
म्हारा पियर म गेहूं चना रे जोगी-
अन्न की भिक्षा देवाजी ।

इस गीत से जो भाव और दृश्य उपस्थित होता है वह यह है कि गणगौर मैया पर्वत कन्दराओं के मध्य झूला बांध कर अपनी सहेलियों के साथ झूला झूल रही हैं। पृथ्वी पर अकाल पड़ा हुआ है। सभी देवी देवता शिवजी से प्रार्थना करते हैं कि अकाल से पृथ्वी की रक्षा की जाए। तब भगवान भोलेनाथ तपस्वी के भेस में अन्नपूर्णा माँ के पास पहुंचकर भिक्षा माँगते हैं- रणुबाई एक थाल भर कर मोती भिक्षा में देने के लिए लाती हैं - जिसे देखकर तपस्वी कहता है इन मोतियों का मैं क्या करूँ, मुझे तो अन्न की भिक्षा दीजिए। यह सुनकर माँ भगवती कहती हैं। इस वर्ष खेतों में अन्न पैदा नहीं हुआ। ना ही खलिहान में कोई फ़सल गहाई -अन्न की भिक्षा कहां से दें? हे योगी चैत और वैशाख का महिना आने दो, मैं अपने पीहर जाऊंगी वहां गेहूं और चने की फ़सल अच्छी होती है। वहां से लाकर या वहां मैं आपको अन्न की भिक्षा दूंगी।

अन्नपूर्णा अपने मैके से अन्न-तृण और जल लाकर शिवजी को दान करती हैं और पृथ्वी पुनः हरियाली से भर जाती है। अकाल समाप्त हो जाता है, देवी-देवता, पृथ्वीवासी, नर-नारी सभी मैया के नाम का गगन भे दी जयकारा लगाते हुए वन्दना करते हैं।

होलिका-प्रह्लाद की कथा

विभिन्न मिथकथाओं और किंवदन्तियों के आधार पर गणगौर शिव पार्वती की पूजा का पर्व हो ठहरता है जिससे गणगौर कहीं पौराणिक काल की देवी लगती हैं। निमाड़, मालवा और राजस्थान में होली के दूसरे दिन से गौर पूजा का प्रचलन बालिकाओं में है। गणगौर पुस्तक में होली गणगौर की एक कथा दी है। "हिरण्यकश्यप नाम का राजा था, जो बड़ा नास्तिक था उसका एक पुत्र था भक्त प्रह्लाद जो की ईश्वर में गहरा विश्वास रखता था वो अपने पिता का उलट था। भक्त प्रह्लाद बड़ा आस्तिक था। राजा हिरण्यकश्यप अपने बेटे प्रह्लाद को फूटी आँख भी नहीं सुहाता था। उसने उसे मरवा डालने के अनेक प्रयत्न किये पर सब विफल रहे। अन्त में अपनी बहन होलिका को यह कार्य सौंपा जो अपने साथ उसे लेकर अग्नि में प्रवेश कर गयी। इस चिता में बड़ी विचित्र घटना घटी कि जिस होलिका को अग्नि स्नान का वरदान था, वह जल मरी और भक्त प्रह्लाद बाल-बाल बच गया।

होलिका के मरने की खबर चारों ओर फैल गयी। हिरण्यकश्यप का जीना दूभर हो गया। उधर होली के पति ईसर ने चढ़ाई कर दी। हिरण्यकश्यप घबराया। मंत्री, ज्योतिषी, तांत्रिक इकट्ठे हुए। सबने अपनी-अपनी अटकलों से होलिका को जीवित करने का भरसक प्रयत्न किया, पर यह कार्य हुआ बालिकाओं द्वारा, जिन्होंने होली की राख के पिंड बनाकर अपने गीत मंत्रों से उनकी पूजा आरम्भ कर दी। कहते हैं कि सातवें दिन से ही लड़कियों को यह लगा कि पिंडों में प्राण पड़ने शुरू हो गये हैं। इधर लड़कियों के घरों में धन-धान्य, सुख-आनन्द की बढ़ोत्तरी होनी आरंभ हो गयी तो स्वाभाविक था उनकी माताएँ भी उनके अनुष्ठान के साथ अधिक श्रद्धा-आस्था के साथ जुड़ गयी। पन्द्रहवें दिन पूजा करने वाली एक स्त्री को स्वप्न दिया कि तुम मुझे एक काठ की (लकड़ी) प्रतिमा बनाकर उसे अच्छे वस्त्र आभूषणों से अलंकृत कर देना। मैं गौरा के रूप में उसी में जीवित हो उठूँगी।

स्वप्न वाली बात बड़ी जोर से घर-घर फैली। हर महिला परिवार को चमत्कार भी लगा। आस्था और उमड़ी तो सब ओर पूजा धाम प्रारम्भ हो गई। यही होली गणगौर के रूप में जीवित होकर महिलाओं के मंगल कल्याण तथा चिर सुहाग देने वाली देवी बनी। वहीं लड़कियों में अच्छे वर तथा अच्छे घर की उन्हें स्वामिनी बनाने के रूप में पूजित हुई।

"मातृ नामानि कहे जाने वाले अथर्ववेदीय सूक्तों से प्रतीत होता है कि अप्सरा सामान्यतः मातृदेवी है। बदस्तूर मिली-जुली परवर्ती परम्परा तो और भी प्रबल प्रमाण हैं। लक्ष्मी, एक रत्न के रूप में समुद्र से उत्पन्न हुई। उनका नाम रमा, माँ और लोकमाता हुआ अतः वह एक मातृदेवी हैं। सच पूछिये तो मातृदेवी तो उन सभी देवियों को होना चाहिए जिनके नाम में मा प्रत्यय लगा हुआ है; उमा, रुमा, रूशमा इत्यादि।' लोकगीतों में कई जगह रनुदेवी को रनादेवी भी कहा गया है। वही रमा से रना हो गई। जो विष्णु पत्नी लक्ष्मी देवी का पर्याय है। एक मिथककथा में जिस दैत्य कुमारी ने गणगौर का पूजन कर इन्द्र जैसा पति पाया, बाद में उसी कथा में कहा गया है कि कालान्तर में पार्वती ने शिव को

पाने के लिए गणगौर की पूजा की। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि शिव पृथ्वी के प्रथम देवता हैं, इन्द्र की अवधारणा बाद में हुई है जिन्हें बाद में देवताओं का राजा कहा गया। गणगौरी यदि स्वयं पार्वती ही हैं तो पहले पूजा किस प्रकार सम्भव है और वह स्वयं अपनी पूजा करके शिव को कैसे प्राप्त कर सकती हैं। इसका मतलब गणगौर कोई और बहुत प्राचीन मातृदेवी रही होगी, जिसकी पूजा पार्वती और दैत्यकुमारी दोनों ने की होगी और शिव तथा इन्द्र को प्राप्त किया होगा।

गणगौर

लोक जीवन में मातृका शक्ति

लोक जितना वास्तविक संसार है, उतना ही काल्पनिक भी, उतना ही कामना से उपजा हुआ भी। इसमें कई कथाएँ ऐसी हैं जिन्हें उपरोक्त हर स्तर पर अनुभव किया जा सकता है और आनंदित हुआ जा सकता है। साथ ही वे कथाएँ मानव समाज को गहरी सीख भी दे जाती हैं।

लोक की आस्था ही वह अमूल्य तत्व है जो परम्परा के निर्वहन में अपना योगदान दे रहा है। लोक की आस्था ने गणगौर पर्व को अमरत्व प्रदान किया है, जिस के पीछे मातृत्व की गहरी भूमिका रही है। लोक चेतना में प्रत्येक उपकार करने वाली या पीड़ा देने वाली ताकत देवी या देवता का रूप धारण कर लेती है। खासकर ग्रामीण व आदिवासी समाज में ऐसी अनेक लोक देवियों एवं देवताओं की अवधारणाएँ स्वीकृत की जाती रही हैं। जैसे मरीमाता, चेचक माता, शीतला माता, दाना बाबा, जिन्दबाबा, भोमका बाबा आदि इस प्रकार की स्थानीय विचार धारा से निर्मित लोक रीतियाँ हैं। रक्षा के भाव और पीड़ा के भय से मनुष्य अनादिकाल से ही कोई ऐसा सक्षम आध्यात्मिक नैतिक आधार ढूँढता आया है- जो इसे भय मुक्त करा सके। यह आध्यात्मिक भाव और आस्था मातृशक्ति से बढ़कर और कोई नहीं हो सकता। इसी अर्थ में गणगौर मैया प्रत्येक घर में माता के पाट पर उच्च और पवित्र स्थान पर नौ दिनों तक विराजमान रहती हैं। इन नौ दिनों में भक्तजन- जब अपना दुःख और सुख मानवीय धरातल से बहुत ऊपर उठकर आध्यात्मिक एवं आत्मीय स्तर पर मैया के सन्मुख रखता है तब माँ की कृपा से भक्तों की समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। पर्वकाल में घर का पूरा वातावरण एक अव्यक्त खुशी और उत्साह से भर जाता है। इस दृष्टि से गणगौर पर्व की जड़ें लोगों की आत्मा में हैं। इसीलिए आज तक यह क्रम चला आ रहा है।

गणगौर पर्व में अनुष्ठान की महत्ता एवं वृक्ष पूजन

लोक स्मृति और लोक आस्था में बसी लोक देवी गणगौर मैया लोक संस्कृति का अटूट हिस्सा बन गई हैं। जैसा कि शोध के दौरान ग्रामीण व शहरी आस्थावान लोगों से हम मिले और बातचीत की उससे कई विलक्षण तथ्यों का साक्षात्कार हुआ।

गणगौर पर्व में अनुष्ठान की महत्ता रहती है। दैहिक-आत्मिक शुचिता और पवित्रता आदि नियमों को शुद्धता के साथ पालन में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होती है। नियमों और परम्परा के निर्वाह में उत्साह की कमी भी नहीं देखी जाती है। जिस घर में गणगौर मैया पाहुणी लाई जाती हैं - उस घर की माताओं-बहनों की सक्रियता देखते ही बनती है। घर परिवार के पुरुष और बच्चे भी प्रफुल्लित हो कर पर्व में हिस्सा लेते हैं। गणगौर प्रकृति की हरीतिमा और खेती की फसलों की प्रतिष्ठा का उत्सव है। जब मनुष्य ने क्रमिक रूप से खेती करना सीखा तो प्रकृति के माध्यम से उसे कई बीजों का परिचय प्राप्त हुआ। आरंभ में लोग स्वतः उगने वाली फसलों की रक्षा करते थे। अनाज जब पकने की स्थिति में आता था तो चिड़ियों को उड़ाते थे। जंगली जानवरों से फसलों को बचाते थे। कभी कभी सोच समझकर फसल का कुछ भाग छोड़ देते थे। ताकि आगामी वर्ष वह फसल स्वतः उग कर फसल दे सके। धीरे-धीरे मनुष्य ने अनुभव के आधार पर सूखा (अकाल) जैसी स्थिति पड़ने पर जमीन की जुताई प्रारम्भ की। अनेक पीढ़ियों के क्रमिक अनुभव के दौरान कृषि की उन्नति हुई। सैकड़ों छोटी-बड़ी खोजें हुईं तब कहीं जंगली कंद मूल खोदने वाले गेती फावड़े बने और उनका संग्रहकर्ता स्वयं किसान बना।

पेड़, पौधों, बीजों के उपकार के बदले उनकी पूजा का उपक्रम उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। मनुष्य की तरह एक बीज से दूसरे बीज की उत्पत्ति- पेड़ पौधों की अद्भुत ऊर्जा शक्ति ने उन्हें देवताओं के वास का आश्रम बना दिया। इसलिए वृक्ष पूजा संसार के बहुत से भागों में प्राचीन काल से विश्वास के साथ प्रचलित रही है। शिशु रूप में जन्म लेने वाली और देह से मुक्त होकर विचरण करने वाली दोनों प्रकार की आत्माओं का निवास वृक्षों में माना जाता है। वृक्ष देवता हर प्रकार की कामना पूर्ण करने की क्षमता रखते हैं। आज भी हम लोग तुलसी पूजन, पीपल, वट वृक्ष, आंवला, आम आदि वृक्षों का पूजन विविध कामना पूर्ति हेतु करते हैं। जवारे नव जीवन का प्रतीक हैं। जीवन के नए उल्लास का द्योतक हैं। वनस्पतियों से मनुष्य को आरोग्य प्रदान करने के लिए वनस्पतियों से प्राप्त जड़ी बूटियां तथा उनसे निर्मित अनेकों औषधियां हैं जो आयुर्वेद का कल्याणकारी उपादान हैं। पेड़ पौधे और उनकी हरीतिमा का प्रभाव मनुष्य शरीर पर निरन्तर पड़ता रहता है। जौ और गेहूं के नवांकुरों का यह पर्व अनुष्ठान के माध्यम से कितना प्रभावी है, उसकी जीवंत परम्परा उसका प्रामाणिक उदाहरण है। जवारों के वैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि जवारों के अंकुरों से कई प्रकार की औषधियां तैयार की जाती हैं। अमेरीका की डॉ. एन. विगमोर ने पीलिया, गंजापन, सफेद बाल, बाल झड़ना, मधुमेह-रक्त स्राव, कंपवात, पक्षाघात, पोलियो, श्वांस, कास, क्षय, हृदय रोग, श्वेत श्वाव, असाध्य चर्मरोग, कुष्ठ, एक्जिमा, बाल रोग आदि के लिए जवारों को बड़ा उपयोगी माना है। अमेरीका के ही घास विशेषज्ञ डॉ. अर्थ थोमस ने चार हजार सात सौ प्रकार की घासों पर अनुसंधान

करने के उपरांत गेहूं के जवारों को घासों का सम्राट बताया है। उनका कहना है कि जो मनुष्य के खून में तत्व हैं वे सब गेहूं के जवारों में मौजूद हैं। मानवीय रक्त प्रवाहिनियों में यह नील रस अपूर्व शक्ति का पूर्ण सामर्थ्य का और भरपूर पोषण का काम करता है। केवल रंग का ही फर्क है। यह एक प्रकार से रंगीन ब्लड है। प्रत्येक पूजन पाठ में चावल चढ़ाए जाते हैं। उसके पीछे चावल की शीतलता, शुभ्रता, सात्विकता और कोमलता ही है। इस पर्व को मनाने के लिए जितनी भी सामग्रियों का, स्थान का, वृक्षों आदि का प्रयोग किया गया है, उन सब में वैज्ञानिक आधार मौजूद है। उनकी विशेषताओं को अपने में समाये हुए यह पर्व सम्पन्न किया जाता है।

रणुबाई के आंगन में नीम का वृक्ष

रणुबाई का आंगणा में लिमडो वो
जहां लवी कपला गाय वो सहेलडी
चलो सखी देखण जावां । । टेक ।।
चारो नी खाय माता पाणीनी पे वो
वो दे सवा घडो दूध... ।
वो सहेलडी चलो सखी.....
उना दूध वारी म्हारी रणुबाई न्हाव ओ
मली मली धोव लम्बा केश ओ । सहेली... ।
रणुबाई का आंगणा म लिमडो वो वहां वही कपला गाय
हो सहेलडी चलो सखी देखन चाला ।

मैया के आंगन में कपिला गाय का नीम के नीचे बैठना

गऊरबाई का आंगणा म लिमडो वो
वहां बठी कपला गाय वो सहेलडी
चलो सखी देखण चाला
चारो नीखाय माता पानी नी पे वो
दे सवा घडो दूध वो
सहेलडी- चलो सखी देखन चाला
उना दूध बारी म्हारी गऊर बाई न्हाव वो
मली मली धोव लंबा केश वो
सहेलडी चलो सखी देखन चाला ।। 2 ।।
सईत बाई का आंगनाम लिमडो वो
वहां जहां बठी कपला गाय वो सहेलडी

चलो सखी देखन जांवा
चारो नी खाय माता पानी नी पे वो
दे वो सबा घडो दूध वो
उना दूध बारी म्हारी सर्इत बाई न्हाव वो
मली मली धोव लंबा केश वो सहेलडी चलो सखी...
चारो नी खाय माता पानी नी पे वो
देवो सवा घडो दूध
उना दूध वारी म्हारी रोयण बाई न्हाव वो
मली मली धोव लम्बा केश वो सलेलडी चलो सखी देखण जांवा ।
रणुबाई का आंगणा म लिमडो वो
वहां बठी कपला गाय वो सहेलडी
चलो सखी देखन जांवा । 14 ।।

इस गीत का भावार्थ यह है कि रणुबाई के आंगन में नीम का वृक्ष है। नीम का वृक्ष आंगन में होना स्वास्थ्य के लिए शुभ और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। उस वृक्ष के नीचे कपिला गाय याने देवताओं की कामधेनु बैठी है। सखियाँ आपस में चर्चा करती हैं, हे सखी रणुबाई के आंगन में नीम तले कपिला गाय बैठी है। चलो सखी, हम सब उसे देखने चलें। वो कपिला गाय बड़ी ही विचित्र है- न तो वह घास खाती है और न पानी पीती है। फिर भी सवा घड़ा दूध देती है। उस दूध से हमारी गऊरबाई नहाती हैं और अपने लम्बे लम्बे केशों को मल-मल कर धोती हैं। चलो हम सखियां सब हिल मिल उस अचम्भे को देखने चले। इसी प्रकार गऊर बाई के पश्चात सर्इतबाई और रोयणबाई दूध स्नान करती हैं।

गणगौर मैया (रणुबाई) स्नान के पश्चात नख शिख श्रृंगार कर पूजन की थाली सजाती हैं और अपनी सहेलियों को साथ लेकर मंगल गीत गाती हुई गांव में जहां झमराल्या, किसान, कुम्हार, सुतार, सुनार, रंगरेजा और कहार रहते हैं, उनके घर पहुंचती हैं। उन्हें क्रमानुसार झमराल्या भाई, किसान भाई करके आवाज़ देती हैं। अपने घर स्वयं माँ गणगौर को आया देख सभी लोग सपत्निक साष्टांग प्रणाम कर आसन पर बैठते हैं। पूजन वन्दन कर माताजी को झमराल्या नए बांस से बनी टोकनियां देता है, किसान गेहूं देता है। कुम्हार मुखड़े देता है, सुनार गहना देता है। रंगरेजा पीला वस्त्र ओढ़नी देता है। सुतार बानूट देता है और कहार मेवा (ज्वार की धानी) देता है। सभी पर्व से सम्बन्धित सामग्री लेकर अपने निवास स्थल पर आकर माँ भगवती स्वयं अपनी सहेलियों के साथ गौरी पूजन का अनुष्ठान करती हैं। फूल पाती खेलती हैं और अपने श्रीमुख से मातृ शक्ति का महिमा वर्णन करती हैं। जिसे श्रवण कर सभी श्रोता मनवांछित फल प्राप्त करने हेतु माँ भगवती आदिशक्ति के विभिन्न रूपों की आराधना करते हुए अपने जीवन को कृतार्थ करते हैं।

गाय माता के सम्पूर्ण अस्तित्व का महत्व पहचानते हुए लोक में यह प्रबल भावना है कि गोवंश की श्रम शक्ति से पृथ्वी सरलता से जोती जाती है। जिससे अन्नादि विपुल मात्रा में होता है। गोमय से यज्ञ भूमि, गृहस्थों का घर आंगन और वानप्रस्थियों की कुटिया पवित्र होती है। सवत्सा गोदान करने से वैतरणी नदी पार करने का सुयोग प्राप्त होता है। गोदान करके मनुष्य अनेक प्रकार के बद्धमूल (जो कभी समाप्त ना होने वाले) पापों से मुक्त हो जाता है और गो-वंश का संवर्धन करके सृष्टि के विस्तार का पुण्य लाभ प्राप्त करता हुआ पितृ लोक तथा देव लोक को संतुष्ट करता है। गाय के लिए भगवती श्रुति कहती हैं कि निरपराध अदिति रूपा गाय को कभी मारा न जाए यही है हमारी भारतीय संस्कृति के गर्भ में छिपे हुए पर्वों को मनाने का उद्देश्य, पर्व काल में प्रयुक्त साधन सामग्री आदि के समावेश के पीछे भी बहुत बड़ा वैज्ञानिक आधार है, जिसे धर्म कर्म से जोड़ा गया है, ताकि जन साधारण भी लाभान्वित हो सकें। हमारे गणगौर पर्व में ऐसी कई बातों का समावेश किया गया है।

मुख्य रूप से यह माताओं बहनों द्वारा सुहाग की कामना के लिए। गवर्निया या सुहागने इसकी पूजा करती है। कन्याएं सुहाग की कामना के लिए और विवाहित आएं इस कामना से कि उनका सुहाग अटल रहे। सीता जी ने भी गौर की पूजा वर प्राप्ति के लिए की, रुकमणी ने की है कृष्ण की प्राप्ति के लिए, माता पार्वती ने शंकर को पानी के लिए। इसे जनकल्याण के लिए भी किया जाता है। पहले के समय में लोगों की आवश्यकता है बहुत सीमित थी जैसे किसान की यह कामना कि अच्छी वर्षा हो जाए, ऐसी कामनाओं की पूर्ति के लिए भी। पूरा गांव इसे एक त्यौहार के रूप में भी बनाता है हर जन वर्ग का इसमें समान रूप से ध्यान रखा जाता है हर एक व्यक्ति का चाहे वह किसी भी व्यवसाय का हो सबका इसमें योगदान रहता है। जो व्यक्ति पावणी लाता है या माता को बुलाता है किसी अभीष्ट कामना के पूरे हो जाने पर बुलाता है या अपनी मान पूरी हो जाने पर भी आमंत्रित करता है।

गणगौर की शुरुआत के लिए ऐसा माना जा सकता है कि जब देवी सती ने शंकर की कामना की तब से इस अनुष्ठान की शुरुआत है। बस समय के साथ इसका स्वरूप कुछ बदलता रहा, द्वापर में कुछ, त्रेता में कुछ और कलयुग में कुछ। इसमें मुख्य रूप से आराधना पार्वती जी और शंकर जी की की जाती है। बहू बेटियों को देवी के समान माना जाता है उन्हीं के द्वारा गौर पूजे जाते हैं। पुराणों व इतर धर्मग्रंथों में शक्ति का बहुत विशद विवेचन किया गया है। ब्रह्माण्डों के उत्पादन, पालन और संहार करने की शक्ति से सम्पन्न तत्व को ही सभी शास्त्रों ने परात्परब्रह्म के नाम से प्रकट किया है। शक्ति से रहित भगवान भी शक्तिमान नहीं हो सकते एवं शक्ति भगवान से रहित भी नहीं हो सकती। इसलिए उन्हें सर्वदा स्वतंत्र दो रूप नहीं माना जा सकता। जब पुरुष वाच्य शब्द से उस परात्परब्रह्म का प्रतिपादन करते हैं तब उसे विष्णु, शिव, ब्रह्मा, राम, कृष्ण आदि नामों से ईश्वरीय सत्ता को व्यक्त करते हैं। जब स्त्रीवाचक शब्द से उस परब्रह्म परात्पर का प्रतिपादन करते हैं, तब उसे देवी भगवती, महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती, सीता, राधा आदि के रूपों में मानते हैं। इस प्रकार शक्ति दो ऊर्जाओं का परस्पर होना है। यदि प्रकृति के नजरिए से देखें तो स्त्री और पुरुष दोनों ही एक दूसरे की शक्ति हैं। इस तरह दोनों ही एक दूसरे के बगैर अपूर्ण हैं। शक्ति का यह ऊर्जा चक्र सिर्फ स्त्री

पुरुष तक ही सीमित नहीं है। यह प्रकृति और मानव समाज में सब ओर व्याप्त है। इसलिए सृजन में दो या दो से अधिक व्यक्तियों या तत्वों का समावेश होता है।

गणगौर की पूजा-अर्चना का सिलसिला कब से प्रारम्भ हुआ, यह कहना मुश्किल है- क्योंकि कोई ऐसे ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं है, केवल सांस्कृतिक रूप से गणगौर अनुष्ठान और पर्व का मिथक ही लोक में मिलता है।

निमाड़ में गणगौर को गनगौर, गौर, रनुदेवी, गवरल, गोरड़ी आदि नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार उसके पतिदेव धणियर, ईसर, सूर्यदेव आदि के नाम से विख्यात हैं।

लोक में प्रचलित दंतकथाएँ

चैत का महिना आ पहुँचा। कुंजों में आम बौराये और भोली-भाली ग्राम बालाएँ आम्रकुंज में फूलपाती खेलने जाने लगीं। छह से बारह वर्ष तक की आयु की लड़कियों के एक दल ने अनुभव किया कि फूलपाती खेलते समय एक लड़की उनके साथ रहती है। हँसती खेलती है और फिर न जाने कहाँ गायब हो जाती है। वह लड़की न उनके गाँव की थी, न पास-पड़ोस के किसी गाँव की और न ही उनमें से किसी की परिचित। एक दिन उनमें से एक साहसी कन्या ने फूलपाती का खेल समाप्त होते ही उसका हाथ पकड़ लिया। सबने उससे परिचय पूछा।

लड़की का चेहरा चमचमा उठा। सच पूछा जाय तो वह हठ करके, अमर आत्माओं के नियमों का उल्लंघन करके फूलपाती खेलने आई थी। जिस लड़की ने उसका हाथ पकड़ रखा था, उसके हाथ से बाह्य रूप में फिसलकर अपने देवी रूप में कुछ दूर पर स्थित हो गयी तथा उन लड़कियों को अभय देते हुए अपना वास्तविक परिचय दिया। साथ ही यह भी कहा कि - "हर साल चैत महीने में तुम फूलपाती खेलने आना। मैं भी तुम्हारे साथ खेलूंगी।"

इस पर लड़कियों ने जिद्द पकड़ ली। "देवी! आप कृपा करके हमारे साथ गाँव चलिये और परिवार वालों को भी दर्शन दीजिए।" देवी ने कहा- स्वर्ग में मेरे पति मेरी बाट जोह रहे होंगे, इसलिए इस समय मेरा यहाँ रुकना सम्भव नहीं है। यह भूभाग कभी मेरा पितृगृह रहा है। इसलिए यदि तुम्हारे परिवार वाले बेटी दामाद के रूप में चैत महीने में हमारा आह्वान करें तो हम प्रतिवर्ष उपस्थित होंगे। लड़कियों ने घर जाकर यह बात बताई और गणगौर पर्व आरम्भ हुआ।

एक और दंत कथा में गणगौर पर्व के आरम्भ की कथा कुछ यूँ मिलती है - "किसी गाँव में एक सिसौदिया वंश के राजपूत निवास करते थे। उनकी लड़की हांडा वंश में ब्याही गयी थी। रीति और परम्परा के अनुसार विवाहिता लड़की का पहला प्रसव मायके में होता है। पिता और भाई उस लड़की को विधि-विधानपूर्वक ससुराल से पीहर लाते हैं। समय पूर्ण होने पर लड़की एक पुत्र को जन्म देती है। पुत्र एक महीने का होने पर लड़की के ससुर उसे लेने आते हैं। लेकिन अभी बच्चा छोटा है, ऐसा कहकर उन्हें विदा कर दिया जाता है। जब वह कुछ बड़ा होता है, तब लड़की के पति उसे लेने आते हैं।"

लड़की की उम्र बहुत अधिक नहीं है उसका कैशौर्य अभी विदा हुआ है। इसलिए उसका मन अपनी सहेलियों के साथ खेलने के लिये मचल पड़ता है और वह अपने पिता से कहती है- पिताजी! आप मेरे स्वामी को वापस भेज दीजिए। अभी हम फूलपाती खेल लें, फिर हम ससुराल जायेंगे। पिता कहते हैं- बेटी। तुम्हारे ससुराल के सभी बड़े लोगों को तुम्हारे आग्रह पर वापस भेज दिया है। तुम तो जानती हो, तुम्हारे पति हांडा वंश के लाड़ले हैं, उनकी बात किस प्रकार टाल सकते हैं? तुम्हें इनके साथ तो जाना ही होगा। दामाद को वापस करना ठीक नहीं है। ये वापस नहीं जायेंगे।

पिता की इस बात को सुनकर वह लड़की अनमने मन से अपने पति के साथ रवाना हो जाती है। उसकी ससुराल का रास्ता एक नदी से होकर जाता है। चलते-चलते नदी पड़ी। नदी के किनारे वहीं एक आम का वृक्ष था। वे तीनों नाव में सवार थे। नदी पार करते समय नदी में अचानक बाढ़ आ गयी। नाव एक भंवर में फँसकर उलट गयी। तीनों प्राणी हाड़ा वंश के कुंवर, उनकी पत्नी और बच्चा नदी में डूबकर मर गये। मृत्यु के पश्चात् लड़की की आत्मा भटक जाती है। उसकी आत्मा उस आम्रवृक्ष पर जाकर बैठ गई। वह वहाँ निवास करने लगी। कुछ दिनों बाद गाँव की लड़कियाँ समूह में पाती खेलने उस वृक्ष के किनारे से निकलती हैं। वह आत्मा भी उस आम्रवृक्ष से उतरकर बाल स्वरूप में लड़कियों के साथ पाती खेलने लगती है। जब सभी लड़कियाँ पाती खेलकर वापस लौटती हैं तो वह नदी के तट तक आकर आम्रवृक्ष में विलीन हो जाती। कई दिन तक यही क्रम चलता रहा। एक दिन लड़कियों ने अपनी सहेलियों से पूछा कि यह लड़की कौन है ? किस मोहल्ले में रहती है। किसी भी लड़की को उसके बारे में नहीं मालूम था। एक दिन गाँव की सभी किशोर लड़कियों ने उस लड़की को घेर लिया और पूछा- "तुम कौन हो ? किसकी लड़की हो ? मजबूर होकर वह आत्मा स्वरूप लड़की बताती है- मैं तुम्हारे गाँव की सिसौदिया वंश की लड़की हूँ और पड़ोस के नदी पार के गाँव के हाड़ा वंश के कुंवर से ब्याही गयी थी। मेरी गोदी में एक पुत्र था। मैं अपने पति के साथ ससुराल जाने के लिए नाव से नदी पार कर रही थी। मेरा पुत्र छोटा था, मेरा मन ससुराल जाने का नहीं था, अपनी सहेलियों के साथ फूलपाती खेलने का मन था। लेकिन मेरे पिता और पति के आग्रह को टालना मुश्किल था, इसलिए मैं अधूरे मन से ससुराल विदा हुई थी। जब नदी पार कर रहे थे तब नदी में अचानक बाढ़ आ गयी और मेरी पुत्र और पति सहित अकाल मृत्यु हो गयी। मेरी आत्मा फूलपाती खेलने के लिए भटक रही थी। इसीलिए मैं तुम्हारे साथ फूलपाती खेलने आ जाती थी। मेरी आत्मा फूलपाती के रूप में माँ गौरी को समर्पित हो गयी। आज से मेरी आत्मा के रूप में सदैव फूलपाती का खेल तुम खेलती रहोगी। यह कहते ही वह लड़की आत्मा के रूप में आकाश में विलीन हो गयी। तब से आज तक सभी लड़कियाँ गणगौर पर्व में फूलपाती खेलती हैं।

एक और कथा गणगौर के संदर्भ में मिलती है। गणगौर का सूर्यवंश से भी सम्बन्ध था। सूर्य की उपासना करने वाले शकों का राज्य लगभग चार वर्षों तक सौराष्ट्र पर रहा था। इसी वंश के किसी सूर्य देव ईश्वर के साथ गणगौर का विवाह होने का उल्लेख लोकगीतों और इतिहास में मिलता है।

एक बार पुलोमा नामक दैत्य की कन्या ने अपना मनोवांछित वर पाने के लिए श्री शंकर भगवान की पूजा की, तब शंकर भगवान ने उससे कहा- चैत्र शुक्ला तृतीया को अपनी सहेलियों सहित मौलश्री के पुष्पों का हिंडोला बनाकर उसमें ईसर और गौरी को झुलाते हुए महोत्सव मनाओ। निःसंदेह तुम्हें मनोवांछि फल प्राप्त होगा। शिवजी की सलाह के अनुसार पुलोमाजा ने वैदिक रीति से गणगौर की पूजा शुरू की। प्रतिदिन सबेरे जलाशय पर जाकर और दूर्वादल संचय कर तथा फूल लाकर वह गणगौरी की पूजन करने लगी। इधर उसके पिता पुलोमा का कालासुर नामक दैत्य से झगड़ा हो गया। पुलोमा ने उसका नाश करने के लिये इन्द्र से मदद मांगी। गणगौर के पूजन के प्रभाव से इन्द्र द्वारा पुलोमा का शत्रु मारा गया। पुलोमा ने अपनी पुत्री का विवाह इन्द्र से कर दिया। कालान्तर में

पार्वती ने भी शिव को पाने के लिये गणगौरी पूजन किया और बाद में जानकी ने भी राम को इसी पूजन के प्रभाव से प्राप्त किया।

कालान्तर में रमा अथवा रनु से उसका सम्बन्ध जोड़ दिया हो इस तरह गणगौर और रनु देवी एक ही देवी के समयातीत दो नाम प्रचलित हो गये।

इस कथा से सहमत हुआ जा सकता है कि जानकी अपनी सहेलियों के साथ पुष्पवाटिका में गौरी पूजा करने जाती है और वहाँ नगरदर्शन को निकले राम के दर्शन हो जाते हैं; वहीं से सीता राम की हो जाती है। तभी से गौरी पूजा का प्रचलन हुआ। कालान्तर में प्रत्येक घर में गौरी की लकड़ी, मिट्टी, बाँस, वस्त्र आदि की प्रतिमा की पूजा की प्रथा पड़ी, जो आज तक चली आ रही है। गण का अर्थ समूह भी होता है। गौर, गौरी, पार्वती मातृदेवी के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार गण और गौर का अर्थ समूह की मातृ देवी से लिया जाना उपयुक्त लगता है। एक कथा के अनुसार राम ने लंका विजय के पूर्व और बाद में गौरी की पूजा की थी।

एक किंवदन्ती के अनुसार "श्रीकृष्ण के द्वारिका चले जाने के बाद सत्यभामा आदि ने मनौती के रूप में मिट्टी की प्रतिमा बनाकर गौरी की पूजा प्रारम्भ की। इससे कृष्ण का आगमन हुआ, फलतः इसी स्मृति में गौरी पूजा का आरम्भ हो गया।

एक अन्य निमाड़ी मिथकथा में गणगौर को लोकदेवी के रूप में प्रतिष्ठित किया, जिसका सम्बन्ध खेती, गृहस्थी और एक स्त्री से है -

किसी गाँव में एक सम्पन्न किसान था। उसकी एक सुन्दर कन्या थी। रूपवती होने के साथ वह बुद्धि में बहुत अधिक विलक्षण थी। उसके प्रत्येक कार्य सबसे अलग और सबके प्रिय होते थे, इसलिए वह सबकी लाड़ली बेटी बन गयी थी। वह जो कार्य करती समग्र निष्ठा और सूझबूझ से करती। खेत में बीज बोती तो फसल के वारे न्यारे हो जाते। जिस घर में चली जाती, उस घर में धन-धान्य और वैभव का अम्बार लग जाता। उसके चरण शुभ होते थे। मोहल्ले गाँव शहर और राज्य तक उसकी ख्याति फैल गयी। वह फूलपाती खेलती तो लड़कियाँ धन्य हो जातीं। किशोर अवस्था को प्राप्त होने पर पिता ने उसका विवाह पड़ोस के प्रतिष्ठित परिवार में कर दिया। इसी वर्ष भयंकर दुर्भिक्ष की छाया घिर गयी। सब दूर त्राहि-त्राहि मच गई। न पानी, न तिनका। खाने के लिये अनाज का एक दाना नहीं। भूख से पशु-पक्षी और मनुष्य मरने लगे। किसान की पुत्री के परिवार में भी हाहाकार मच गया। लड़की को अपने परिवार के साथ सारे गाँव और प्रदेश की चिन्ता थी कि अकाल से कैसे निपटा जाय ? लड़की ने एक अनुष्ठान का संकल्प लिया। कहीं से गेहूँ के कुछ दाने लेकर उसने बाँस की टोकनी में मिट्टी भरकर बो दिये। गेहूँ सींचने के लिए कोसों दूर से जितना पानी मिलता, लाती। प्रतिदिन पूजा करती। गेहूँ के अंकुर फूट गये। कुछ ही दिनों में टोकनी के जवारे लहलहा उठे। उस लड़की के देखादेखी आसपास की सभी महिलाएँ पूजा में हाथ बँटाने लगी। संकट तो सभी पर था। जैसे-जैसे

अंकुर बढ़ते आसमान में बादल आते और वर्षा करके चले जाते। इस तरह प्रतिदिन पूजा करते समय वर्षा होती और धरती में पानी ही पानी होने लगा। नदियाँ भरपूर हो गईं। कुँए-बावड़ियों में पानी की झीर निकल आयी। किसानों ने खेत जोतना और बोना शुरू कर दिया। धरती की हरियाली लौट आई। इधर लड़की की पूजा तपस्या समाप्त हुई। उसने जवारों को लकड़ी के पाट पर सजाया। बाँस, रस्सी का ढाँचा बनाकर उसे अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषण से सज्जित किया। उस पर देवी का सुन्दर मुखौटा लगाया। उमंग उल्लास से उसकी पूजा करके पूरे गाँव ने उस देवी को नाचते-गाते विदा दी। प्रतिवर्ष यह क्रम चलने लगा ।

सालभर के अन्दर उस लड़की की गोद हरी हुई। पुनः सम्पन्नता प्राप्त हुई, उसी तरह सभी लोगों ने सुख-समृद्धि पाई। सारी पृथ्वी पर फिर से अमन चैन हो गई। दूध, पूत सौभाग्य देने वाली देवी और कोई नहीं जवारों-सी लहलहाने वाली गणगौर या रनुदेवी ही हैं। कहते हैं उस लड़की में रमा, गौरी, सावित्री और रोहिणी का अंश था। इसलिए निमाड़ में गणगौर गीतों में चारों देवियों के साथ उनके स्वामियों का सबसे अधिक उल्लेख मिलता है।

गणगौर गीतों में रनुदेवी की सिलसिलेवार कोई कथा नहीं मिलती, फिर भी गीतों में उसके परिवार की सम्पन्नता और विपन्नता दोनों का वर्णन मिलता है। इसलिए उसके सुख-दुःख सबके बन जाते हैं । तब रनु मानवीय धरातल की कोई स्त्री बन जाती है। उसमें मानवीय कमजोरियों से ऊपर उठने की जबर्दस्त शक्ति होती है और यही शक्ति उसे देवी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

गणगौर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलते हैं, इसलिए यह कह पाना मुश्किल है कि गणगौर या रनुदेवी की कथा कितनी पुरानी है।

लोक जिह्वा पर गणगौर के सम्बन्ध में एक किस्सा यह भी प्रचलित है कि उदयपुर के किसी वीरमदास की गणगौर नामक एक सुन्दर कन्या थी। यह वीरमदास राजघराने से सम्बन्धित था। प्रत्येक राव रईस की निगाह परम सुन्दरी गणगौर पर थी। पर इसका लग्न बूँदी के ईसरसिंह के यहाँ भेजा। जब अन्य राव रईसों को यह बात मालूम हुई तो वे क्रुद्ध हो उठे और किसी प्रकार गणगौर को पाने के प्रयत्न में लग गये। इधर ईसरसिंह रातोंरात उदयपुर आकर गणगौर को भगा ले गया। इस बात का पता जब अन्यो को लगा तो वे ईसरसिंह के पीछे दौड़े। रास्ते में चम्बल का तेज प्रवाह पड़ा। ईसरसिंह ने आव देखा न ताव उसमें अपना घोड़ा छोड़ दिया। नदी का प्रवाह तीव्र होने से घोड़े सहित ईसर गणगौर डूब मरे। वे ही गणगौर-ईसर सती-सती गणगौर त्यौहार के रूप में पूजित हुए।

एक किंवदन्ती यह भी है कि गणगौर कोई क्षत्रिय कन्या थी; जो ईसरसिंह वीर युवक से ब्याही गयी विवाह के सोलहवें दिन ईसरसिंह बाघ का शिकार खेलने गया, जहाँ बाघ और ईसरसिंह दोनों मारे गये। यह सुन गणगौर ईसरसिंह के साथ सती हो गई, तबसे दोनों की याद में उनकी काष्ठ प्रतिमाएँ निकालकर यह त्यौहार मनाया जाता है।

आधुनिक समय में गणगौर

अब थोड़े बदलाव आ गए हैं, कई जगह इसका व्यावसायीकरण देखने को मिलता है। जैसे जो पंडाल सजता है उनमें ही लोग लाखों रुपये खर्च कर देते हैं। स्वरूप हर चीज़ का बदला है, पहले ऐसा नहीं था, लोग लालटेन और भापका जलाकर ही पंडाल सजा लिया करते थे। जब लाइट नहीं होती थी और माइक की आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी। अब भौतिक सम्पन्नता के कारण लाइट माइक और बड़े बड़े साउंड सिस्टम होते हैं, वरना पहले सिर्फ हारमोनियम, ढोलक और झांझ होते थे।

वैसे देखा जाए तो मूल रूप से कुछ नहीं बदला, मूल रूप वही है। जैसे दीपावली में पहले लोगो के घर सिर्फ दीपक जलते थे और आज देखो तो अलग अलग प्रकार की सीरीज़, लाइट्स आने लगी हैं। घर को सजाने और भी दूसरी चीज़ें होती हैं, पर लक्ष्मी पूजा में कोई परिवर्तन नहीं आया है। जो भौतिकता आयी है बस वही परिवर्तन है, लेकिन मूल तत्व नहीं बदला है।

पहले गणगौर में माताएं बहनें एक ही लहंगे में पूजा भी कर लेती थीं और झालरे भी दे देती थीं लेकिन अब हर कार्यक्रम के लिए अलग कपड़े होते हैं।

सुविधाएं बढ़ गयी हैं, पहले कुएं से पानी भरकर लाना पड़ता था अब घर तक पानी पहुँच गया है। सुविधाओं का भी अंतर आया है लेकिन मूल पूजा में कोई अंतर नहीं। आज से 100 साल पहले जो पूजा होती थी, वो आज भी होती है।

गणगौर पर्व की कृषि से संबद्धता

माँ गणगौर का अन्नपूर्णा स्वरूप

गणगौर मैया के जो पुरातन याने परंपरा से चले आ रहे गीत हैं वे ही मैया की मूल संस्कृति को प्रकट करते हैं। उन गीतों में मैया के विभिन्न स्वरूपों का साक्षात्कार होता है। उनकी अलौकिक शक्तियों का परिचय प्राप्त होता है। नीचे दिए जा रहे गीतों में मैया के 'अन्नपूर्णा' स्वरूप के दर्शन प्राप्त होते हैं।

अन्नपूर्णा मैया का गीत

भवर डोंगर म झूलो वन्ध्यो- म्हारी रणुबाई झूलन जाय जी
झूलता, झूलता तपसी आया- माय-हमरव भिक्षा देओ जी,
थाल भर मोती गऊरबाई लाई
लेओ न जोगी भिक्षा जी
काई करुं थारा मानक मोती
अन्न की भिक्षा देओजी
खेतनी पाक्यो खलो नी गायो
अन्न की भिक्षा नहीं देवाजी
आवण दरे चैत- वैशाख को महिनो
जावा हमरा पीयरजी
म्हारा पियर म गेहूं चना रे जोगी-
अन्न की भिक्षा देवाजी ।

इस गीत से जो भाव और दृश्य उपस्थित होता है वह यह है कि गणगौर मैया पर्वत कन्दराओं के बीच झूला बांध कर अपनी सहेलियों के साथ झूला झूल रही हैं। पृथ्वी पर अकाल पड़ा हुआ है। सभी देवी देवता शिवजी से प्रार्थना करते हैं कि अकाल से पृथ्वी की रक्षा की जाए। तब भगवान भोलेनाथ तपस्वी के भेस में अन्नपूर्णा माँ के पास पहुंचकर भिक्षा माँगते हैं- रणुबाई एक थाल भर कर मोती भिक्षा में देने के लिए लाती हैं - जिसे देखकर तपस्वी कहता है इन मोतियों का मैं क्या करूँ, मुझे तो अन्न की भिक्षा दीजिए। यह सुनकर माँ भगवती कहती हैं। इस वर्ष खेतों में अन्न पैदा नहीं हुआ ना ही खलिहान में कोई फ़सल गहाई -अन्न की भिक्षा कहां से दें? हे योगी चैत्र और वैशाख का महिना आने दो, मैं अपने पीहर जाऊंगी वहां गेहूं और चने की फ़सल अच्छी होती है। वहां से लाकर या वहां मैं आपको अन्न की भिक्षा दूंगी।

अन्नपूर्णा अपने मैके से अन्न-तृण और जल लाकर शिवजी को दान करती हैं और पृथ्वी पुनः हरियाली से भर जाती है। अकाल समाप्त हो जाता है, देवी-देवता, पृथ्वीवासी, नर-नारी सभी मैया के नाम का गगन भेदी जयकारा लगाते हुए वन्दना करते हैं।

माँ गणगौर का अन्नपूर्णा स्वरूप - कृषक समाज की आराध्या

गणगौर मैया का आनुष्ठानिक पर्व चैत्र और वैशाख इन दो माहों में ही क्यों मनाया जाता है? इसके पीछे कौनसे प्राकृतिक और सांस्कृतिक कारण हैं, उन पर लोक में गहन चिंतन किया गया है। माँ गणगौर का अन्नपूर्णा स्वरूप होने से वे कृषक समाज की आराध्या हैं। कृषि उपज इन्हीं माहों में खेतों से कट कर खलिहान में आती है। नए धान्य के शुभागमन की खुशी में कृषकगण- मैया गणगौर का अनुष्ठान पूजन कर- नये धान्य का भी खेत में, खले में सविधि पूजन कर घर लाते हैं और इसी गेहूँ के जवारे बो कर मैया को पाहुणी बुलाते हैं और माताजी से प्रार्थना करते हैं कि हे अन्नपूर्णा माँ! हम पर इसी प्रकार कृपा दृष्टि बनाए रखना। हमारे खेतों में अच्छी फ़सल पैदा होती रहे। किसी भी प्रकार से हम अभावग्रस्त न हों। परिवार में सुख, समृद्धि, शांति बनी रहे और हम लोग सपरिवार आपकी सेवा में लगे रहें।

जवारे पूजन का सम्बन्ध देवी शक्ति से रहा है। जवारे मातृ शक्ति का प्रतीक हैं। यही कारण है कि मातृ पूजा के व्रत अनुष्ठान पर्व में प्रथम दिवस जवारे बोये जाते हैं। जैसे नवरात्रि में प्रत्येक देवी पूजन में गंगापूजन, कुल देवी पूजन, भुजरिया पर्व में, श्रीमद भागवत पुराण आदि में जवारे बोने का विधान प्रचलित है और पूर्ण निष्ठा के साथ उनका सिंचन किया जाता है। इन्हीं जवारों से किए गए व्रत पूजन अनुष्ठान की सफलता के बारे में अनुमान लगाया जाता है। जौ और गेहूँ को पृथ्वी का सबसे पहला स्वादिष्ट और पौष्टिक अन्न माना गया है। इसके अंकुरों की पूजा प्रतिष्ठा के माध्यम से करना-भूदेवी (धरती माता) की उर्वरा शक्ति का सम्मान करना भी है। यही माँ भगवती आदिशक्ति से मनुष्य की कामना रहती है कि पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बनी रहे। विश्व में मानव ने सभ्यता के प्रथम चरण से ही गेहूँ और जौ की पूजा प्रारम्भ कर दी थी जो आज तक समयातीत परिवर्तन के साथ विद्यमान है।

गणगौर मातृ देवी गौरी का पूजन अर्चन का पर्व है। साथ ही गणगौर प्रकृति की हरीतिमा और खेतों की फसलों की प्रतिष्ठा का भी उत्सव है। इसी भक्ति भाव से गणगौर पर्व भक्तजन मनाते आ रहे हैं। राजस्थान, गुजरात, निमाड़ और समूचा मालवा का लोक जन गणगौर पर्व में मातृत्व की दुर्लभ शीतल छाया महसूस करता है। इसीलिए मातृत्व से सम्बन्धित सभी अनुष्ठान पर्व हर देश काल परिस्थिति में अपने आपको जीवित बनाए रखने में सक्षम हुए हैं। मातृत्व शक्ति का विलय निरन्तर सृजन में होता है और जिसका सृजन होता है-उसका विसर्जन भी होना ज़रूरी है इसी कारण हमारे यहां गणगौर मैया की मूर्तियों में (रथों में) देवी स्वरूप जवारे के दोने स्थापित किए जाते हैं। यह सृजन का प्रतीक है। मूठ (खडे) रखने के समय जो जवारे बोये जाते हैं। उनका नौवें दिन विसर्जन किया जाता है। यही क्रम दुर्गा मैया की बनाई गई मिट्टी की मूर्तियों में भी दोहराया जाता है। नित्य को नूतन बनाए रखने के लिए, पहले सृजन-फिर विसर्जन' भारतीय अध्यात्म जगत का सबसे महत्वपूर्ण नियम रहा है।

गणगौर प्रकृति की हरीतिमा और खेती की फ़सलों की प्रतिष्ठा का उत्सव है। जब मनुष्य ने क्रमिक रूप से खेती करना सीखा तो प्रकृति के माध्यम से उसे कई बीजों का परिचय प्राप्त हुआ। आरंभ में लोग स्वतः उगने वाली फसलों की रक्षा करते थे। अनाज जब पकने की स्थिति में आता था तो चिड़ियों को उड़ाते थे। जंगली जानवरों से फसलों को बचाते थे। कभी कभी सोच समझकर फसल का कुछ भाग छोड़ देते थे। ताकि आगामी वर्ष वह फसल स्वतः उग कर फसल दे सके। धीरे-धीरे मनुष्य ने अनुभव के आधार पर सूखा (अकाल) जैसी स्थिति पड़ने पर जमीन की जुताई प्रारम्भ की। अनेक पीढ़ियों के क्रमिक अनुभव के दौरान कृषि की उन्नति हुई। सैकड़ों छोटी-बड़ी खोजें हुईं तब कहीं जंगली कंद मूल खोदने वाले गेती फावड़े बने और उनका संग्रहकर्ता स्वयं किसान बना।

भुवाणा की गणगौर के आराधकों का मत

चैत्र और वैशाख माह में ही गणगौर पर्व मनाए जाने के पीछे कारण क्या है ?

इन्हीं दिनों में किसानों की फसल कटकर खलिहान में आती है। किसान और उनके परिवार अपने कर्तव्य से मुक्त हो चुके होते हैं। घर में खुशहाली - समृद्धि आ चुकी होती है। गणगौर पर्व कृषि पर आधारित उत्सव है। यह भी कहा जा सकता है कि किसान अपनी फसलों को बेचकर निवृत्त हो चुके होते हैं। वे अपनी खुशी को देवी जी के समक्ष जाहिर करना चाहते हैं प्रकट करना चाहते हैं। इसलिए वह देवी जी को आमंत्रित करते हैं कि आपकी वजह से यह धन धान्य भर आया है। यह लोक पर्व है जो पूरी निष्ठा और पवित्रता के साथ मनाया जाता है। गणगौर नवरात्रि पर्व से इस मायने में अलग है कि नवरात्रि में देवी के स्वरूप का पूजन होता है जबकि गणगौर में देवी के बेटे रूप का पूजन होता है। जिस तरह घर की बेटियां ससुराल से कुछ दिनों के लिए आती हैं, उन दिनों में बेटे के माता-पिता, भाई इत्यादि की यही कोशिश रहती है कि वह अत्यधिक सुख में रहे, आराम में रहे प्रसन्नता में रहे। ससुराल में लगातार - लगातार काम करने से बेटे में जो भी ऊब, थकान, या कष्ट आये हैं, उनसे मुक्ति मिले। आराम मिले।

भुवाणा की गणगौर बहुत ज्यादा आनंददायक होती है। निमाड़ के अन्य इलाकों में गणगौर 3 दिन की होती है। पूजा की विधि उसी तरह की होती है। जैसे हम एक जगह एकत्रित होकर पूजन करते हैं अन्य भागों में ऐसा नहीं होता। गणगौर की पूजा अर्चना में मंत्रों का उच्चारण नहीं होता। गीतों का गायन होता है। गणगौर पर्व की प्रत्येक अनुष्ठान - पूजा पद्धति का अपना अलग गीत होता है। पाती खेलने का अलग, जवारे उगाने का अलग, पाती खेल के वापस आते हैं उसका अलग गीत, मंडप में पाट बैठती है उसका, जब रनुबाई को पानी पर ले जाया जाता है तो उसका गीत होता है। रिचाओं की जगह गीत ही होते हैं।

जैसे उदाहरण के लिए।

**पाती खेल कर वापस आने का गीत,
खेलन गई थी रे गणगौर खेलन गई थी रे।
रनु बाई गवर माई की जोड़ बगीचा मा
खेलन गई थी रे।।**

गणगौर पर्व की पूजा - अनुष्ठान विधियाँ

गणगौर पर्वकाल के विविध कार्यक्रम

हमने गणगौर पर्व के दिनों में निमाड़ के विभिन्न जगहों पर जाकर इस त्यौहार को ध्यान से देखने और उसका प्रलेखन का प्रयास किया है। खरगोन में श्री प्रदीप जिलवाने जी के घर तथा उनके मुहल्ले के पर्व आयोजन को देखते हुए हमने पूजा विधियों को अनुभव किया।

गणगौर पर्व आने के पहले हर घरों में रंगाई पुताई हो जाती है। दीवारों पर गेरु या नील से या चूने से सातिए या स्वस्तिक बनाए जाते हैं। हाथी घोड़े बनाए जाते हैं, जिन पर धणियर राजा और रणुबाई विराजमान होते हैं। मोर और तोते बनाए जाते हैं। पेड़ों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। गणेश जी के चित्र अंकित किए जाते हैं। लड़कियाँ अपने हथेलियों के छापे माँड़ती हैं। इस तरह हर घर त्यौहार की आभा से जगमगा उठता है। लिपाई की खुशबू और रंगत से मन प्रसन्न हो उठता है। होली धुलेंडी के बाद चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की एकम से शुक्ल पक्ष की तीज तक सोलह दिनों की अवधि में यह व्रत त्यौहार सम्पन्न होता है। इस बार भी गणगौर पर्व पर निमाड़ के सभी अंचलों और जनपदों में यही रंग बिरंगी छटा देखने को मिल रही है। आस्थावान जनों ने शिवजी स्वरूप राजा धणियर जी तथा माँ गौरी स्वरूप रणुबाई की प्रतिमाएँ बनाई गयी हैं। किसी ने बांस व चारे से बनाया है, तो किसी ने मिट्टी से। अलग अलग आकारों में ये प्रतिमाएँ सजी हुई हैं। रणुबाई को लाल वस्त्र पहनाए गए हैं तथा राजा जी को रंगीन वस्त्र। चटक रंगों में उन दोनों की दैवीय उपस्थिति समूचे वातावरण को आनंदित कर रही है। अद्भुत आलोक से दीप्त कर रही हैं। गणगौर जी की शुभ आगमन की बेला का यह पवित्र प्रथम दिवस है। घर परिवार की सभी स्त्रियाँ प्रातः जल्दी उठकर उबटन से स्नान आदि करके लाल पीले सुंदर वस्त्रों में, आभूषण पहने, शृंगारबद्ध होकर गीत गाती हुई पूजन की तैयारी में लगी हुई हैं। जिस जगह पर गणगौर को विराजित करना है उसे लीप दिया गया है। उस जगह पर रंगोली माँड़ी गयी है। उसमें रंग भरे गए हैं। इसे चौक पूरना कहते हैं। फिर उस पर चावल या अक्षत बिछा दी गयी है। गेहूँ का प्रयोग भी चल सकता है। उस पर पटा या पाट या चौकी रख दी जाती है। उस पर लाल रंग का कपड़ा बिछा दिया जाता है। फिर भगवान शिवजी और माँ पार्वती जी के लिए आसन दिया जाता है अर्थात् चावल अक्षत बिछाए जाते हैं। सबसे पहले अक्षत आसन पर दीपक को विराजमान किया गया है। इससे भारतीय संस्कृति में प्रकाश का महत्व व उसका दर्शन समझने में मदद मिलती है। दीप को प्रज्वलित कर दिया गया है। उसके बाद शिव जी स्वरूप ईसर जी और गौरा जी को विराजित किया जाता है। उनकी मिट्टी की मूर्तियाँ हैं, कहीं उन्हें बांस व चारे से बनाया गया है। आजकल ये प्रतिमाएँ हाट बाजारों में बनी-बनायी मिलती हैं। शिवजी के बाँयी ओर पार्वती जी को स्थापित किया जाता है। आटे के बने गुनहा जो मीठे होते हैं, नमकीन भी सोलह-सोलह के तीन ढेर बनाए जाते हैं। एक ढेर अपने लिए, दूसरा गौरी जी के सामने तथा तीसरा अपने वरिष्ठ परिजन के लिए। कुँवारी कन्या दूसरी कुँवारी कन्या के साथ जोड़ा बनाती है तथा विवाहिता अन्य विवाहिता के साथ जोड़ा बनाकर पूजन करती हैं। कोई गर्भवती स्त्री अन्य गर्भवती के साथ जोड़ा बनाकर पूजन करती है।

जहां मैया के खड़े रखने के बाद प्रति दिन गौर माताओं और बहनों द्वारा प्रतिदिन माँ गणगौर की आरती पूजन, पाती खेलने का क्रम, रात्री में गांव की एवं बाहर गांव से आने वाली माताओं द्वारा सायं सात बजे से नौ बजे तक गीत झालरे चल रहे हैं। नौ बजे के पश्चात पुरुष वर्ग द्वारा मैया के झालरे एवं रंगारंग प्रस्तुति, स्वांग आदि क्रमशः आठ रात्री तक चलते रहते हैं। मैया के दरबार में आमंत्रित भजन मंडलियों एवं अन्य माँ के भक्तजन अपनी मंडलियों के साथ आकर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। आने वाले मेहमानों को गृह स्वामी नास्ता चाय पानी कराता है। दूर से आने वाली मंडलियों को भोजन भी कराता है। क्रमानुसार सभी आयी भजन मंडलियों को सुविधानुसार प्रस्तुति का समय दिया जाता है। आये हुए सभी माँ के भक्तों को मैया की प्रसादी के रूप में प्रतिदिन मावा (ज्वार की धानी) में चिरोंजी दाने-फली दाने, बेर आदि मिलाकर बांटा जाता है। पाहुणी बुलाने वाले सभी परिवार के सदस्य इन नौ दिनों में बड़ी ही सादगी से संयम और सदाचार से व्रत का पालन करते हुए मैया की सेवा में व्रती रहता है। पर्वकाल में परिवार के प्रमुख को विश्राम का बहुत ही कम समय मिल पाता है। गर्मी के दिन होने के बावजूद भी मैया की कृपा से उसे किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होती हर्ष और उल्लास के साथ यह क्रम चलता रहता है।

रणुबाई का पाट बैठना

गणगौर पर्व के आठवे दिन मैया पाट बैठती है। आज के दिन मैया के विवाह की तैयारी सुर्योदय के साथ ही प्रारंभ हो जाती है। परिवार की माताएं बहनें स्नान कर नखशिख श्रृंगार कर पास पड़ोस के परिवार में जाकर मैया के विवाह के मंडवे में आने का बुलावा देती हैं। परिवार प्रमुख भी इसी प्रकार खवास को साथ लेकर अपने इष्ट मित्रों को बुलावा देने के लिए जाते हैं। जो निश्चित समय पर आकर मंडवा बनाने का कार्य करते हैं। महिलाएं मैया के मंगल गान गाती हैं। मंडवा ब्राह्मण देवता के निर्देशन में बनता है। मंडवे में बारह बोलियां एक मरदली की लकड़ी गढ़ाकर उस पर गय और चार बांस रखे जाते हैं। दो जगह बनाटी बांधी जाती है। तत्पश्चात उसे जामुन की डालियों से छाया जाता है। ब्राह्मण देवता द्वारा कच्चे सूत एवं नाड़े से सुतारा जाता है। मंडवा बनाने का कार्य सम्पन्न होने के पश्चात उपस्थित जनसमुदाय को मेवा एवं गुड़ की प्रसादी बाटी जाती है।

इस कार्य के चलते मैया के रथों को बनाने वाले कलाकार एकांत जगह में बैठकर लकड़ी की बाजूटो पर मैया गणगौर एवं धणियर राजा के रथ (प्रतिमा) बनाते हैं। रथ बनाने का कार्य चैत्र सुदि शुक्ल पक्ष की गुड़ी पड़वा जिस दिन विक्रम संवत बदलता है। उसे बैठकी गुड़ी पड़मा (बैठकी) भी कहा जाता है। यह नए वर्ष का प्रारंभिक दिवस होता है। इसी दिन प्रातः काल किया जाता है।

रनुवाई एवं महाराजा के रथों की निर्माण पद्धति

आज के दिन ही चैत्र नवरात्री प्रारंभ होती है। और माँ भगवती नवदुर्गा की आराधना प्रारंभ होती है। इस माँगलिक बेला में गणगौर मैया-ईश्वर राजा के साथ पाट पर विराजमान होती है। अमावस्या की रात्री में या उसी दिन गुड़ी पंडवा को प्रातःकाल रथों को सिंगारा जाता हैं। रथों को बनाने में लगभग 5 से 6 घंटों का समय लग जाता है। रथों को बनाने में निम्नानुसार सामग्री की आवश्यकता होती है।

- लकड़ी से बनी दो बाजूट
- बांस की खपच्चीयां जो नए बांस को काट कर प्रमाणिक नाप में मैया के रथ में आठ मूठ की और धणियर राजा के रथ में नौ मूठ प्रमाण की खपच्ची लगाई जाती है। जो बाजूट के चारो कोनो पर छिद्र बनाकर लगाई जाती है। उसके ऊपरी हिस्से में मुखड़े लगाए जाते हैं। मुखड़ों के नीचे गर्दन का भाग छोड़कर कन्धे (सोल्डर) का स्थान बनाया जाता है। आमाडी की रस्सी के अभाव में अब सुतली का प्रयोग किया जाने लगा है।
- सुतली 1-1/2 किलो सुतली से गर्दन वाले स्थान से नीचे तक मजबूती के साथ कसा जाता है, ताकि रथ किसी प्रकार से नचाते समय खंडित न हो।
- रजाई की रूई (रोटी) इस रूई (रोटी) से आवश्यकतानुसार रथों में मैया और राजा के शरीर की आकृति बनाई जाती है। उसे भी सुतली से कसा जाता है। फिर उस पर स्वच्छ कपड़ा लपेट कर बांधा जाता है। कंधे वाले स्थान पर कपड़े से बने रूई से भरे हुए
- हाथ सुतली द्वारा बांधे जाते हैं। इसके बाद दोनों रथों को कपड़े पहनाए जाते हैं।
- रथों को पहनाने के कोरे वस्त्र
- श्रृंगार सामग्री
- रथों में रखने के लिए पंच मेवा
- ऋतुफल नारियल नग पांच। मैया और महाराजा को श्रृंगार आदि कर उनकी पूजन बनाने वाले एवं गृह स्वामी सपत्निक रथ निर्माण स्थल पर करते हैं फिर उन रथों को अपने शिरों पर रखकर गृहस्वामी की पत्नी माताजी को और धणियर राजा को स्वयं गृह स्वामी हरे मंडवे में लाकर आसन देते हैं। रथों के निर्माण काल में बनाने वालों के अलावा अन्य का प्रवेश वर्जित रहता है। उनकी अनुमति से ही अन्य का प्रवेश संभव होता है। रथ निर्माता स्नान कर बड़ी ही शुद्धता के साथ रथों का निर्माण कार्य करते हैं। यह आम आदमी के वश का काम नहीं है। इस निर्माण कार्य के लिए कुशल कारिगर की आवश्यकता होती है। जो आसानी से प्रत्येक जगह मिल जाते हैं।

रथों का मंडवे में आगमन

जब मैया के रथों को मंडवे में रखा जाता है, उस समय 'सेवामाय मैया की वाड़ी में से मैया गणगौर के प्रतीक स्वरूप जवारों के दो दोने लेकर आती है। और रथों की बाजूट पर रखती। इसके पश्चात गवरणी बाइयां रथों की पूजन करती है आरती गाती है और मैया के रथों के पास घेरा बनाकर मैया के गाने गाते हुए झालरा देती है।

बाजूट में जवारे रखते समय सेवामाय गणपति के नाम जवारे जो पटली पर बोये जाते हैं। उन्हें भी लाकर मंडवे में गणगौर मैया और धणियरजी के रथों के आगे स्थापित करती। मैया के मंडवे में आने के बाद से ही उनका पूजन शुरू हो जाता। ग्राम के और बाहर से आने वाले सभी भाई बहन मंडवे में पूजन करते हैं। महिला वर्ग मैया की गोद भरती हैं। साड़ी चुनरी, श्रृंगार का सामान मैया को चढ़ाती। कई माताएं माँ की गोद भरते हुए यह कामना करती कि हे गणगौर मैया मैं निसंतान हूँ कृपा कर मेरी गोद भी भर दो, मैं अपनी सामर्थ अनुसार आपको पाहुणी बुलाऊंगी।

इसी क्रम में माँ भगवती गणगौर मैया से भक्तजन अपनी अपनी आपदा, कष्ट और कामना मैया के दरबार में ईश्वर राजा की साक्षी में निवेदन करते। शुद्ध अन्तःकरण से दृढ़ विश्वास के साथ जो भी कुछ मैया से माँगते हैं वो समस्त - फल माँ की कृपा से सुलभ हो जाता है। इन सब के चलते मैया के मंडवे की पंगति होती है। मंडवे की पंगति के लिए गृहस्वामी सुबह ही नाई ठाकुर के माध्यम से अपने आस-पड़ोस में इष्ट मित्रों को बुलावा भिजवा देता है। बारह से एक बजे के बीच मंडवे की पंगति हो जाती है। भोजन उपरांत शाम के मैया का लग्न धणियर राजा के साथ मंडवे में लगाया जाता है।

गणगौर मैया के पर्व में दिया लग्न का विधान है, क्योंकि मैया के रथों को लग्न आदि वैवाहिक कार्य से निवृत्ति के उपरांत ग्राम के विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए शाम से पूर्व जलाशय पर पहुंचना आवश्यक होता है। अतः समय का विशेष ध्यान रखते हुए यह सब काम करना पड़ता है। दिवा लग्न किसी विद्वान के द्वारा निकलवाकर दिन के बारह बजे से तीन बजे के मध्य शुभ मुहूर्त में लग्न लगाए जाते हैं। लग्न के बाद परिवार जन, मैया की सेवा में आस्था अनुसार विभिन्न प्रकार से दान करते— गेहूं को हीरा कहा जाता है। अतः अन्न को हीरा मानकर थाल भर-भर कर गेहूं का दान भी करते हैं। बहन बेटियों को मंडवे में साड़ी, चुनरी आदि भेंट की जाती है। जिस प्रकार से माता-पिता के द्वारा अपनी पुत्री के विवाह में जो वैवाहिक कर्म करते हैं, उससे कहीं अधिक बढ़-चढ़कर गणगौर मैया को उस समय अपनी पुत्री की भांती मानकर कन्यादान करने वाले माता-पिता-मैना और हिमाचल की भांति कन्यादान कर पूरी वैवाहिक प्रक्रिया को सम्पन्न करते हैं। इस भक्तिभाव पूर्ण कार्य में यह बात देखने को मिलती है। मैया को विदाई करते समय माता-पिता बिलख-बिलखकर रो पड़ते हैं। उस समय का माहौल ऐसा बन जाता है कि विदाई के समय उपस्थित जनसमुदाय भी मैया की विदाई पर अपनी आँखें नम किए बिना नहीं रह सकता।

फिर लग्न लग जाने के बाद मैया की गोदी में मैया का बाला (बच्चे का पुतला) रथ निर्माताओं द्वारा व्यवस्थित रखा जाता है। उस समय मंडवे में झूला बांधा जाता है। मैया की पूजन के बाद पहले मैया के रथ को दो व्यक्ति उठाते हैं और उसे झूले पर झुलाकर मंडवे के आगे खड़ी गृह स्वामीनी मैया के रथ को अपने सर पर धारण करती है। उसके बाद धणियर राजा के रथ को झूलाकर गृहस्वामी के सिर पर रखते हैं। फिर क्रमशः बाड़ी के जवारों की टोकनियाँ, जवारे का पटा, कुरकई, जवारे, बोये हुए दोनों कों गौर माताएं अपने-अपने शिरो पर रखकर मैया के गीत गाते हुए मैया के जलवाय पूजन के स्थान की ओर चलते हैं।

मैया का कुआ जलवाय पूजन

मैया कुआ जलवाय पूजन करने के लिए जाती है। जब मैया और राजा के दोनों रथों को सिर पर मंडर्व से सपत्निक ग्रह स्वामी एक बड़े जन समूह के साथ निकालता है। मैया की शोभायात्रा गाते बजाते झालरे देते हुए ग्राम और शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरती है। उनके दर्शन के लिए जगह-जगह दर्शनार्थी खड़े होकर माँ भगवती की अनुपम आलौकिक छवि का दर्शन लाभ लेते हुए, अघाते। गणगौर मैया का अनूठा नख शिख श्रृंगार देखते ही बनता है। धणियर राजा का श्रृंगार किसी राजकुमार से कम नहीं होता। सुशोभित वेश भूशा में सजे महाराजा का रथ धारक व्यक्ति आनंद के साथ नचाते हुए चल रहा है।

गणगौर दाम्पत्य जीवन का अनूठा और अनोखा पर्व है। उत्सव है। गणगौर पर्वकाल में वो प्रत्येक दम्पति जो मैया के रथों को सिर पर धारण कर मैया की शोभायात्रा में नचाते हुए, उनके गीत गाते हुए चलते हैं। वो अपने आपको शिव और गौरी महसूस करते हैं। गणगौर मैया और धणियर राजा के रथों को सिर पर धारण कर नचाने की होड़ सी लग जाती। भाव विह्वल होकर प्रत्येक दम्पति नहीं अघाता। गीतों के साथ ढोलक की थाप पर नचाते नचाते शिव तत्व तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। गीतों के साथ नृत्य के माध्यम से आत्म तत्व की तलाश का इससे बढ़कर और कोई पर्व नहीं हो सकता। दाम्पत्य जीवन का इससे बड़ा सुख और क्या होगा। इसी कारण ग्रामीण अंचलों में जनमानस की स्मृतियों में गणगौर पर्व के प्रति अपार श्रद्धा सम्मान और अनुष्ठानिक भाव विद्यमान है, जहां गणगौर परम्परा अपने मूल (ठेठ) रूप में दिखाई देती है।

गणगौर मैया का रथ छत्तीस श्रृंगार से युक्त जिस मार्ग से गुजरता दर्शनार्थी अपने आपको बड़भागी मानते हैं। माँ भगवती की मनोरम झांकी ऐसी लगती, मानो उनके अधर संपुट अभी खुलेंगे और मैया के मुखारविन्द से मीठे-मीठे शब्द निकल पड़ेंगे। देवी माँ के इस स्वरूप को देख कर हर कोई भाव विह्वल हुए बिना नहीं रह सकता। मैया की झांकी धीरे-धीरे गीत झालरों के मध्य चलते हुए जलवाय पूजन स्थल पर पहुंचती है सेवामाय और ब्राह्मण देवता के माध्यम से कुआ जलवाय पूजन कार्य सम्पन्न कराया जाता है। उपस्थित जन समुदाय को मेवा का प्रसाद बांटा जाता है। फिर उसी प्रकार रथों को सिर पर रखकर गाते नाचते हुए भक्तजन मैया के रथों को मंडवे में अपने अपने आसन पर आसीन कराते हैं। बाईयां मंडवे में मैया के रथ के आसपास घेरा बनाकर झालरा देती हैं, गाने गाती हैं। मैया और राजा की संध्या आरती की जाती है। भोजन प्रसादी ग्रहण करते-करते आठ नौ बज जाते हैं। आज पर्व काल की महानिशा होने के कारण पूरी रात कार्यक्रम चलता रहता है। अगर कार्यक्रम जल्दी बंद हो जाता है तब घर परिवार के सदस्य आये हुए रिश्तेदार ईष्ट मित्र मैया के मंडवे में बैठकर मैया के गाने गाते हैं या मैया की पौराणिक कथा कहते हुए पूरी रात्री जागरण करते हैं। आठवे दिन की रात्री महानिशा होती है। इसलिए जागरण आवश्यक है।

गणगौर की विदाई

नौवा दिन मैया की विदाई का दिवस होने के कारण आठवे दिन की रात्री में ही रसोई बना ली जाती है ताकि नौवे दिन बारह और एक बजे के बीच पंगती भोजन प्रसाद के काम से निवृत्त हो सके। यह व्यवस्था महानिशा में ही कर ली जाती है। नौवें दिन प्रातःकाल नाई ठाकुर गृहस्वामी के बताए अनुसार अपने प्रेमीजनों को अनुष्ठान के सहयोगियों को उनके घर जाकर आमंत्रण देता है। निश्चित समय पर पंगती की जाती है। इधर सेवामाय मैया की विदाई की समस्त तैयारी कर लेती हैं।

नौवे दिन गणगौर मैया ससुराल जाने के लिए विदा होती हैं। जवारों को गौमाता के दूध और नर्मदा मैया के जल से सिंचन करते हुए स्नान कराया जाता है। आरती पूजन कर नाडा बांधा जाता है। जिसे मैया का सिर गूथना कहा जाता है। इस दिन माता के गले में कच्ची कैरियों और आम के नवांकुरों के कोमल पत्तों का हार भी पहनाया जाता है। इसके बाद ही कच्ची कैरिया खायी जाती हैं। मान्यता है कि जब तक गणगौर मैया को कच्ची कैरी का हार न पहना दें तब तक कोई भी कच्ची कैरी चखता भी नहीं। इस मर्यादा का पालन गणगौर मैया के भक्तजन आज तक करते हैं। माता की बाजूट में पंच मेवा एवं धणियर राजा की बाजूट में पंच मेवा के साथ पान का बीड़ा भी रखा जाता है। तीन बजे के लगभग मैया की पूजन आरती कर दी जाती है। इससे पूर्व सभी भक्तजन मैया का पूजन करते हैं। माताएं पूजन कर मैया का खोला भरती है। श्रृंगार चुनरी आदि मैया को चढ़ाती हैं, भेंट करती हैं। कुंवारी कन्याएं अपने इच्छित वर की कामना करते हुए पूजन करती मैया के सभी भक्तजन मनोकामना पूर्ति हेतु मैया से अरदास करते हैं।

मैया की मंडवे में अंतिम आरती के समय मैया के चरण कलश में नर्मदा जल भर कर धुलाये जाते हैं। यह कार्य घर की सुहागन महिला करती है। गृहस्वामी भी सपत्निक मैया और धणियर राजा के रथों की बाजूट के चारों पैर धुलाते हैं। पश्चात रथ उठाने बालों के भी पैर अन्य व्यक्ति कुए के पानी से धुलाते हैं। रथों को सिर पर रखने वाले पैरों में जूते चप्पल नहीं पहन सकते। नंगे पैर वाले पर ही रथ रखे जाते हैं। गांव मोहल्ले के सभी लोग समय पर इकट्ठे होकर मैया और धणियर राजा के स्थों को जवारो को लेकर सेवामाय गौरनियां सभी रथ के साथ गाते हुए ढोलक की थाप पर झालरे देते हुए रथों को और जवारों को नचाते हुए विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए चलते हैं। जगह-जगह भक्तजन रथों को रोक आरती पूजन करते हैं। मैया को भेंट चढ़ाते, मेवा का प्रसाद नारियल देते हैं।

गणगौर मैया का विदाई का यह अनूठा समय हृदय को द्रवित करने वाला होता है। जितनी खुशी मैया को पाहुणी बुलाने से होती है। उससे अधिक दूणा दुख विदाई करते हुए होता है। परिवार में जिस प्रकार अपनी बेटी को विवाह उपरान्त विदा करते समय बरबस ही फफक कर रोना आ जाता है। हृदय द्रवित हो जाता है। आंखों से अश्रुधारा बहनें लगती है। इससे अधिक भाव मन मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। शरीर पुलकित हो उठता है। गणगौर मैया की छवि छटा का, उनके नौ दिवसीय सानिध्य का, मन पर ऐसा अमिट प्रभाव छा जाता है कि मन के माध्यम से मस्तिष्क की अनन्त गहराई

में जाकर समाहित हो जाता है और आत्मा शिखर गड़ पर चढ़ने लगती हैं। गणगौर मैया की इस अलबेली अनूठी सुखानुभूति का अनुभव कर भक्तजन अपने इस क्षण भंगूर जीवन को कृतार्थ करते हुए माँ के कृपापात्री हो धन्य होते हैं। वर्तमान में जन समुदाय भौतिकवाद की चकाचौंध में अपने आप में सिमित होता चला जा रहा- संस्कृति से दूर से दूर होता जा रहा है और अहंकार की जड़ता में फंस कर, काल का कबल बनता जा रहा है। वहीं दूसरी ओर हमारे पितृ पुरुषों ने सनातन संस्कृति के माध्यम से हमारे जीवन को सुखमय बनाने के लिए इस प्रकार के अनेकों धर्म कर्म संपादित किए हैं। ताकि जन मानस उस और बड़-चढ़कर सेवा धर्म का अनुगामी हो सके।

मैया गणगौर की शोभायात्रा

गणगौर मैया की शोभा यात्रा जैसे जैसे जलाशय के निकट पहुंचती है- भक्तजनों का सैलाब जो विदाई यात्रा में चल रहा है उनमें एक होड़ सी लग जाती है कि मैं भी मैया के रथ को अपने सिर पर रखकर कम से कम पांच कदम चलूं और झालरे दूं। इस प्रकार एक सर से दूसरे, तीसरे के सिर पर क्रम से रखते हुए जलाशय के निकट पहुंचते हैं। भक्तजन बड़ी ही आस्था के साथ वहां घेरा बनाकर मैया के गाने गाते हुए ढोलक की थाप और मंजीरों की झंकार के साथ नाचते हुए मैया की जय बोलते हैं। यह दृश्य बड़ा ही मन भावन होता है। जलाशय किनारे बड़ी-बड़ी बिछात बिछाई जाती है। उसमें एक स्थान पर मैया और धणियर राजा के साथ के साथ जवारे रखने के लिए कोरे स्वच्छ कपड़े का आसन लगाया जाता है। रथों को आसन देने के बाद भी पूजन का क्रम चलता रहता है। जो भक्त पूजन नहीं कर पाये वो लोग यहां जलाशय पर मैया का पूजन करते हैं।

अब यहां पर धणियर राजा और गणगौर मैया की बड़ी ज़ोर-ज़ोर से जय बोली जाती है। फिर सेवामाय द्वारा आरती गायी जाती है परिवारजन मैया की धणियर राजा की ओर जवारों की अंतिम विदाई आरती उतारते हैं फिर परिवार की सदस्य, माताएं, भाई, बहन, गंवरनी, बाईयां जवारों की टोकनियां, पटा दोने आदि जिनमें जवारे हैं उन सब को बड़े ही श्रद्धा भाव से अपने सिर पर रखकर जलाशय के किनारे खड़े होकर पूनः मैया का जयकारा करते हुए जलाशय में उतर कर कमर तक जल में पहुंच कर मैया की जय बोलते हुए डुबकी लगाकर जवारों को जल में डुबो देते हैं। जवारे डुबोने वाले सभी लोग रथों के पास आते हैं। यहां इनके ससुराल पक्ष के लोग इनको नए वस्त्र कुमकुम का तिलक कर कपड़े पहनाते हैं। जिसे पिरावनी कहते हैं। अब परिवार का मुखिया अपने रिश्तेदारों को भी कपड़े करता है। साथ में अपने ईष्ट मित्रों को तिलक कर भेंट स्वरूप उनके सम्मान में अपनी श्रद्धानुसार रूपए भेंट करता है। मेवा प्रसादी लेकर भक्त जन बड़े ही चाव के साथ ग्रहण करते हैं। मेवा प्रसादी को बड़ी ही रूची के साथ खाते हैं और अपने साथ लेकर आते हैं जिसे परिवार के सदस्यों में बांटते हैं।

मैया की विदाई के बाद विदाई स्थल से जितने भी दर्शनार्थी होते हैं उन्हें रथ उठाने से पूर्व उस स्थल से रवाना कर दिए जाता है। उसके बाद रथों को उठाया जाता है। वापसी के समय कम से कम चार आदमी हश्ट पुश्ट जवान मैया के रथों के साथ अवश्य रखे जाते हैं। ताकि वो लोग तेज गति से चलते हुए निर्माण स्थल पर आ सके। मैया और धणियर राजा को स्वर्णाभूषण भी पहनाए जाते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से भी अनिवार्य है। रथों को उसी स्थान पर उतारा जाता है जहां उनका निर्माण किया गया है और उन्हीं निर्माता कलाकारों के माध्यम से उन्हें खोला जाता है। बड़ी ही जवाबदारी के साथ निर्माता रथों को खोल कर स्वर्णाभूषण निर्माण लिस्ट अनुसार ग्रहस्वामी को देते हैं। गृहस्वामी द्वारा रथ निर्माण करने वालों को नारियल के साथ अपनी सामर्थानुसार भेंट करता है। मैया को जो चुनरी पहनाई जाती है उसको मैया का स्कंध कहा जाता है, उसको रथ निर्माता अपने साथ लाते हैं। इनके

साथ जो सावा देने वाला पडिहार होता है उसे भी कपड़े किए जाते हैं। इस विधि से माँ भगवती का नौ दिवसीय पर्व का समापन होता है।

मैया के प्रतिक स्वरूप जवारों का विसर्जन

जब गणगौर मैया के जवारे विसर्जन के लिए उठाये जाते हैं और जलाशय में जवारे विसर्जित कर दिए जाते हैं। तब मैया के झालरे और गाने वाले भक्तजन गाना बजाना बंद कर देते हैं। पूर्व में इस मान्यता का बड़ी ही कड़ाई के साथ मैया के सम्मान में पालन किया जाता था। मैया के कार्यक्रम समापन उपरान्त कोई भी व्यक्ति भूल से भी मैया के गाने गाता तो क्या गुनगुनाता भी नहीं था। चैत्र के बाद वैशाख में ही मैया के पर्वकाल में गाने गाने का नियम है। इसके पीछे बुजुर्गों द्वारा बताया जाता है कि गणगौर मैया के गाने मन चाहे समय पर कहीं नहीं गाना चाहिए। इससे मैया गणगौर के नव दिवसीय पर्वकाल में उत्साह - ताजगी और नूतनता रहती है। उसकी मर्यादा समाप्त होती है। मैया के नाम प्रतियोगिता करना तो सर्वथा अनुचित ही है। क्योंकि भक्तिभाव, पुजा आराधना और उपासना की कभी भी प्रतियोगिता नहीं होती। इस प्रकार के कार्य हमारी मानसिक विकलांगता का परिचायक है। कृपया हमारे ऐतिहासिक "गणगौर" महापर्व की मर्यादा को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहायक सिद्ध होने का प्रयास ही हम सबके लिए मैया गणगौर की सबसे बड़ी भक्ती होगी।

माँ भगवती गणगौर मैया के विदाई के समय नौवे दिन इसी संस्कृति से जुड़ा हुआ, एक संस्कार और भी होता है जिसे "रथ बौढ़ाना" कहते हैं। उसे निम्नानुसार करने का विधान प्रचलन में है।

रथ बौढ़ाना

रथ बौढ़ाने का अर्थ, मान मनौती के साथ रनुवाई और धणियर राजा के रथों को विदाई के समय एक रात्री के लिए रोकने का आग्रह करने से है। जिसके घर कोई मनौती पूरी हुई हो या नवविवाहिता दुल्हन आयी हो। उस घर में रथ बौढ़ाये जाते हैं। मैया के भक्तजन समय-समय पर विपत्ती काल में गणगौर मैया का सुमिरण कर आयी हुई विपत्ती की निवृत्ती के लिए माँ भगवती से अरदास करते हैं और उनकी मनोकामना पूर्ण होती है। वो लोग मैया को पाहुणी बुलाते हैं या एक रात्री के लिए उन्हें अपने घर ससम्मान रोकते हैं। उसके अनुरूप मैया की सेवा की जाती है। जिस मार्ग से मैया के रथ निकल रहे हैं, उस मार्ग में रथ बौढ़ाने वाले दम्पति द्वारा एक दरी बिछा कर उस पर नवीन वस्त्र का आसन दिया जाता है। युगल दम्पति में महिला हाथों में आरती सजा कर एवं पुरुष अपने हाथों में एक जल का लोटा लेकर अपने परिवार के साथ खड़े रहते हैं। जब मैया और महाराजा के रथ उनके निकट आते हैं वो गणगौर मैया और धणियर राजा की जय बोलते हुए राह रोक कर रथों को आसन देने का आग्रह करते हैं। रथों के धारकों के पैर धुलाए जाते। मैया को आसन देने के बाद उनकी दीप, कपूर जला कर युगल दम्पति सपरिवार आरती करता है। और मैया धणियर राजा से साष्टांग प्रणाम कर एक रात्री अपने घर रुकने की प्रार्थना करते हैं। माँ भगवती गणगौर मैया के चरण पकड़कर कहते हैं हे मेरी गणगौर मैया आज की रात आप मुझ सेवक के घर चल कर पहुनाई स्वीकार कीजिए, मैं अपने परिवार के साथ आपको और महाराजा को रुकने की प्रार्थना करता हूँ। कृपा कीजिए। यहां गणगौर मैया की ओर से यह भाव प्रकट होता है। मैं तो आप लोगों की पुत्री हूँ, बहन हूँ। अपने कुंवर सा. से बहनोईजी से निवेदन करो, उन्हें रोको, अगर वो मान जाते हैं तो मैं तो आपकी ही हूँ। इस भाव की बरबस ही अनुभूति होती है। युगल दम्पति धणियर राजा (कुंवर सा.) बहनोईजी के रथ के चरण पकड़कर साष्टांग प्रणाम करते हुए बड़े ही भाव के साथ विनय करते हैं। महाराजा की स्वीकृति की अनुभूति प्राप्त कर युगल दम्पति रथों को अपने सरों पर रखते हैं और परिवारजन जवारों को लेकर अपने घर आकर यथा विधि आसन देकर आरती पूजन करते हैं। शाम को मैया के शुभागमन पर ग्राम समाज में भोज दिया जाता है। जोड़े जिमाये जाते हैं।

रथों को बौढ़ाने वाले के घर मैया का भावभीना स्वागत होता है। परिवार की मातायें बहनें मैया की बारम्बार आरती उतारती हैं और माता के मस्तक पर "मरकट" लगाती हैं। मरकट से तात्पर्य है कुमकुम का घोल बनाकर गणगौर मैया के मस्तक पर लगाना और उस पर चावल के दाने चिपकाना। बचे हुए मरकट को गौर पूजन करने वाली माताएं बहनें भी लगाते हुए अपने को सौभाग्यशाली महसूस करती हैं। इस मरकट का बड़ा ही महत्व होता है। जो भी इस मरकट को अपने मस्तक पर लगाती हैं। उन्हें मैया की ओर से अखंड सौभाग्यवती का आशीष प्राप्त होता है। वह इस जगत में जब तक जीवन गुज़ारती हैं सुहागन ही रह कर विदा होती हैं। इस अटल सुहाग 'मरकट' की सभी सुहागनें कामना रखते हुए धारण करती हैं।

महानिशा जागरण के बाद यह नौमी रात्री अखंड जागरण की रहती है। यह मौका बड़े ही भाग्य से कई जन्मों के पुण्यों के उदय से ही प्राप्त होता। गणगौर मैया का यह माँगलिक महोत्सव अष्ट निशा से नवरात्री में परिणित होता है। मैया का स्वरूप नवदुर्गा का बन जाता है। इस रात्री मैया अपनी समस्त शक्ति के साथ विराट रूप में रहती हैं। जो भक्तों के लिए कल्याणकारी अवसर होता है। माता की सेवा में पूरी रात का जागरण किया जाता है। भजन मंडलियों के माध्यम से मैया के गीत, झालरे और स्वांग का कार्यक्रम चलता रहता है। स्वांग के माध्यम से कलाकार सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए प्रहसन करते हैं। रूढ़ीवादिता पर कटाक्ष करते हैं। सामाजिक और सार्वजनिक कुरितियों के उन्मूलन से लगाकर भ्रूण हत्या, पर्यावरण प्रदूषण आदि पर स्वाँग बताते हैं। स्वांग गम्मत की इसी विशेषता के कारण दर्शकगण प्रमुखता से पसंद करते हैं। इस विधा में मनोरंजन के साथ भरपूर हंसी-मज़ाक होती है। किसी विशेष संदेश को समाज में प्रसारित करना है तो उसे स्वांग के माध्यम से सहज ही प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे सुगम माध्यम कोई हो ही नहीं सकता। इस कार्यक्रम में सभी वर्ग के स्त्री-पुरुष, बाल, युवा, वृद्ध हजारों की संख्या में उपस्थित रहते हैं। प्रातः काल स्नान आदि से निवृत्त होकर मैया की आरती पूजन की जाती है। वडवा और वडवी को पीली शाल उड़ाई जाती है। बारह बजे सबका भोजन होता है चार बजे के लगभग मैया के रथों को लेकर गाते-नाचते जलाशय पहुंचते हैं। वहां मैया की आरती पूजन कर प्रसादी बांटी जाती है। जिन्हें रथ बौडाना होता है वे चतुर्थी के दिन जवारों का विसर्जन नहीं करते। इस कारण जवारों सहित रथों को बौड़ाने वाले के घर वापस आकर रखे जाते हैं। और पंचमी के दिन जवारों का विसर्जन कर गणगौर पर्व का समापन किया जाता है।

भुवाणा के गणगौर की पूजा अनुष्ठान पद्धति

निमाड़ के भुवाणा की गणगौर पूर्णतः वाचिक परंपरा पर आधारित हैं। भुवाना की गणगौर के गीत कहीं भी लिखित रूप में उपलब्ध नहीं है। वे गीत लोक के हर किसी आस्थावान के कंठ में समाए हुए हैं। हमारी दादियों - ननियों से ये गीत हमने सुने हैं। उन्होंने भी अपनी दादी - नानियों से ये गीत सुने होंगे। इस तरह यह परंपरा जीवंत बनी हुई है।

गणगौर पर्व 9 दिन का होता है। चैत्र वैशाख दोनों में से किसी भी माह इसका शुभ मुहूर्त आ सकता है। जहाँ होलिका दहन होता है वहाँ राख होती है, उस जगह सबसे पहले खड़े लेने जाते हैं। जिनको देवी मैया का भाव आता है उनसे गणगौर का मुहूर्त निकालने के लिए निवेदन करते हैं। वे या तो चैत्र या वैशाख की तिथि का मुहूर्त निकालते हैं। इस पूजा का आयोजन एक कमरे में होता है। अधिकांश घरों में मान मनौती की गणगौर मनाई जाती है। जो भी सांसारिक मान या कामना की जाती है जैसे शादी होना, बच्चे होना, नौकरी लगना इत्यादि। जब कोई यह मान्यता करता है कि मेरे बच्चे हो जाएं और जब वे बड़े हो जाएंगे, उनकी भी शादी हो जायेगी और उनके बच्चे होंगे तब मैं गणगौर की गणगौर की स्थापना करूंगी", इसे हरे मांडे की गणगौर कहा जाता है। जब विवाह होता है तब शादी के मंडप में मरदली लगती है। मंडप के चार स्तंभों के बीच तोरण बांधते हैं। उस जगह को मरदली कहते हैं उस मरदली को घर में सहेज कर रखा जाता है। जब गणगौर की स्थापना होती है तब उस मरदली का प्रयोग किया जाता है। खड़े लेने जब महिलाएं जाती हैं तो पूरे सोलह सिंगार से सजी-धजी जाती हैं। महिलाएं अपने ससुराल अथवा पीहर पक्ष की बहू बेटियों (परिजन महिलाओं) को एकत्रित कर विषम संख्या में उनका एक समूह बनाती हैं। जैसे 5,7,9 इत्यादि। यह सभी सुहागिनें होती हैं। इनमें एक गर्भवती स्त्री भी होती है। गणगौर पर्व शुरू होने के पहले 1 दिन पहले सभी महिलाएं नर्मदा जी में नहाने जाती है। वे एक वस्त्र में यानी सरी साडी में नहाती हैं। वहाँ उनको सावा दिया जाता है अर्थात् गेहूं के दाने 8 - 10 दाने दिये जाते हैं। जिनको देवी जी का भाव आता है वे नहा कर आई हुई स्त्रियों को कुछ गेहूं के दाने देते हैं। इस सवा को याने गेहूं के दानों को लाल कपड़ों में बांध लिया जाता है। कोई अपने कंगन में पहन लेती है, कोई मंगलसूत्र में लपेट लेती है। सावा इसलिए बांधा जाता है कि आपको कोई बुरी नजर न लगे। जिन महिलाओं को गौर पूजने के लिए आमंत्रित किया जाता है, वे सभी पर्व के पूरे 9 दिन उसी घर में रहती हैं। वे सब 2 दिन पहले आ जाती है।

इस पर्व को कड़ी निष्ठा, शुद्धता, शुचिता के साथ मनाया जाता है। इस पर्व की पूजा विधि में तथा अन्य कुछ रीति रिवाजों में पुरुषों को आने की मनाही होती है। यह पर्व पूरी तरह केवल महिलाओं द्वारा संचालित होता है। पूजन कक्ष में सिर्फ महिलाएं ही होती हैं। जो पूजन करवाती हैं वो सेवा माय होती हैं। वह पंडिताइन भी हो सकती है अथवा दूसरे समाज की भी हो सकती हैं। देवी जी को हम पाहुणी के रूप में बुलाते हैं। गौर देवी बेटे के रूप में आमंत्रित की जाती हैं। उन्हें देवी की तरह नहीं पूजते, उनको बेटे की तरह मान मनौवत करते हैं। उनके सुख आराम का पूरा ध्यान रखते हैं। अच्छा

नाश्ता, खाना बिछौना, कपड़े, उनकी हर इच्छा का ध्यान रखा जाता है। जिस तरह बेटे का ख्याल रखा जाता है पीहर में, उसी तरह गणगौर देवी का भी ख्याल रखा जाता है। जिस तरह बेटे खेलने जाती है, खाती - पीती है, सहेलियों से बात करती है, उसी तरह देवी जी के साथ भी सारे व्यवहार व कौतुक किये जाते हैं। गणगौर एक पारिवारिक उत्सव बन जाता है। भरपूर आनंद, हर्ष उल्लास घर में, घर के आसपास तथा दूर दूर तक छाया रहता है। पूरे गणगौर पर्व में पूजा करने वाली एकत्रित महिलाओं को गवरनियाँ कहा जाता है। उपस्थित महिलाएं सोलह सिंगार में रहती हैं। वे दोपहर में प्रतिदिन पाती खेलने जाती हैं आम के बगीचे में। आम की घनी छाँव में स्त्रियाँ नृत्य करती हैं, गीत गाती हैं, हंसी विनोद करती हैं, स्वांग या नाटक भी खेलती हैं। उस आम्र वन में दूर-दूर से स्वांग, नौटंकी, नृत्य आदि प्रदर्शनकारी कलाओं को प्रदर्शित करने हेतु महिलाओं की मंडलियाँ आती हैं। सारी महिलाएं विभिन्न मुद्दों पर नाटक प्रस्तुत करती हैं। ज्यादातर सामाजिक कुरीतियों पर आधारित प्रस्तुतियाँ होती हैं, जिसमें स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचार अन्याय के विरोध में अपने कथानक को प्रस्तुत करती हैं। इन सब मंडलियों में और देखने वालों में पुरुषों का प्रवेश वर्जित होता है। इन सारे प्रदर्शनकारी आयोजनों में खूब हंसी ठट्टा, व्यंग्य, गाली आदि की भरमार होती है। यह सारे आयोजन पाती खेलने के दौरान होते हैं। विषम संख्या में उपस्थित जो भी गवरणियाँ हैं, उनके ससुराल पक्ष से और मायके पक्ष से मंडलियाँ आती हैं। कभी-कभी तो 200 से 400 की संख्या में पाती खेलने में महिलाओं की उपस्थिति होती है। जिस जगह पर पाती खेलते हैं वहाँ से लौटते समय आम के पत्ते, टहनियाँ लेकर आते हैं। सात या पांच पत्तियाँ अपनी गोदी में रखकर लेकर आते हैं। उनको कलश में रखते हैं कलश के ऊपर कलश रखकर उनको दुल्हन की तरह सजाते हैं। घर की जो बड़ी बहू होती है वह अपने सर पर रख कर उन्हें लेकर आती है। पाती खेल कर वापस गोधूलि वेला में कलश लेकर वे महिलाएं आती हैं तथा उनको फिर से पूजा स्थान पर रख दिया जाता है। जहाँ सेवा माय से पूजन करवाते हैं। फिर सारी गवरणियाँ सरी साड़ी में नहाने जाती हैं। नहा कर आने के बाद उस पूजा कक्ष में गीले कपड़ों में पूजन करती हैं। जाग याने गेहूँ के जवारे एक परदे के पीछे रखे रहते हैं। उस कमरे में एक पाटली या पटा होता है, उसको बाहर रखा जाता है। डलिया के साथ में उसका पूजन गवरनियाँ करती हैं। बाकी डलिया पर्दे के पीछे होती हैं, उनकी पूजा सिर्फ सेवामाय करती हैं। उस जगह गवरणियाँ भी नहीं जातीं। केवल सेवामाय रहती हैं। वह पूरी निष्ठा से वहाँ सेवा पहरा देती हैं। वे घर भी नहीं जाती हैं। उन जवारों पर धूप नहीं पड़ती, उन पर किसी की छाया भी नहीं पड़ती। जिस घर में गणगौर प्रतिष्ठित होती हैं, वहाँ भोग प्रसादी बोरो से भर भर कर आती है। जिसमें फल, धानी, मेवा, मिठाई, नारियल आदि आते हैं। भोग प्रसादी में जुवार की धानी और परमल का मेवा बँटता है। आजकल टॉफी और संतरे की गोली भी रखने लगे हैं। वह प्रसाद मेवा लेने के लिए दूर-दूर गांव से हजारों की संख्या संख्या में श्रद्धालु जन आते हैं। देवी जी के दर्शन के साथ-साथ मान भी मानी जाती है, कामना की जाती है कि माता रानी मेरी मनोकामना पूरी हो तो मैं आपको पाहुनी बुलाऊँगा। पूरे सात दिन तक वहाँ आस्था का सैलाब उमड़ता रहता है। आठवें दिन दो रथ बनाये जाते हैं। हर रथ बिना जोड़ का बनाया जाता है। फिर उनका सिंगार किया जाता है। जिसमें धनिया राजा और रेनू भाई सवारी करते हैं। बाजूट पर याने पाटों पर धनियर राजा और रणु बाई की प्रतिमाएं बनाई

जाती हैं। बाजोट जोड़ वाले नहीं होते, एकल लकड़ी का बनाया होता है। चार कोनों पर चार छेद करते हैं। बांस की चिप से मानव आकृति बनाई जाती है। कपास, चारा, हीटलॉन् आदि से मानव आकार बनाये जाते हैं। चार कोनों में उन्हें नाडे के साथ मजबूती से बांधा जाता है। जैसे विवाह उत्सव पर मंडप बनाया जाता है तथा मंडप शांति की जाती है , उसी तरह मंडप छा कर उस मंडप में राजा धणीयर जी व गौरा जी को रथ सहित रख देते हैं। इतने साज सज्जा और सम्मान से उनको वहाँ विराजित करते हैं, जैसे दूल्हा-दुल्हन को वहाँ विराजमान किया हो। उनको एक कोरे सफेद कपड़े से ढक दिया जाता है। ढँक देने के बाद में पूरी भोग प्रसाद ही बनती है जिसे आभरण कहते हैं। आभरण बनता है बिना नमक का, हाथ से पीसे हुए गेंहू के आटे से। उस प्रसादी के लिए जो भी अनाज लिया जाता है वह सब सवाया लिया जाता है- जैसे चावल, दाल, आटा, सूजी, बेसन, शक्कर इत्यादि सब कुछ सवा सवा के नाप से। भोग बनने के बाद सबसे पहले गवरनियों को भोजन कराया जाता है। गवरनियों को देवी जी का ही प्रतिरूप समझा जाता है। क्योंकि पूरे 9 दिन शुद्धता शुचिता के साथ वे जीवन व्यवहार करती हैं और देवी जी का पूजन करती हैं। इस तरह गवरनियाँ स्वयं देवी स्वरूप हो जाती हैं। उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है जैसा देवी जी के साथ करते हैं। उनको पूरे सम्मान के साथ भोजन कराया जाता है, पैर धुलाये जाते हैं। उनके बाद बाकी स्त्रियाँ बैठकर भोजन करती हैं। गवरनियाँ एक समय फलाहार करती हैं तथा एकदम सात्विक भोजन बिना बघार लगा हुआ भोजन करती हैं। पूरी सब्जी इत्यादि भोजन नहीं करतीं। पूरे 9 दिन भोजन में नमक मिर्ची हल्दी इत्यादि सब कुछ होता है, केवल तड़का नहीं लगता। भोजन के पश्चात सभी लोग उनके पैर पूजेंगे, उनको टीका लगाएंगे और उनको वस्त्र इत्यादि भेंट करेंगे। गवरनीयों को जो घर से वस्त्र आदि मिलते हैं उन्हीं को पहनकर वे रथ यात्रा में शामिल होती हैं। पवित्र जवारे के पास रखा एक दीपक और एक पटा दोनों रथों में रख दिया जाता है। पटा रनु बाई के रथ में रखी जाती है और दीया धनिया राजा के रथ में रखा जाता है। जाग या पवित्र जवारे बाहर आने पर रथ में प्राण आ जाते हैं। फिर रथ को पानी पर लेकर जाया जाता है अर्थात् कुँए पर ले जाते हैं। उस जल स्थल तक पहुँचते हुए रास्ते भर में श्रद्धालु नृत्य करते हैं। उस पर झालरें देते हुए, गीत गाते हुए नाचते हैं। नाचते गाते हुए बैंड, ढोल ताशे बजाते हुए रथ यात्रा कुँए तक जाती है। वहाँ रनु बाई और धनियर राजा की लगुन लगाते हैं। लगुन उस घर के मामा मामी लगाते हैं। यह सारे संस्कार गोधूलि बेला में ही संपन्न किए जाते हैं। परिणय संस्कार धूमधाम से संपन्न किए जाने के बाद अंधेरा होते होते उसी हर्षोल्लास के साथ सभी रथों को वापिस लेकर आते हैं तथा घर पर मंडप में उन्हें विराजमान कर दिया जाता है। इस बार विराजमान करते समय रनु बाई की गोदी में बालक टाँकते हैं याने छोटा सा बच्चा भेंट करते हैं। इसे देवी जी की गोद भराई कहते हैं। रनु बाई की गोद भराई की रस्म में दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। उन्हें तरह-तरह के उपहार देते हैं। नारियल, सुहाग का सामान, मिठाई, धणीयर राजा के लिए कपड़े, बच्चे के लिए कपड़े दिये जाते हैं। सुहागिन बेटी को जब मायके से विदा किया जाता है तो बिटिया के लिए, उसके पति के लिए, उसके बच्चों के लिए जिस तरीके से वस्त्र और उपहार दिए जाते हैं उसी तरह रनु बाई और धणीयर राजा की बिदाई के समय भी यही विधि अपनाई जाती है।

जिस भी गांव में गणगौर की पूजा होती है, उनकी विदाई के समय तक 50 से 60 बोरे भर जाते हैं, इतनी इतनी उपहार सामग्री आ जाती है। बोरो में नारियल भरे होते हैं, फल भरे होते हैं और कपड़ों से भरे होते हैं। गणगौर पर्व के पूरे 9 दिनों में न केवल घर परिवार में बल्कि गाँव भर में हर वक्त हर्ष उल्लास का वातावरण बना रहता है। गीत संगीत नृत्य का वातावरण बना रहता है। विशेषकर रात्रि 8:00 बजे की पूजा आरती के बाद का समय कलाकारों की मंडलियों का होता है। जिसमें वे गीत, भजन, नृत्य, नाटक आदि प्रस्तुत करते हैं। गणगौर के पर्व के सभी दिनों में बिजली की चमक दमक रोशनी से, चमकीली पन्नियों से, दीवारों की चित्र आकृतियों से, रंगीन सजावट से पूरा घर और आसपास का वातावरण रंग रंगीला और मनमोहक हो जाता है। हर किसी व्यक्ति में माता की शक्ति का संचार होता है। उसमें जीवन को बेहतर ढंग से जीने का उत्साह भर जाता है। आत्म उद्धार और परोपकार की भावना का विकास होता है। स्त्रियों के प्रति आदर और सम्मान की भावना आती है। पूजा आरती के बाद रात के समय स्वांग का आयोजन होता है। कोई भोले बाबा के रूप में है तो कोई पार्वती के रूप में है। सामाजिक बुराइयों पर स्वांग होते हैं। प्रकृति पर्यावरण के संदर्भ में स्वांग होते हैं। लड़कियों की शिक्षा पर स्वांग होते हैं। सिर्फ पूजन वाली जगहों पर पुरुष प्रवेश नहीं करते। लेकिन मंडप जहां पर होता है वहां पर पुरुष आ सकते हैं। यहां तक कि रात के समय होने वाली नाटक प्रस्तुतियों में भी पुरुषों की सहभागिता होती है। सारी तैयारियों में पुरुष शामिल होते हैं। जिस कक्ष में गणगौर स्थापित होती हैं उस कक्ष के बाहर पर्दा लगा होता है। उसके बाहर एक सेवादार बैठी होती हैं। बाहर एक बाल्टी में जल भरा होता है जिसमें गोमूत्र, गंगाजल, नर्मदा जी का जल और नीम की पत्तियां होती हैं। उससे छींटे मार कर श्रद्धालु खुद को पवित्र करता है तथा बाहर से ही धोक देता है। बाहर बैठी सेवादार महिला उनको प्रसाद के रूप में अंजुरी भर-भर के, गिरती हुई टुलती हुई अंजुरी भर-भर के उनको प्रसाद देती है। ताकि इसी तरह सुख समृद्धि भर भर कर आप तक पहुंचे। पूजन कक्ष के सामने रखी डलिया हमेशा भरी रहती है। लगातार श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं उसमें से प्रसाद पाते हैं और चढ़ावे में आए हुए फल मेवा इत्यादि मिठाई इत्यादि उस डलिया में पुनः भरते चले जाते हैं। श्रद्धालु ज्यादातर खरबूज, तरबूज, हरे नारियल जैसे रसदार पानीदार फल लाते हैं। क्योंकि चैत्र और वैशाख के दिन भीषण गर्मी वाले दिन होते हैं। जितनी भी ठंडी खाद्य व पेय सामग्री होती है वह सब गवरनियों को उपलब्ध कराई जाती है। वे पूरे गणगौर पर्व में चप्पल आदि नहीं पहनती। उन पर देवी मां की विशेष कृपा होती है कि उन्हें कोई तकलीफ नहीं होती। रनु बाई की गोद भरने के बाद का अगला दिन यानी नवां दिन उनकी विदाई का दिन होता है। उस दिन उनका विसर्जन किया जाता है। सुंदर साज सज्जा वाला झूला बांधा जाता है। सभी गवरणियों और महिलाओं द्वारा उनको झूला झुलाया जाता है। फिर मंडप के बाहर ले जाया जाता है। उसके बाद धनियर राजा को भी झूला झुलाकर मंडप के बाहर ले जाया जाता है। रथ बहुत भारी होते हैं। उनको सिर पर संभालने के लिए 4 लोग लगते हैं। जब विदाई के लिए निकलते हैं तो पूरे पंडाल में झालर देते हैं, नृत्य होता है। सभी की परम आकांक्षा होती है कि वे उन दोनों रथों को अपना कंधा दें। फिर जुलूस की शक्ति में सभी श्रद्धालु निकलते हैं। बारात सा यह दृश्य। गाजे बाजे। ढोल ढमाके। नाच गाना। खुशी उमंग। आस्था विश्वास। लोक और दैवीयता का यह निराला संगम, यह अद्वितीय दृश्य देखकर सभी स्वयं को धन्य

समझते हैं। जितने भी जवारे पर्दे के भीतर रहते हैं वह सभी के सभी बाहर लाये जाते हैं। फिर उनको पानी तक याने कुँवा स्थान पर ले जाते हैं। कुँए पर ले जाते समय देवी जी जगत माता हो जाती हैं। अभी तक देवी जी गुप्त थी। जवारे गुप्त थे। अब रनुबाई जगत माता हो चुकी हैं। आप जवारों के भी दर्शन कर रहे हैं जिनमें दिव्य प्रताप है। आखिरी दिन जवारे पहली बार भीतर से बाहर की ओर आ रहे हैं तब सभी पुरुषों को जोड़ों के साथ यानी उनकी पत्नियों के साथ दर्शन कराए जाते हैं। जवारों का पूजन भी जोड़े से करवाते हैं। जवारों को पटियों पर रखकर सर पर उठा लिया जाता है। गाँव शहर का पूरा भ्रमण करते हुए नदी तट पर ले जाया जाता है। आरती पूजन के साथ विसर्जन की तैयारी की जाती है। विसर्जन सिर्फ घर के लोग करते हैं। रनु बाई को जितने भी सोने के आभूषण जैसे बेंदा, कान के झुमके, बाजूट, हार, सोने के कंगन, चूड़ियां, अंगूठियां, पांव की पायल ये सारे आभूषण उतार लिए जाते हैं। फिर उनको विसर्जित कर दिया जाता है। उनको विसर्जित करने के बाद खाली रथ को तुरंत ही वापस घर पर ले आए जाता है। रथ को खोल कर पुनः सहेज कर रख दिया जाता है। नदी के घाट पर ही सभी को कपड़े वस्त्र आदि भेंट किए जाते हैं। साथ ही वहाँ भोजन प्रसादी इत्यादि भी वितरित किए जाते हैं।

**निमाड़ के हरदा क्षेत्र के गणगौर की
पूजा विधियाँ व अनुष्ठान**

निमाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में गणगौर

राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश, जहां मध्यप्रदेश में भी दो निमाड़ी और भुवाणा। भुवाणा क्षेत्र जो है सिवनी मालवा से आगे टिमरनी से थोड़ा पहले, टिमरनी से लेकर खिड़किया तक 50 कि. मी के आस पास जितने भी गांव हैं, वहां एक ही विधि से गणगौर मनाते हैं।

वहाँ भी माता पार्वती और शंकर जी की गौर के रूप में पूजा करते हैं। निमाड़ के भुवाणा में अनुमति लेकर मनाते हैं । वहीं निमाड़ के खरगोन ,खंडवा, बड़वानी क्षेत्रों में हर घर में जवारे बोये जाते हैं। हर घर में छोटे रूप में गणगौर पूजी जाती हैं। किंतु हर जगह पर गणगौर की मूल आत्मा वही है, स्वरूप व विधान बदल जाते हैं।

गणगौर का आखरी दिन

आठवें या नौवें दिन जवारे बाहर जाते हैं। हमने जो 9 दिन माता पार्वती और भगवान शिव की आराधना की है, जो मूर्ति रहती हैं उसमें एक रहती है धणियर राजा की और माता पार्वती की यानी कि रणुबाई की। तो उनका आठवें या नौवें दिन विवाह होता है। बाकायदा मंडप बनता है और आठवें दिन उनको सिर पर रखकर माताजी को और धणियर जी को पानी तक यानी कुएं तक ले जाया जाता है। वहाँ उनकी गीत नृत्य ढोल ताशों के साथ पूजा अर्चना होती है।

जिस तरह नवरात्रि में व्रत रखे जाते हैं उसी तरह गणगौर में भी व्रत रखे जाते हैं। पहले व्रत और उपवास में अंतर समझने की ज़रूरत है। वैसे सामान्य परिभाषा अलग है पर जैसे हरताली व्रत, उसमें कुछ नियम होते हैं। व्रत मतलब संकल्प होता है, नियम होता है। जैसे स्त्रियां करवा चौथ का व्रत रखती हैं मतलब उनका एक नियम होता है की चांद निकलने के बाद ही भोजन करेंगी, दिन भर पानी नहीं पाएंगी ये कुछ नियम और शर्तें हो गईं जिससे कि यह पता चलता है कि व्रत में नियम और शर्तें होती हैं। और उपवास का मतलब है की ईश्वर के समीप रहना पर जब उपवास और व्रत दोनों एक साथ में रहेंगे तब हमारे ईश्वर के समीप रहते हुए कुछ नियम कानून रहेंगे। हम आराधना जब किसी की करते हैं तो जब तक समर्पण भाव नहीं होता किसी भी काम में तब तक वो फलीभूत नहीं होता। गणगौर पूजा में जो सेवा माय होती हैं वो पूरे नौ दिन पूजा करती हैं, वहां पर और जो मुख्य आदेश देते हैं उन्होंने कहा की ये करना है तो उसका अच्छे से पालन करना होता है। भाव और समर्पण के साथ। तो व्रत में ऐसे ही कुछ मुख्य नियम होते हैं जैसे तीन बार आरती होना। वो तीनों बार गीले कपड़ों में ही आरती करती हैं, सिले हुए वस्त्र नहीं पहनती हैं उस दौरान। फिर आखिरी दिन जिस परिवार का आयोजन होता है केवल उस परिवार के लोग होते हैं। पूरा नैवेद्य बनता है उसमें आटा, गेहूं और गुड को माताएं हाथ से पीसती हैं। नर्मदा के, कुएं के जल से वो नैवेद्य बनता है। स्वच्छता और शुद्धता के भाव से नैवेद्य बनता है और उसी भक्ति भाव से और पूरी पवित्रता के साथ माताजी का श्रृंगार भी बनता है।

इसमें नियम तो बहुत सारे हैं किंतु जो आयोजक है और गौर माई हैं। उनके घर में स्वयं माताजी पधारी हुई हैं तो उन्हें क्रोध नहीं करना है, लोभ नहीं करना है, ईर्ष्या नहीं करना है, इस तरह के जितने भी विकार हैं उनसे दूर रहना है। यहाँ विशेषकर एक बात ये देखने को मिलती है की जिनको गौर बाई के रूप में बुलाया है उनको माता का स्वरूप देते हैं। गणगौर के इस आयोजन में सभी अपनी अपनी मनोकामना करते हैं रनुदेवी और धणियर राजा से जैसे कोई व्यक्ति चाह रहा है की मैं परीक्षा में सफल हो जाऊं, एक क्वॉरी कन्या चाहती है की उसे योग्य वर मिल जाए, किसान चाहता है की अच्छी फसल हो जाए। गउर माँ की कृपा से सभी मन वांछित फल पाते हैं। जग का कल्याण हो और सबका मंगल हो। आयोजक शुचिता, आनंद तथा प्रेम के साथ सबसे व्यवहार करे। लेकिन मूल बात यही है कि क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष नहीं होना चाहिए कितना ही बड़ा नुकसान हो जाए इस दौरान शांति रखनी चाहिए।

गणगौर एक बहुत ही बड़ा त्योहार है। अगर सामान्य रूप से भी देखें तो आदमी किसी भी स्तर का हो पर पूजा का मूल स्वरूप एक ही है। मतलब जब गांव में भी पूजा होती है तो आदमी के पास दो सौ एकड़ ज़मीन हो या एक एकड़ वह बैठेगा एक ही दरी पर आज भी।

जो माताएं बहनें अपने सुहाग के लिए अपने कल्याण के लिए आराधनाएं करती हैं मतलब मूल जो स्वरूप है वो तो अभीष्ट कामना के लिए हैं। हमारे हिंदू शास्त्र में देखें तो कोई भी आयोजन होता है तो कहा जाता है की "धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो" ये हर मंदिर में सुनने को मिलता है हिंदू धर्म के अनुसार इसे किसी अनुशतान के अंत में बोलते हैं। यहां भौतिकता केवल हमारे सुख सुविधा के स्वरूप में आएगी बाक़ी तो मूल स्वरूप है पूजन का आराधना का वो एक ही है फिर चाहे कोई भी करे उस व्यक्ति का केवल वैभव बढ़ता जाता है। अब जैसे एक व्यक्ति कहता है की मेरे गांव में जो भी आएगा नौ दिन वो खाली पेट नहीं जायेगा मेरे घर से, और वहीं कुछ लोग केवल अपने घर परिवार को ही खिला पाते हैं। सबकी अपनी सीमा है क्षमता है लेकिन भाव की न कोई क्षमता है न ही सीमा है।

गणगौर के गीत तथा उनके प्रसंग व आशय

गणगौर पर्व मातृदेवी गौरी की अर्चना का पर्व है। गणगौर के पूजा-अनुष्ठान में जो बात इस पर्व को बहुत विलक्षण बनाती है, वह है - गणगौर के गीत। लोक की यह विशेषता रही है कि उसने कभी शास्त्र की बाट नहीं देखी। लोक ने अपनी कला, अपनी संस्कृति को अपनी सृजनशीलता और कल्पनाशीलता से समृद्ध किया है। लोक ने अपने परिवेश, अपनी आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए गीत सिरजे हैं। लोक के जितने भी पूजा-पर्व-अनुष्ठान होते हैं उसके गीत उसने स्वयं रचे हैं। लोक के इन समस्त तीज त्यौहारों में वैदिक ऋचाएँ, मंत्र, श्लोक आदि का उच्चारण या गायन नहीं होता। लोक द्वारा रचे गए गीत ही गाए जाते हैं। इन गीतों में वनवासी तथा ग्रामीण जनों की प्रार्थनाएँ, इच्छाएँ समाहित होती हैं। उनके आसपास की प्रकृति, उनका जीवन व्यवहार, कृषि से सम्बंधित समस्त कामनाएँ, खुशहाली, परिवार की संवृद्धि आदि विषय उनके गीतों में अभिव्यक्त होते हैं। लोक की सबसे बड़ी विशेषता है कि देवी-देवताओं के साथ उनका व्यवहार अत्यंत मानवीय याने अपने परिजनों जैसा ही होता है। वे देवी देवताओं के साथ अपने बड़े बुजुर्गों की तरह व्यवहार करते हैं, उनसे किसी बात के लिए हठ भी करते हैं। कभी बच्चों की तरह भी व्यवहार करते हैं, उनकी हर माँग को मानते हैं। कभी पाहुणी या मेहमान की तरह बर्ताव करते हैं, उनकी हर सुख-सुविधा का ख्याल रखते हैं। इस तरह लोक देवी-देवताओं के साथ सहज मानवीय सम्बंध बनाकर अपने सुख-दुःख उनसे कहता है। यह सारा भावनात्मक प्रकटीकरण गीतों के माध्यम से होता है। कभी कभी देवताओं से विभिन्न शिकायतें भी की जाती हैं, हँसी ठिठोली भी की जाती है। इस तरह लोक अपने रचे गीतों के ज़रिए ईश्वरीय सत्ता से एक आत्मीय तथा रागात्मक सम्बंध बनाता है। ये गीत वाचिक परम्परा की अद्भुत मिसाल हैं। न तो ये कहीं लिपिबद्ध थे, न ही ये राग आधारित थे। फिर भी सदियों की सांस्कृतिक परम्परा में ये गीत अब तक बिना अवरोध के बहते आए हैं।

गणगौर के गीत भी कई तरह की कामनाओं से परिपूर्ण हैं। इन गीतों में सुहागिन स्त्रियाँ गौर देवी यानी रणुबाई से अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं। अपने बच्चों के खुशहाल भविष्य की कामना करती हैं। आंचलिक विशेषताओं को समेटे इस पर्व के मूल में सूर्य और राज्ञी, शिव-पार्वती, ब्रह्मा-सावित्री चन्द्र- रोहिणी की पूजा सर्वत्र प्रचलित है और इनसे सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं, लेकिन सबसे अधिक गीत रणुदेवी (राज्ञी) और उनके स्वामी धणियर राजा (सूर्यदेव) के गाये जाते हैं। गणगौर गीतों में देखा गया कि जहाँ रणुदेवी और धणियर के माध्यम से जो बात कही गई है, वही बात छोटे-मोटे बदलाव या और किसी रूप में शिव-पार्वती, ब्रह्मा-सावित्री और चंद्र-रोहिणी के नाम से दुहरायी जाती है। इससे कहीं-कहीं जनमानस में यह भ्रम भी पैदा होता है कि रणुदेवी के साथ उसकी तीन बहनें भी थीं, जो शिव, ब्रह्मा और चन्द्रमा को ब्याही थीं।

जहाँ तक रणुदेवी और धणियर का प्रश्न है, लोकगीतों में वे जहाँ एक ओर विष्णु और रमा के रूप में भी लिये जाते हैं वहीं दूसरी ओर सूर्य तथा रणु के रूप में भी ग्रहण किये जाते हैं। कहीं-कहीं गीतों में रणु को राजा हिमाचल की पुत्री के रूप में वर्णित किया है और धणियर भगवान शिव को माना है। इससे किसी प्रकार की दुरुहता नहीं बनती बल्कि कहीं-कहीं व्यापक अर्थ गौरव की प्राप्ति होती है,

जिसके कारण गणगौर के सभी गीतों में व्यापकता के साथ उदात्त भावनाओं का संचार सहज रूप से हो जाता है। इस अवसर पर सारा प्रदेश गीतमय हो उठता है और शिव-पार्वती, ब्रह्मा-सावित्री, विष्णु-लक्ष्मी तथा चन्द्र-रोहिणी की वन्दना के गीत गाये जाते हैं। इनमें सबसे अधिक गीत रणुदेवी और उनके पति (धणियर) सूर्य के संवाद रूप में कहे गये हैं।

(1)

जल जमुना पानी कऽ गया ओ गऊरबाई,
मुखड़ो घोयो न टीकी खोई,
एक वारी की टीकी पावऽ रे हेमाजल ।

गऊरबाई का दादाजी न जात नी जाणी
जोगिड़ा कऽ दिवि परणाय,
जोगिड़ो म्हारा मन वस ।
खूँटी वल्या अम्बा-तुम्बा,
आंगणा मऽ रक्षा को ढेर ।

आशय यह कि - हे गौरी! तुम्हारे पिताजी ने न जाने किस जाति के साथ तुम्हारा विवाह कर दिया? यह सुनकर देवी कहती है- 'मैं अपने मन की बात तुम्हें कहती हूँ वह जोगी साधारण नहीं है, वह मेरे मन में समा गया है, उसके मेरे सम्बन्ध जन्म जन्मांतर से हैं।

तब सहेलियाँ कहती हैं- तुमने क्या जानकर उस जोगी से विवाह किया है ? न उसकी जात-पाँत का, न घर-द्वार का और न सूरत- सीरत का ठिकाना है। वह विचित्र वेशधारी है। उसके घर में खूंटियों पर तुम्बे लटके हैं और आंगन में धूनी की राख के ढेर के सिवाय कुछ भी नहीं है। तुम्हारे पिता, काका, मामा और भाई ने ऐसे वर को किस प्रकार स्वीकार कर लिया है।

हिमाचल शब्द निमाड़ी में 'हेमाजल' हो गया। गऊरबाई ही गौरी का स्वरूप है। गौरी के पति भगवान शंकर हैं। जन्म-जन्मांतर से गौरी ने शिव को अखण्ड सौभाग्य के रूप में प्राप्त किया है। इसलिए लोक में शिव और पार्वती की प्रतिष्ठा सर्वोपरि रही है। एक निमाड़ी गणगौर गीत में शिव के विचित्र रूप का वर्णन बड़ा सुन्दर बन पड़ा है।

गणगौर एक मामूली स्त्री से देवी का रूप किस प्रकार धारण कर लेती है, इस कथा की एक झलक गणगौर के एक गीत में मिलती है।

(2)

ऊँच्यो सो पीपळ खोपल्यो ओ देवी
वहाँ बठी गाय गोठाण,
हाथ लाकड़ी पाँय पावड़ी, धणियर राजा,
गाय चरावण जाय ।
बारा पिछोड़ी को गाळणो रनुबाई,
भात लई जाय ।
आवती गवरल धणियर नऽ देखी लिया,
मोडी लिवी कणियर काम,
एक भी झटकी, दूसरी भी झटकी,
तीसरी मऽ जोड्या बेऊ हाथ,
नहीं कळु मऽ माय, नहीं मावसी,
हेड्डु तमारा घोड़िला की लाद,
टूटमान हो जो हो देवी, अमुक भाई
ऊ तमारो आणो लई जाय ।

ऊँचे और गहरी छाँव वाले पीपल वृक्ष जिसकी नयी कोपलें भी फूट रही हैं, के नीचे गायें बैठी हैं। गणगौर के पति धणियर हाथ में लकड़ी, पैरों में जूते पहनकर गाय चराने जंगल में गये। इधर गणगौर ने धणियरजी के लिये भोजन बनाया और रोटी कपड़े (गाळणा) में बाँधकर सिर पर रखकर उन्हें देने के लिए जंगल की ओर चल पड़ी। गणगौर को रोटी बनाने और जंगल में पहुंचने में कुछ देर हो गयी।

इधर धणियरजी को भूख जोर से लग रही थी। देर होने के कारण वे मन ही मन गुस्से से भर गये हैं।

गणगौर को आता देखकर धणियर के गुस्से का पारा चढ़ गया। उन्होंने पेड़ से कणियर की सोटी तोड़ ली और गणगौर को आव देखा न ताव पीटने लगे। एक सोटी मारी, दूसरी मारी और तीसरी भी बेरहमी से जड़ दी और जड़ते ही चले गये।

बिचारी गणगौर मार से कांप गयी। आँसुओं की धारा बहने लगीं। उसने हाथ जोड़कर धणियरजी से कहा- “हमारा तो तुम्हारे सिवाय कोई नहीं है। न मेरी माँ है और न ही माँ के समान मौसी है। मेरा तो ससुराल और मायका सब यहीं पर है। अब तुम मुझे मारो या पीटो। मैं तुम्हारे घोड़ों की लीद उठाकर तुम्हारी सेवा में जीवन बिता दूँगी।

यह सुनकर धणियर राजा सिहर उठे। उन्होंने गणगौर को गले लगा लिया और आशीर्वाद दिया तथा कहा- संसार में तुम्हारा कोई कैसे नहीं है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारा भाई और स्त्री माता है। तुम जिस भाई पर प्रसन्न हो जाओगी, वही तुम्हारा सगा भाई हो जायेगा। वह तुम्हें बहन के रूप में

लेने आयेंगे। जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक तुम्हारा देवी स्वरूप अमर रहेगा। हे गणगौर ! तुम्हारे साथ लोग मेरा भी सम्मान करेंगे। तुम माँ और बहन के रूप में और मैं तुम्हारे कारण दामाद के रूप में पूजित होऊँगा।

(3)

**भोळई हो गवरल भोळो तमारो देश,
ववु म्हारी टूटजे ओ, भोळई निमाड़ ।
'थारो काई काई रूप बखाणं रनुबाई,
सौरठ देश सी आई हो।**

हे गौरी जैसी तुम भोली हो उसी प्रकार तुम्हारा भोला निमाड़ देश है। इस भोले निमाड़ देशवासियों पर देवी सदैव प्रसन्न रहना, वे तुम्हें बहन के रूप में हमेशा पूजते रहेंगे। निमाड़ी पारम्परिक गीतों में सौराष्ट्र गुजरात का वर्णन प्रायः मिलता है। गणगौर के सन्दर्भ में कहा गया है कि वह सौरठ देश से आयी है।

निमाड़ी लोकगीतों में गुजरात प्रदेश का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि निमाड़ से गुजरात का सम्बन्ध बहुत नजदीक का रहा है। एक दूसरे की संस्कृति, कला और जीवन का अर्न्तसम्बन्ध बहुत गहरा और व्यापक रहा है। इसीलिए निमाड़ी बोली में गुजराती के अनेक शब्द और क्रियाएं मिलती हैं। गुजरात की संस्कृति के कई महत्वपूर्ण तत्व निमाड़ की संस्कृति में घुले मिले दिखाई देते हैं। युगों से निमाड़ का गुजरात से सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक सम्बन्ध होने के कारण निमाड़ी लोक साहित्य में गुजरात का वर्णन मिलना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

अब यहाँ यह प्रश्न विचारणीय है कि सचमुच गणगौर सौराष्ट्र से आई है या निमाड़ की धरती पर उसका अवतरण हुआ था। निमाड़ी गणगौर गीत में नर्मदा किनारे बसे निमाड़ प्रदेश को गणगौर का पीहर बताया है।

(4)

धणियरजी नऽ रनुबाई आया,
रथ सी नरबदा तीर ।
पूछऽ धणियर, बोलो रनुबाई,
कुण तमारो वीर ।
किन घर तम मेजवान रनुबाई,
कुण कर थारी आस ।
किन घर काई सिणगार तमारो,
जां तम करोगा वास ।
नदी ओ निरमळ नीर नरबदा नऽ
छे यो निमाड़ देश ।
भोळा मानवी वसऽ व्हॉं पऽ नऽ,
पूजऽ बयणी रो वेश ।
जिन घर सिंगार्या रथ हमारो,
नव दिन पीयर वास ।
जिन घर वाया जाग हमारो,
बाप माय कर आस ।
देवो रजा हम जावां पीयरजी,
वाट देखी रहया लोग ।
करी नऽ तैयारी रथ सिंगार्या
बणाया छप्पन भोग ।

धणियरजी रनुबाई को रथ में बिठाकर नर्मदा किनारे पहुंचे। नर्मदा का विशाल पाट और निर्मल जल देखकर धणियरजी रणु से पूछते हैं- निमाड़ प्रदेश की सीमा आ गयी है, मनोरम नर्मदा का यह तट है बोलो रणु तुम्हारा भाई यहाँ कौन है? तुम यहाँ किसके घर की मेहमान बनोगी, तुम अपने मन की बात बताओ । तुम किस घर जाकर कौन सा श्रृंगार करोगी ?

इस पर रनु कहती है- यह नर्मदा नदी है, इसका जल पवित्र और निर्मल है, यही निमाड़ प्रदेश है।

नर्मदा के किनारे निमाड़ प्रदेश में स्वभाव से भोले लोग निवास करते हैं। निमाड़ के लोग बहन के महत्व को खूब समझते हैं। वे बहन का सम्मान करना जानते हैं। मैं अच्छी तरह से जानती हूँ ।

उन्होंने मुझे अनुष्ठानपूर्वक जवारे बोककर मेरा आव्हान किया है। जहाँ मेरे माता-पिता मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जिन्होंने मेरे लिए बहन और देवी के प्रतीक रूप में सुन्दर रथ सज्जित किये हैं।

जहाँ मेरी प्रतिष्ठा की जाती है। सभी लोग बच्चे, बूढ़े, महिला-पुरुष मेरी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हे धणियर राजाजी ! मुझे नौ दिन पीहर में रहने की आज्ञा प्रदान करें। सभी मेरी बाट जोह रहे हैं। उन्होंने मेरे लिये छप्पन भोग बनाने की पूरी तैयारी कर ली होगी। हे स्वामी मुझे नौ दिन के लिये मायके में रहने की इजाज़त दे दें। पर्व समाप्त होते ही मुझे लेने के लिए आ जाना। यह सुनकर धणियर जी रणुदेवी को अकेली छोड़ने में हिचकिचाते हैं। इतने में गाँव के सभी लोग रणु और धणियर की अगवानी के लिए आ गये। धणियरजी रणु को छोड़कर जाने लगे परन्तु गाँव वालों ने उन्हें भी अनुरोधपूर्वक रणु के साथ नौ दिन रहने के लिए रोक लिया। गाँव वालों के आग्रह पर धणियर रुक जाते हैं। तभी से धणियर राजा के सम्मान में गणगौर के साथ धणियर राजा की भी प्रतिमा बनायी जाने लगी।

अब सारा लोक समाज गणगौर को मिथक के रूप में पूजा करता है । मिथक सार्वदेशिक सार्वकालिक और वैज्ञानिक होते हैं। इस दृष्टि से गणगौर का मिथ कभी समाप्त नहीं होगा, अनन्त काल तक चलता रहेगा। इसलिए प्रतिवर्ष गणगौर पर्व के आने की प्रतीक्षा निमाड़ में की जाती है।

(5)

फागुन फरक्यो नऽ, चईत लागी गयो,
रनुबाई जोवऽ छे वाट ।
असी रूडी ग्यारस वो माता कब आवसे,
टोपली को घड़णू झमराल्यो वीर भूली गयो,
वोको लागी गयो सुपड़ा पर ध्यान ।
असी रंगेली ओ देवी थारी चूँदड़ी,
फागुन फरक्यो नऽ चईत चड़ी गयो ।

माता की मूठ चैत्र सदी ग्यारस को रखी जाती है। मूठ का गेहूं बोने से है। चैत्र सदी एकादशी की प्रातः घर की सुहागिनें नहाती हैं, पूर्णतः कोरे कपड़े पहनती हैं। बाँस की छोटी-छोटी चार (छाबड़ी) टोकनियों में गेहूँ रखती हैं, साथ में मिट्टी के एक 'सरावले' (दिये) में भी गेहूँ भरती हैं, उन्हें थाली में रखती हैं, उनको पीला वस्त्र ओढ़ाकर (पेळो वढ़ई नऽ) मोहल्ले की सभी स्त्रियाँ मिलकर गीत गाती हुई 'माता की बाड़ी' में जाती हैं। माता की बाड़ी का मतलब एक निश्चित जगह होता है, जहाँ टोकनियों में गेहूँ बोये जाते हैं। यह स्थान किसी ब्राह्मण का घर, पटेल का घर या मन्दिर हो सकता है। यह कार्य परम्परा से कोई पंडित करता है, जिसे 'बामण महाराज' कहा जाता है। वह टोकनियों में मिट्टी भर कर गेहूँ बोता है और आठ दिन तक सुबह शाम उन्हें जल से सिंचित करता है। जिस दिन रथ के जवारे लेने जाते हैं, प्रत्येक घर से यथा शक्ति सीदा-सामान और नगदी नेग दिया जाता है। एक कोठरी में रखी टोकनियों में गेहूँ के अंकुर फूट पड़ते हैं। जिन्हें 'जवारे' कहा जाता है। आठ दिनों में केवल पुजारी ही इन जवारों की रखवाली करता है। किसी और को जवारों की कोठरी में जाने नहीं दिया जाता। प्रतिदिन पावन जल से सिंचित जवारे कुछ ही दिनों में लहलहा उठते हैं। चार टोकनियाँ रनु, गौरी, सावित्री और रोहिणी का प्रतीक हैं और मिट्टी का छोटा सा दिया 'सरावला' बच्चे का प्रतीक है। पुजारी या ब्राह्मणी स्नानादि करके शुभ मुहूर्त देखकर होली जलने के स्थान पर जाती है, वहाँ पूजा करके होली की राख से पाँच 'मुठिया' बनाती है और अपने साथ ले आती है। पाँचों मुठियाओं को एक बाजूट पर रख देती है। मुठियाओं के पास होली की राख में से बीने गये पाँच कंकर (गौर) एक पैसा सुपारी के साथ गौरी के रूप में प्रतिष्ठित कर देते हैं। माता की स्थापना होने के बाद गाँव की स्त्रियाँ माता की बाड़ी में प्रसाद (तमोल जुवार की धानी और चने) लेने जाती हैं। बाड़ी में जाते समय सामूहिक रूप से 'अरे सायबा खेलण गई गणगौर गीत गाती हैं।

(6)

अरे सायबा खेलण गई गणगौर
अबालो क्यों लियोजी म्हारा राज।
अरे सायब अबोलो देवर - जेठ,
सायबजी सी ना रहवाजी म्हारा राज।
अरे सायबा, पड़ी गई रेशम गाँठ,
टूटs रे पण ना छूट जी म्हारा राज।
अरे सायबा, खाटो दूध अरू दही,
फाट्यो रे मन ना जुड़s जी म्हारा राज ।
अरे सायबा, खेलणs गई गणगौर,
अबोलो क्यों लियोजी म्हारा राज।

इसी क्रम में महिलाएँ कुछ-कुछ आंचलिक भेद के साथ अनेक गीत गाती हैं। वापसी के समय पुनः “अरे सायबा खेळण गई गणगौर” गीत गाती हुई घर की ओर प्रस्थान करती हैं। आठ दिन तक यही क्रम चलता है। जवारा पूजा का सम्बन्ध देवी से शक्ति रहा है। जवारा मातृ शक्ति का प्रतीक है। यही कारण है कि अनेक मातृ पूजा के व्रत अनुष्ठान पर्व में जवारों की पूजा का विधान प्रचलित है। नवरात्रि में देवी पूजन, भुजरिया पर्व, गंगा पूजन, गणगौर विवाह में कुलदेवी पूजन आदि के अनुष्ठान में गेहूँ के जवारे बोये जाते हैं और निष्ठा से उनका पूजन किया जाता है।

(7)

जव नाऽ जवारा, केशर ना क्यारा,
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।
धणियरजी घर बोया रनुबाई नऽ सिच्या,
जव म्हारा लयरा हो लेसे।
ऊँचा खेडुला नऽ रे म्हारा हरिया जवारा
हरिया जवारा गऊँ का जवारा,
वहाँ रे हरिण हरणी जव चरऽऽ ।
बाण साधो नऽ रे म्हारा बलदेव भाई,
गरस्या बाण साधी नऽ मिरग मारजो,
हम कसा मारां नऽ रे म्हारी माता सावलड़ी,
गौरी पातळड़ी बाई ओ शकुन का पोस्या,
जव चरऽऽ ।
म्हारा हरिया जवारा हो गहुँआ लहलहे
भोला अमुक भाई घर बोया जाग, किलाड़ी बहू सींच लिया,
राणी सींची न जाण्या हो कि, जवारा पेळा पड़या
उनकी सरस पटोळई हो, अमुक बाई ढाक लियो ।

रणुबाई ही निमाड़ी लोकगीतों की अधिष्ठात्री देवी हैं। इसके एक गीत में सौराष्ट्र देश से आने का संकेत रणुदेवी की पहिचान के लिए महत्वपूर्ण है। एक गीत में रनु को रानी कहा गया है। अन्यत्र रनुबाई के मन्दिर का वर्णन है, जिसमें आसन पर रनुबाई बिराजती हैं और अपने भक्तों के लिये मन्दिर का द्वार खोल देती हैं। एक दूसरे गीत में कहा गया है कि बाई बाँझ स्त्री की कोख महोरकर एक पुत्र देती हैं। निमाड़ी गणगौर गीतों में कई जगह रनुदेवी के पति का नाम सूर्य देवता के रूप में भी लिया जाता है।

(8)

देवी आज म्हारा आंगणा मंस लाल छड़ो देवासे ।
देवी आज म्हारा आंगणा मंस रनुबाई रमता आवसे ।
देवी आज म्हारा आंगणा मंड गौरबाई रमता आवसे ।
देवी आज म्हारा भगणा मस धणियेरजी का मोडिला हिस्सा,
देवी आज म्हारा आंगणा मस लाल छड़ो देवासे ।

निमाड़ में कई बुजुर्गों से सुनी बात के आधार पर पता चलता है कि वहाँ रणुबाई तथा धनियर राजा को रमा और विष्णु के रूप में भी माना जाता है।

रणुदेवी के कई गीतों में 'ओ सायबा' खेलण गई गणगौर रमण के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। निमाड़ी में रणु निमाड़ी लोकगीतों की नायिका और अधिष्ठात्री देवी हैं। हमने हमारी कथाओं में, साहित्य में और ज्ञानियों के कथनों में सुना है कि हम आदिकाल से कश्यप ऋषि की संतान हैं। कश्यप ऋषि के पुत्र सभी देवता और मनुष्य माने जाते हैं।

(9)

**झाँझर बयड़ा का आड़, रनुबाई नऽ ख्याल मांड्योजी
घोड़िला छूट्टया कासमराय का जी,
कासमराय को अलवारी पूत ॥**

‘कासमराय को अलवारी पुत्र’ यहाँ यह कहकर इस गीत में भगवान विष्णु की ओर इशारा किया है। देव माता अदिति और देवपिता कश्यप मुनि देवताओं के आदि ऋषि माने जाते हैं।

(10)

“चूल्हा केरो चारणणो
ओ हांडी को हमार।
नो थाली पीवे राबड़ी
सोळे रोटी खाय ।
ओ वर टाली माता गवरल
म्हें थानै पूजण आय ।
मेड़ी बैठ्यो मद पीवें
लीली घोड़ी रो असवार ।
टेड़ी बाँधे पागड़ी
मघरी चालै चाल
कड़मोड़ घोड़े चढै,
चाल निरखतो जाय
ओ वर देसी माता गौरल म्हें थानें पूजण आय ॥

कहते हैं भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए पार्वती ने अपनी सहेलियों के साथ पाती का खेल किया था और देवी की व्रत-पूजा से शिव जैसे पति को प्राप्त किया था, तब से फूल पाती खेलने की परम्परा का चलन हुआ। लाड़ा-लाड़ी के स्वांग के पीछे भी बेमेल विवाह का विरोध है और श्रेष्ठ वर प्राप्ति की कामना ही है। एक गणगौर गीत में इसे बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्हें ऐसा वर नहीं चाहिए जो रसोड़ादास हो। चूल्हे पर ही बैठा रहे। जो ठीक ढंग से खाना भी नहीं जानता हो। जो नौ-नौ थाली राबड़ी पीता हो। हे माता। हमें भूलकर भी ऐसा वर मत देना।

उन्हें वर चाहिए- जो "मेड़ी बैठकर मद पीता हो। लीली घोड़ी की सवारी करता हो। जो कमर मोड़ घोड़े पर ठमकाई से चढ़ बैठता हो और मघरी-मंघरी चाल निरखता चलता हो ।

(11)

पयली गऊर तम पूजो नऽ वो
राणी रनुबाई गऊर ।
गऊर पूजी नऽ वर पावजो वो,
राजा धणियर सरीखा भरतार ।
राउल-देउळ वो फिर
उनका माथऽ छ कसुमल पाग
धवळऽ घोड़ऽ वो चढ़
सब देवनमऽ सरदार ।
बाड़ी मऽ मोगरो मयंक सुरंगळो,
वहाँ धणियर राजा पाग बाँधऽ सुरंगलो,
म्हारी रनुबाई हिरी-फिरी देखऽ सुरंगळो,
तम भला बण्या केशरिया सुरंगळो,
तम भला बण्या पातळिया सुरंगळो,
वाड़ी मऽ मोगरो मयकऽ सुरंगळो ।

निमाड़ की रणुबाई 'सुरंगळो' केसरिया और पातलिया स्वामी चाहती है। उसी प्रकार निमाड़ की किशोरियाँ वर प्राप्ति की प्रबल इच्छा रखती हैं। निमाड़ की किशोरियाँ 'दूध, पूत और अच्हात' की कामना करती हैं। अच्छा वर तो उन्हें मिले ही लेकिन सांसारिक जीवन भी भरापूरा हो।

(12)

रनुबाई नऽ गऊरबाई पाणी कऽ संचर्या,
उनकी लारऽ लाग्या गणपति जाय।

ताम्बा खणिया रे तळाव,
अमरित अम्बो मवरियो ।

रनुबाई पीयर संचर्या,
सई ळिवी साथ।

घर की स्त्रियाँ एक दिन पूर्व यानी चैत्र शुक्ल पक्ष की द्वितीया या तृतीया की सुबह अखंडित स्त्री जिसका हाथ पाँव नाक कान कटा हुआ नहीं हो, सफेद दाग नहीं हो, प्रातः स्नान करती है फिर चक्की में देवी के भोग के लिए ताजा आटा पीसती है और गीत गाती हैं।

(13)

हे गवरल रुड़ा है, नजारों तीखा है
नैणा रे,
गड़ा है काँटा सूं गवरळ ऊपरी,
हो जी,
वेरे हाथ कंवळ केरो फूल
सीस है नालेरा, गवरल सरियो,
हो जी,
बैरी बैणी छे वसंत नाग भंवा रे,
भंवरो गवरल है फिरै, हो जी,
बैरी लिलवत आंगल च्यार,
आँखड़ियां रतन जड़ी हो, जी
बैरी नाक सूवा केरी चूच
पखवाड़े बीजल खिवै हो जी,
बैरी पेट पीपल कैसे पान,
जी ढलिया सोजा लिया हो जी,
बैरी जांघ मवलिया रो थायं

घर-मोहल्ले की सभी स्त्रियों और पारिवारिक जन मिलकर सजाये गये खाली रथों को सिर पर रखकर कतारबद्ध होकर सामूहिक रूप में माता की बाड़ी की ओर गाती हुई चलती हैं। कहीं-कहीं आगे-आगे ढोली भी ढोल बजाता चलता है। गीत चलते हैं। शुद्ध जल के तालाब खोद दिये जाते हैं, आम में मौर आ गये हैं। रणुदेवी अपनी सहेलियों के साथ मैके की ओर जा रही हैं। यह दिन रणुदेवी का ससुराल से मैके जाने का दिन है इसलिए ये गीत उसी अवसर पर गाये जाते हैं। गणगौर की प्रतिमा की शोभा देखते ही बनती है रणुदेवी स्वयं अनिन्द्य सुन्दरी थीं। लोकगीत में रणुदेवी के सौन्दर्य का विशद वर्णन मिलता है।

(14)

थारो काई-काई रूप बखाणूं रनुबाई,
सोरठ देस सी आई ओ ॥

थारी अंगलाई, मूंग की सेंगळई,
रनुबाई,
थारो सिर सूरज को तेज रनुबाई,
थारी नाक सुआ की रेख रनुबाई,
थारा डोळा निंबू की फाँक रनुबाई,
धारा दाँत दाड़िम का दाणा रनुबाई,
थारा होठ हिंगुल की रेख रनुबाई,
धारा हाथ चम्पा का छोड़, रनुबाई,
धारा पांय केळ का खंब, रनुबाई,

सोरठ देस सी आई ओ,
थारो काई रूप बखाणूं रनुबाई ।

हे देवी तुम्हारे किन-किन स्वरूपों का वर्णन किया जाए? तुम सौराष्ट्र देस से जो आई हो। तुम्हारे हाथ की अंगुलियाँ मूंग की फली जैसी पतली नरम और कोमल हैं। और तुम्हारा चेहरा सूर्य की तरह दैदीप्यमान है। तुम्हारी नाक सुवे की चोंच की भाँति अत्यन्त ही नुकीली और तुम्हारी आँखें नींबू की फाँक की तरह गोल, बड़ी और चमकीली हैं, तुम्हारे दाँत अनार के दानों की तरह सुन्दर हैं। तुम्हारे ओंठ हिंगुल सदृश लालिमा लिये हुए हैं। तुम्हारे हाथ चम्पे की टहनी की तरह पतले और नाजुक हैं। तुम्हारे पाँव केले के खम्ब की तरह गोल, चिकने और सीधे हैं। हे देवी तुम्हारे किन-किन स्वरूपों का वर्णन किया जाए। तुम सौराष्ट्र देश से आई हो।

(15)

म्हारी रनुबाई अति रूप आकला
देवी नजर लगी ओ सगी माय की।
फल झपकऽ फुन्दो लपकऽ बोलऽ अमरित वाणी ।
अरे सायबा, खाटो दूध अख दही
फाट्यो रे मन ना जुड़ऽ जी म्हारा राज।
गणपति लागां थारा पांय
रनुबाई लावां पावणी जी ।
अमुक भाई लावऽ तुख पावणी,
लाड़ी बाई लागऽ पांय ॥

निमाड़ी गणगौर गीतों में रणुदेवी के बाह्य स्वरूप का ही वर्णन नहीं बल्कि उसके आन्तरिक स्वभाव का भी वर्णन मिलता है। गणगौर बड़ी स्वाभिमानी है। उसे अपनी सहेलियों और स्वामी से बेहद प्यार है। वह वंध्या स्त्री के दुःख में विव्हल हो उठती है। उसमें बच्चों सा भोलापन है। वह दयालु है। वह अमृत की तरह मीठी बोली बोलती है। वह नारी की सांगोपांग प्रतिमा है। उसमें नारी के अनुरूप औदार्य, ममत्व और प्रेम लबालब भरा हुआ है। वह प्रेम की देवी है गणगौर उदात्त चरित्र वाली है। वह किसी को छोटा या बड़ा नहीं मानती। उसके लिए पूरा संसार एक परिवार है। एक मेहमान की आवभगत में पलक पावड़े बिछा देना निमाड़ की संस्कृति है । इसी मुताबिक रणुदेवी पाहुणी बनकर आती है। इस विशिष्ट अतिथि का सत्कार कुटुम्ब के सभी सदस्य विनम्र श्रद्धा से करते हैं।

अगर चनन का घड्या रे बाजुट,
 तो बावन चनन की कोठड़ी जी।
 कोठड़ी मऽ राँदऽ, राणी रनु बाई भात तो,
 भोला हो धणियर जीमणऽ, बठ्या जी।
 जिमत- जो जिमत नऽ कऊं पिया मन की वात,
 तो नव दिन पीयर हम जावां जी ।
 भोळा हो धणियर भोळोऽ, तमारो राज,
 तो नव दिन पियर मोकलो जी ।
 तपऽ ओ गोरी चईत केरो घाम तो,
 बाळऽ मुकुंद कुंमळई जासे जी।
 तमारा बाळाऽ कऽ राखो तमारा पास तो
 नव दिन पियर हम जावां जी ।
 ऐतरो जो सुणतऽ लागी धणियर जी रीस तो,
 तड़-तड़- मार्या ताजणा जी ।
 ऐतरो सुणतऽ लागी रनुबाई रीस तो,
 आसन छोड़ी नऽ भुइमऽ सोई गया,
 ओ ववु थारो ससरो मनावऽ सो मान,
 असा कसा थारा रुसणा ओ ।
 ओ ववु धारा चूड़िळा रो रंग बलई जाय,
 असा कसा थारा रुसणा ओ ।

 ओ ववु थारो नरीयो बालुड़ो कुमलई जाय,
 असा कसा धारा रुसणा ओ ।
 ओ ववु थारा चंदन का वाजुट बनाड़ा
 असा कसा रुसणा ओ।
 ओ ववु रुसणा ओ ।
 ओ ववु थारो सोन्ना रुप्या की टोपली घड़ावां,
 असा कसा रुसणा ओ ।
 ओ ववु थारो रेशम फाजणी भराड़ा,
 ओ ववु थारा हरिया ते जाग ववाड़ा,
 ओ ववु थारो पटोली रा पड़दा लगावा,
 ओ ववु थारा खाँड खीर का जोड़ा जिमाड़ा,
 असा कसा रुसणा ओ,

**ओ ववु थारी दुयरी गवरणी जिमाड़ा
असा कसा रुसणा ओ,
ओ ववु थारो आणो मोटा भाई लई जाय,
असा कसा रुसणा ओ ।
ओ ववु थारा जाग क्षिप्रा पोयचावां
असा कसा रुसणा ओ ।**

चन्दन की सुगंध से घर का कोना-कोना महक रहा है, क्योंकि प्रत्येक कमरे में चन्दन से बनाये गये बाजूट (पटा या पीढ़ा) रखे हुए हैं। इधर रसोई घर में रणुबाई, छत्तीस प्रकार के भोजन के साथ सुवासित भात बना रही हैं। चन्दन के पाटले पर बैठकर धणियरजी भोजन कर रहे हैं। भोजन करते-करते अच्छा अवसर जानकर रणुबाई धणियरजी को अपने मन की बात कहती है। हे स्वामी। मैं नौ दिन के लिये पीहर जाना चाहती हूँ। हे भोले स्वभाव वाले धणियरजी तुम्हारे राज्य में सभी प्रकार की सुख-समृद्धि है, तुम मुझे केवल नौ दिनों के लिये मैके भेज दो।

धणियर जी बड़ा सुन्दर बहाना बनाते हुए कहते हैं- हे रणु तुम तो जानती हो अभी चैत्र का महीना है, आगे वैशाख आने वाला है, धूप बहुत तेज है। तुम्हारे साथ का नन्हा बच्चा धूप में कुम्हला जायेगा। अभी तुम्हारे पीहर जाने से कोई फायदा नहीं है।

रणु ने कहा- मुझसे अधिक तुमको बच्चे की पड़ी है, तो तुम अपने बच्चे को अपने पास रख लो। मैं नौ दिन के लिए पीहर जाऊँगी।

रणु की इतनी सी बात पर धणियरजी को गुस्सा आ गया। उन्होंने खूँटी पर टंगी रस्सी की चाबुक उतार ली और रणु को तड़ातड़ दो चार चाबुक जमा दी।

रणु को भी गुस्सा आ गया। वह तो मानिनी थी। वह अपना आसन छोड़कर रूठकर जमीन में सो गई। रणु को मनाने उसके ससुरजी आये। वे कहते हैं- हे बहू! तुम्हें इतना गुस्सा कैसे आ गया? गुस्से से कहीं तुम्हारी चुनरी का रंग नहीं जल जाय।

(17)

विघन हरो रे देवा
विघन हरो रे
विघन हरो रे देवा
विघन हरो रे
विघन हरण गणराया हो
विघन हरो रे
विघन हरण गणराया हो
विघन हरो रे
कौन थारी माता हो देवा
कौन थारो पिता
कौन थारी माता हो देवा
कौन थारो पिता
किन हरि नाम धरायो हो
किन हरि नाम धरायो हो
विघन हरो रे देवा
विघन हरो रे
विघन हरो रे देवा
विघन हरो रे
गौरा मैया माता हो देवा
पिता शिव शंकर
गौरा मैया माता हो देवा
पिता शिव शंकर
उन हरि नाम धरायो रे
उन हरि नाम धरायो रे
विघन हरो रे देवा
विघन हरो रे
विघन हरो रे देवा
विघन हरो रे
विघन हरण गणराया हो
विघन हरो रे
विघन हरण गणराया हो
विघन हरो रे

सबसे पहले गणपति वंदना होती है, उसके बाद देवी जी के भजन होते हैं। निमाड़ में बहुत से प्रकार के गणपति के भजन हैं। सर्वप्रथम गणगौर में जो गणपति गाए जाते हैं उनमें से 'विघन हरो रे, विघन हरण गणराया हो, विघन हरो रे' एक है।

ये समूह रूप में गाये जाने वाले गीत हैं, जो बहुत अच्छे से, आनंद से गाये जाते हैं। विघन हरो मतलब हमारे जो कष्ट हैं, उनको हरो देव उसके बाद कौन आपके माता पिता है जिन्होंने आपका नाम गणपति रखा है, माँ गौरी हैं और शिव शंकर पिता हैं इसके आगे कुछ और पंक्तियाँ हैं।...

(18)

काई गणपति लाग थारा पाएं
रनुबाई आई पावणी हो
काई गणपति लाग थारा पाएं
रनुबाई आई पावणी हो
असो कुनभाई लायो
तू ख पावणी हो
असी कुनबउ लाग थारा पाएं
रनुबाई आई पावणी हो
असो बड़ाजी भाई लाया
तू ख पावणी हो
असी लाडी बाउ हो रे
असी लाडी बाउ लाग थारा पाएं
रनुबाई आई पावणी हो
काई गणपति लाग थारा पाएं
रनुबाई आई पावणी हो
काई गणपति लाग थारा पाय
रनुबाई आई पावणी हो

ये गीत पहले दिन माता जी को पाहुणी लाते हैं, आमंत्रित करते हैं तब गाया जाता है ।

(19)

अरे जागो जागो
नगर का लोग ।

रनुबाई आयी रनुबाई आयी
ओन अन्न धन लायी ।

ओ जागो जागो
नगर का लोग ।

ओ जागो जागो
नगर का लोग ।

ऐसे गाते हुए गांव के लोगों में भक्ति का, शक्ति का रोम-रोम में संचार होता है। ये किसी एक व्यक्ति का त्योहार नहीं है, पूरा गांव इसको मिलके मनाता है।

ओ मैय्या कबस खड़ा थारा द्वार हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
ओ मैय्या कबस खड़ा थारा द्वार हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा भला
हाथ जोड़ी न थी विनती करा
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा भला
हाथ जोड़ी न थी विनती करा
हो मैय्या कबस खड़ा थारा द्वार हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
सूरिया गाय को गोबर मंगायो
सूरिया गाय को गोबर मंगायो
ढीकधरी अंगना लिपाया हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा भला
हाथ जोड़ी न थी विनती करा
गज मोतियन का चोक पुरायो
गज मोतियन का चोक पुरायो
सुन्ना का कलश धरायो हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
कांस की थाली में आरती सजाई
कांस की थाली में आरती सजाई
अरे मोतियन दीपक जलाया हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
ओ मैय्या कबस खड़ा थारा द्वार हो
नवी नवीन थारा पैय्यां पड़ा
ओ मैय्या कबस खड़ा थारा द्वार हो

घड़ा कौ पर धरयो घड्यू लौ
 म्हारी रनुबाई पानी खचाय
 जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ
 हो जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ
 हो जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ
 घड़ा कौ पर धरयो घड्यू लौ
 म्हारी रनुबाई पानी खचाय
 जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ
 हो जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ
 पानी भरी न रनु बाई अंगना में ठाड़ी
 अंगना में ठाड़ी रनु बाई अंगना में ठाड़ी
 पानी भरी न रनु बाई अंगना में ठाड़ी
 सासूबाई बेड़ो उतार
 जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ
 हो जमुना गहरी हो जल कैसे भरुँ

'घड़ा का ऊपर धरो घडूलो' यानी घड़े के ऊपर जो एक छोटा सा घड़ा रखते थे, 'म्हारी रणुबाई पानी ख जाए' यानी वो पानी को जाती हैं, जब घर आती हैं तो कहते हैं, 'पानी भरन रणुबाई अंगना में ठाड़ी' आंगन में आ जाती हैं वो। पहले गांव में जो अंगने होते थे, तो रणुबाई कुएं से पानी लाकर आंगन में खड़ी हैं। 'सासूबाई बेड़ो उतार' जो कुंड है, उसके ऊपर जो घड़ा है उसे बेड़ा कहते हैं, और वह अपनी सासू मां से कह रही हैं कि मां यह बेड़ा उतार दो।

जल भरन रनु बाई आई रे
ओ जल भरन रनु बाई आई रे
जल भरन रनु बाई आई रे
ओ जल भरन रनु बाई आई रे
ओन संगमा सहेलिया लाई रे
जल भरन रनु बाई आई रे
कौन की बहु आ कौन की बेटी
कौन की बहु कौन की बेटी
कौन की नार कहाई रे
जल भरन रनु बाई आई रे
दशरथ बहू आ जनक की बेटी
दशरथ बहू आ जनक की बेटी
राम की नार कहाई रे
जल भरन रनु बाई आई रे
जल भरन रनु बाई आई रे
ओ जल भरन रनु बाई आई रे
जल भरन रनु बाई आई रे
ओ जल भरन रनु बाई आई रे
ओन संगमा सहेलिया लाई रे
जल भरन रनु बाई आई रे

जैसे गांव में पहले महिलाएं जल भरने को जाती थी, रणुबाई भी हमारी बेटी हैं या बहू है वह जल भरकर लाई है।

(23)

रुईयाँ रुईया रधूनक ल

बंसीपुर का बजार म

बंसीपुर का बजार म

रुइया रुइया रधूनक ल

बंसीपूर का बजार म

बंसीपूर का बजार म कुरकै

असी तो है चाह

लईद लईद महारी रनुबाई

को मन ललचा

पहले के गांवों में हाट बाजार होते थे तो ऐसे ही बंसीपुर किसी गांव का नाम है जिसका हाट किसी एक निश्चित दिन लगता है कुछ निश्चित गांवों के लिए। तो उसमें एक दिन पार्वती जी जाती है जहां वह कहती हैं मुझे कुर्की दिला दो अर्थात् टोकरी, मुझे बंसी दिलादो, मुझे गहना दिला दो क्यू की हम उसे बेटी के रूप में आमंत्रित कर रहे हैं और वह आयोजनकर्ता के घर आई है। आखरी दिनों में जब शादी होती है तो आयोजनकर्ता और उनकी पत्नी रणुबाई के माता पिता बन जाते हैं।

सभी गीतों में लय भी बस चार पांच प्रकार की ही है।

(24)

अरे झूला

अरे झूला

झूल गौर बाई माय

म्हारा धनियर जी रा बाग झूला

अरे झूला

झूल गौर बाई माय म्हारा धनियर जी रा बाग झूला

ओ धनियार जी रा बाग हो म्हारा ईश्वर जी रा बाग झूला झुला

झूल गौर बाई माय म्हारा धनियर जी रा बाग

एक बगल में सखियां सारी

एक बगल में रनुबाई प्यारी धनीयर

एक में रनुबाई प्यारी

एक बगल में सखियां सारी

एक में रनुबाई प्यारी धनीयर

हो सब सखियन मां झूला झूल

झूल गौर बाई माय झूला झुला

झूल गौर बाई माय म्हारा धनियर जी रा बाग

ओ धनियार जी रा बाग म्हारा ईश्वर जी रा बाग झूला

धानधुर मोर पपैया बोले

कोयल रि खो सोर धनियर

कोयल रि खो सोर

धानधुर मोर पपैया बोले

कोयल रि खो सोर धनियर

कोयल रि खो सोर

**डाल डाल और पात पात पर
मिट्टा मिट्टा बोले मोर झूला झुला
झूला झूल गौर बाई माय झूला झुला
झूल गौर बाई माय म्हारा धनियर जी रा बाग**

गणगौर के ऐसे कई सारे गीत हैं जो की खत्म तो नहीं हो रहे हैं लेकिन समय के साथ उनके स्वरूप बदलते जा रहे हैं विलुप्त होते जा रहे हैं मतलब अब कम गाए जा रहे हैं।

(25)

**पान छायो मांडवो
फूलन छाई बाड़ी हो
जहां ऊ म्हारी रणु बाई
खेलन आई हो**

यह गीत बहुत कम लोग गाते हैं। अब के समय में गीतों का स्वरूप नृत्य का स्वरूप थोड़ा बदलता जा रहा है। पहले के समय में केवल हरमोनियम, झांझ और ढोलक होती है पर आज के समय में सिंथेसाइजर तथा दस प्रकार के वाद्य यंत्र आ गए हैं इसी वजह से स्वरूप भी बदल गया। परिवर्तन संसार का नियम है फिर भी बहुत कुछ बचा भी हुआ है और जो कुछ लोग हैं जो आज के समय में नए गीत गाते हैं और पुराने भी बचा कर रखते हैं। कई मंडलियां हैं इसकी हर गांव की एक मंडली है किसी किसी गांव में दो मंडलियां हैं तो कम से कम पांच सौ मंडलियां होंगी इसकी।

(26)

सरस बन मा
सरस बन मा
आज कोयल बोली रे
सरस बन मा

कुछ युवा लोग नया करने की चाहत तो रखते हैं और कर भी रहे हैं। उसी परम्परा में यह एक नया भजन है।

(27)

कहां लाया म्हारा नाथ
उजाड़ी मा
कहां लाया म्हारा नाथ
उजाड़ी मा
उजाड़ी माहो
इन राड़ी मा

धनियर धूप लग
इन राड़ी मा
असो तंबू लगाई दो
इन राड़ी मा
धनियर भूल लग
इन राड़ी मा
असो मेवो बटैदो
इन राड़ी मा

कहां लाया म्हारा नाथ
उजाड़ी मा

मेरे नाथ इस निर्जन बन में
तुम कहां ले आए हो
मुझे तुम तो तंबू भर लगा दो मेरे नाथ,
भोग लगी है मेवा बटवादो

अब मूल जो नृत्य, ताल, लय आदि हैं वह तो वही रहेंगे लेकिन शब्द, भाव, गीत में कुछ बदलाव आए हैं ऐसे हजारों भजन हैं।

(28)

मैया पैर कपेलो झालर
देती आय हिंडोलो
बांध्यो सीस बन मा हो
मैया कौन का वन मा झालर
देती आय हिंडोलो..

यह समूह गीत के उदाहरण हैं। एक गाता है तथा कई सारे साथी उसका साथ देते हैं। बाकी साथी समूह में नृत्य करते हैं।

(29)

तुम बिन हो धनियर राजा हो

ईश्वर राजा

राजा राजा

सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

भला सूनी पड़ी मारी कुंज गलियां

तुम बिन हो धनीयर राजा

ईश्वर राजा

राजा राजा

सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

भला सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

कुंज गलियां हो

राधे की गलियां हो

मोहन की गलियां

राजा राजा

सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

झमराल्या गली स मत निकलैय्यो

झमराल्या गली स मत निकलैय्यो

वसई कुरकई की बालत मंगाओ राजा हो

बुलाओ राजा हो राजा राजा

सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

कुंज गलियां हो

राधे की गलियां हो

मोहन की गलियां

राजा राजा

किरसाण्या गली से मत निखलई

किरसाण्या गली से मत निखलई

असी गौड़ा की बालक मंगाओ राजा हो

बुलाओ राजा हो राजा राजा

सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

सुनयारा गली से मत निखलई

सुनयारा गली से मत निखलई

असी गहना की बालक मंगाओ राजा हो

बुलाओ राजा हो राजा राजा

सूनी पड़ी म्हारी कुंज गलियां

यह एक विदाई गीत है। जब चली जाती है तो बड़ा सूना लगता है। जैसे जब झमराला की गली से निकलती है जहां टूटनिया मिलती है वहां से कुर्की लाओ, सुतार की गली से निकलती है तो बाजोट मंगाओ तो जिस जिस गली से निकलती है उस उस गली का वर्णन आता है। यहां उन्हें मोहन के रूप में भी मान लिया गया तो है सब एक ही।

(30)

ओ सिंह चढी आवनाओ मां

ओ सिंह चढी आवनाओ महारानी

अर्थात की शेर पर सवार होकर माता रानी आई है। अब यहां हमने उन्हें दुर्गा मान लिया है। मूल रूप से पांचों देवियां एक ही है चाहे वह सीता हों, पार्वती हों, दुर्गा हों, काली हों, या रुक्मणी हों ।

ये प्रकृति पूजा है। हम ईश्वर को किसी भी रूप में भज सकते हैं यह आपके ऊपर है की यहां हम कन्या में ईश्वर का, माता का रूप देखते हैं।

(31)

भवर डोंगरमा झुल्यो बांध्यो म्हारी रनुबाई झूलवा जायजी

भवर डोंगरमा झुल्यो बांध्यो म्हारी रनुबाई झूलवा जायजी

झुलता झुलता तापसी आया

अरे झुलता झुलता तापसी आया

माई हम ख भीकछा देवो जी

भवर डोंगरमा झुल्यो बांध्यो म्हारी रनुबाई झूलवा जायजी

थाल भर मोती गौरबाई लाई

लिओ जोगी भीकछा जी

थाल भर मोती गौरबाई लाई

लिओ जोगी भीकछा जी

काई करुं थारा मानक मोती

अन्न की भिक्छा देवोजी

काई करुं थारा मानक मोती

अन्न की भीक्छा देवोजी

खेतन भरख्यो खल्यो नि गयो

अन्न की भीकछा नई देवाजी

खेतन भरख्यो खल्यो नि गयो

अन्न की भिक्छा नई देवाजी

इस गीत में भगवान शंकर योगी का भेष धारण करके भिक्षा लेने आए हैं। भगवान कहते हैं मुझे भिक्षा दो तो देवी मोतियों का थाल भरकर ले आती है। भगवान कहते हैं कि मैं मोतियों का थाल का क्या करूंगा मुझे अन्न की भिक्षा चाहिए। इस पर देवी कहती है कि मैं अन्न कैसे दूँ ? न इस बार खेत हुए ना कुछ खिला है। मैं आपको चैत्र वैशाख के महीने में अन्न की भिक्षा दूंगी।

फागुन फरक्यो नऽ चईत लागी गयो,
 रनु बाई जोवऽ छे वाट ।
 आसी रुड़ी ग्यारस वो माता, कब आवसे,
 टोपली को घड़णू झमराल्यो वीर भूली गयो,
 वोको लगी गयो सुपड़ा पर ध्यान ।
 आसी रंगेली ओ देवी थारी चूंदड़ी,
 फागुण फरक्यो नऽ चईत लागी गयो,
 गरबाई जोव छे वाट ।
 आसी रुड़ी ग्यारस वो माता कब आवसे
 बाजूट को घड़णुं सुतार्थी वीर भूली गयो,
 वोकी लगी गई हालऽ, पर ध्यान ।
 आसी रंगेली ओ देवी धारी चूंदड़ी,
 फागुन फरक्यो नऽ चईत लागी गयो
 सईत बाई जोवऽ छे वाट ।
 आसी रुड़ी ग्यारस वो माता कब आवसे,
 गऊड़ा को वावणु किरसाण वीर भूली गयो
 वोकी लगी गयो खेती पर ध्यान ।
 आसी रंगेली ओ देवी धारी चूंदड़ी।

फागुन का महीना खत्म होने को आया है और चैत्र मास का महिना शुरू हो गया है। रणुदेवी प्रतीक्षा कर रही है। आज सुहावनी ग्यारस आ गई है, झमराल भाई मेरे निमित्त टोकनियाँ क्यों नहीं बना रहा है? उसका ध्यान तो सुपड़े बनाने पर लगा है, वह टोकनियाँ कब बनायेगा ?

रमता की झमता ओ रनुबाई आई उब्या
 जाई उब्या झमराल्या बार।
 बहुत रंगेली ओ देवी चुन्दड़ी
 टोपली को घड़णुं झमराल्या वीरो भूलो गयो,
 वोको लगी गयो चुन्दड़ पर ध्यान,
 बहुत रंगेली ओ देवी थारी चुन्दड़ी।
 रमता की झमता ओ गऊर बाई जाई उब्या,
 जाई उब्या सुतारया बार
 बहुत रंगेली ओ देवी थारी चुन्दड़ी
 बाजुट घड़णुं सुतारयो वीर भूली गयो
 वोको लगी गयो चुन्दड़ पर ध्यान ।
 बहुत रंगेली ओ देवी थारी चुन्दड़ी
 रमता की झमता ओ सईत बाई जाई उब्या
 जाई उब्या किरसाण्या बार,
 गऊड़ा को वावणुं किरसाण्यो वीरो
 वोको लगी गयो चुन्दड़ पर ध्यान ।
 बहुत रंगेली ओ देवी थारी चुन्दड़ी
 रमता को झमता ओ रोयण बाई जाई उब्या
 जाई उब्या बामण बार
 जवारां नऽ कऽ पाणी देनु
 बामण वीरो भूली गयो
 वोको लगी गयो चुन्दड़ पर ध्यान ।
 बहुत रंगेली ओ देवी थारी चुन्दड़ ।

रणुदेवी का सौन्दर्य किसी से छिपा नहीं है। वह नवरंग चुनरी पहनकर गाँव में निकल पड़ती है तो उसका दैदीप्यमान सौन्दर्य सब को चकाचौंध कर देता है। रणुदेवी झमराल के आँगन में खड़ी है, उसका रूप सौन्दर्य देखकर बांस की टोकनी गूँथने वाला झमराल ठगा सा रह जाता है, और टोकनी गूँथना भूल जाता है। गऊरबाई सुतार के घर के आँगन में जाती है तो वह भी लकड़ी गढ़ने का काम छोड़कर उसकी तरफ देखने लगता है। उसकी सुन्दर चुनरी की प्रशंसा करता है। सईतबाई किसान के दरवाजे पर खड़ी होती है तो वह उसे जवारों के लिये गेहूँ देना भूलकर, सुधबुध गवाँकर देखता ही रहता है। रोहणबाई ब्राह्मण के द्वार पर खड़ी होती है, ब्राह्मण भाई जवारों में पानी देना भूल जाता है, रणुदेवी को रूप माधुरी नवरंग चुनरी इतनी सम्मोहक है कि प्रत्येक व्यक्ति उससे सम्मोहित हुए बगैर नहीं रह सकता।

(34)

कंकरिया रा पर्वत नीचऽ वाट,
वहां गंगा जमुना नदी ववऽ जी।

धणियर राजा तप करवा न जाय,
राणी रनुबाई पाणी संचर्या ओ।

म्हारा दादाजी री होड़ नी होय,
म्हारी माता सदा सुहागेणी हो ।

कंकरिया रा पर्वत नीचऽ वाट,
वहां गंगा जमुना नदी ववऽ जी ।

ईश्वर राजा तप करवा नऽ जाय,
राणी गऊरबाई पाणी संचरया ओ ।

म्हारा दादा जी री होड़ नी होय,
म्हारी माता सदा सुहागेणी ओ ।

कंकरिया पर्वत के पास में एक निर्मल नदी बह रही है। यहाँ पर ईश्वर राजा तपस्या करने हेतु जा रहे हैं। गऊरबाई पानी लेने जाती है, ईश्वरजी अपनी इच्छा गौरी को दर्शाते हैं। गौरी कहती है - तुम क्या तपस्या करोगे? तपस्या तो मेरे पिता हिमालय ने की है, जिसके कारण मेरी माता मैनावती या चन्द्रावली को अखण्ड सौभाग्य प्राप्त हुआ है। तुम मेरे पिता की बराबरी नहीं कर सकते हो, तुमसे तपस्या नहीं होगी।

(35)

धणियर जी नऽ रनुबाई आया
रथ सी नरबदा तीर ।

पूछऽ धणियर बोलो रनुबाई
कुण तमारा वीर ।

किनऽ घर तम मेजवान रनुबाई,
कुण कर धारी आस ।

किन घर काई सिणगार तमारो,
जां तम करोगा वास ।

नदी ओ निरमल नीर नरबदानऽ
छे यो निमाड़ देश ।

भोलाऽ मानवी वसऽ वहां पऽ नऽ,
पूजऽ बयणी रो वेश ।

जिन घर वायां जाग हमारा,
बाप माय करऽ आस ।

जिन घर सिंगाऱ्या रथ हमारा,
नवदिन पीयर वास ।

देवो रजा हम जावा पीयर जी,
वाट देखी रह्या लोग ।

करी नऽ तैयारी रथ सिंगाऱ्या,
बणाया छप्पन भोग ।

धणियर जी अर्थात्, भगवान विष्णु अपनी पत्नि रमा (रणु) के साथ नर्मदा के तट पर, रथ पर सवार होकर आते हैं। विष्णु जी पूछते हैं- हे रमा यहाँ तुम्हारा कौन सा भाई है? किसके घर तुम इतने उल्लास के साथ जा रही हो। किसके घर तुम्हारा श्रृंगार होगा, जिसके यहाँ तुम वास करोगी। रमा (रणु) कहती है- नदियों में सबसे पवित्र नदी नर्मदा, जिसका जल पावन और निर्मल है, वह निमाड़ प्रदेश में बहती है। निमाड़ प्रदेश के लोग भोले हैं। वे मुझे बहन के रूप में पूजने के लिए सदैव आतुर

रहते हैं, उन्होंने जवारे बोकर मुझे आमंत्रित किया है वे सगे माँ-बाप से ज्यादा आशा लगाये बैठे रहते हैं मेरे आगमन के लिए उन्होंने मेरे प्रतिरूप रथ श्रृंगार किया है। उन्होंने मुझे नौ दिन के लिए पीहर में रहने का आवाहन किया है। आप हमें आज्ञा दें तो हम अपने मायके जाएँ। उन्होंने मेरी प्रतीक्षा में रथ सजाए हैं और छप्पन प्रकार के भोग बनाये हैं। वे मेरी बेहद प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे धणियर राजाजी ! आप मुझे नौ दिन पीहर जाने की आज्ञा प्रदान कर दें।

(36)

**कसुमली पाग ओ मोठा भाई न बांधी लिवी,
रनुबाई को आणो लेणऽ जाय ।**

**दूर सी देख्या वीरा जी म्हारा आई गयाज,
जाजम बिछावणा धणियर जी नऽ रालई दिया,
बठो म्हारा सासरिया का लोग,**

**नख छोल्यो भात, रनुबाई नऽ रांधी लियो,
जिमो म्हारा माड़ी जायावीर ।**

केसरिया साफा बांधकर बड़े भाई रणु को लिवाने चले। चलते-चलते वे रणु के देश पहुंचे बहन ने दूर से देखकर भाई को पहचान लिया। धणियर जी ने अच्छा सा बिछौना बिछाकर आदर सत्कार के साथ साले को बिठा दिया। बहन ने भाई की मेहमानी के लिये एक-एक चावल को नाखून से छिलकर बनाया है नख छोला भात भाई के सम्मान की पराकाष्ठा है बहन ने अपनी माँ से जन्मे सगे भाई को बड़े प्रेम से भोजन कराया।

(37)

आसठ कोठड़ी वो, बासठ दरवाजा,
वहां म्हारी रनुबाई को रयवास ।

नानो सो अम्बो देवी म्हारी रस भर्यो,
वहां म्हारो रमेश भाई तमरी सेवा कर ।

उनकऽ दिजो नगरी को राज
नानो सो अम्बो देवी म्हारो रस भर्यो,
वहां म्हारो लाड़ी ववु तमरी सेवा कर

उनकऽ दिजो अखण्ड सौभाग
नानो सो अम्बो देवी म्हारो रस भर्यो,
आसठ कोठड़ी वो, बासठ दरवाजा,

वहां म्हारी गऊर बाई को रयवास,
नानो सो अम्बो देवी म्हारो रस भर्यो ।

वहा म्हारी लोकेन्द्र भाई तमरी सेवा कर,
उनकऽ दिजो नगरी को राज ।

नानो सो अम्बो देवी म्हारो रस भर्यो,
वहां म्हारी लाड़ी ववु तमरी सेवा कर ।

उनकऽ दिजो अखंड सौभाग्य,
नानो सो अम्बो देवी म्हारो रस भर्यो ।

विशाल भवन में कई कमरे हैं उनके बासठ दरवाजे हैं ऐसे विशाल भवन में रणुबाई का निवास है। वहीं पर आँगन में एक छोटा सा रसीले आम का वृक्ष है जो पके फलों से लदा है तथा उसके आम बहुत ही मीठे हैं वहीं पर रणुबाई की सेवा में अमुक भाई तत्पर है। उसकी सेवा सुश्रुषा से प्रसन्न होकर देवी ने उन्हें बड़े पद पर प्रतिष्ठित कर दिया यानी राजा बना दिया। उनकी पत्नि ने सेवा की इस हेतु उन्हें अखण्ड सौभाग्यशाली होने का वरदान मिला है देवी बहुत दयालु और करुणामयी है।

(38)

भंवर डोंगर म झूला बाँध्या हो,
म्हारी रनुबाई झुलवा जाय हो,
झूलतऽ जो झूलत तपेसरी आया,
हमकऽ ते भिक्षा देवो ओ,
थाळ भरी मोती रनुबाई नऽ लिया,
न जोगीकऽ भिक्षा दिवी ओ ।
काई करुं हो थारा पस मोती,
हम अन्न की भिक्षा लेवां ओ ।
खेत नी पाक्यो, खळो नी पाक्यो,
अन्न की भिक्षा नहीं देवां ओ ।
आवण दऽ चइत को महीनो,
जावा हमारा पियर जी ।
म्हारा पीयर म गरु चणा रे जोगी,
अन्न की भिक्षा देवां ओ ।

ऊंची नीची घाटियों में झूला बन्धा है, जहां मेरी रणु झूलने के लिए जाती है झूलते झूलते एक तपस्वी आया, बोला हमें भिक्षा दो रणु बाई ने एक थाल में मोती सजाये, और जोगी को भिक्षा देने लगी। तपस्वी ने कहा- हम इस भिक्षा को लेकर क्या करें? हमे तो आप अन्न की भिक्षा दीजिये। रनु बोली इस बार खेत में अन्न नहीं उपजा तो अन्न कहाँ से दूँ? खेत खाली हैं। हम अन्न की भिक्षा कहाँ से दें? चैत्र मास में जब हम अपने मैके जाएंगे वहाँ गेहूँ चने की फसल बहुत हुई है। मैं अपने मैके में तुम्हें अन्न की भिक्षा दूँगी।

भोळाऽ धणियर जी सुता छे सेज हो,
सोळा सौ कलियाँ रो रिजणो ।

राणी रनुबाई ढोळ छे व्हाळ,
व्हाळऽ ढोळन्ता यो बोल्या,
धणियर लाल चूड़िलो पेराओ हो,
जेमऽ चूड़िलो, जेम, राखड़ी
म्हारा हिवड़ा से हार घड़ाओ हो,
आसा रनुबाई पातळा
देवी फूलझड़ी फूल होय,
आसा माता तन्दुरी लय-लय,
भोला ईश्वर जी सुता छे सेज हो,
सोळा सौ कलियाँ ये रिजणो ।

राणी गऊर बाई ढोळऽ, छे व्हाळऽ.
व्हाळ ढोळन्ता यो बोल्या,
ईश्वर लाल चूड़िलो पेराओ हो ।

जेमऽ, चूड़िलो, जेम, राखड़ी.
म्हारा हिवड़ा रो हार घड़ाओ हो
आसा गऊर बाई पातळा
देवी फूलझड़ी फूल होय
आसा माता तन्दुरी लय लयऽ,
भोळा ब्रम्हा जी सुता सेज हो,
सोळा सौ कलियाँ रो रिजणो ।

राणी सईत बाई ढोळ छे व्हाळ व्हाळ
ढोळन्ता यो बोल्या,
ब्रम्हा लाल चूड़िलो पेराओ हो
जैम, चूड़िलो, जेमऽ, राखड़ी
म्हारा हिवड़ा से हार घड़ाओ हो,
आसा सईतबाई पातळा
देवी फूलझड़ी फूल होय
आसा माता तन्दुरी लय-लयऽ

**भोला चन्द्रमा जी सुता छे सेज हो
सोळा सौ कलियाँ रो रिजणो ।**

**राणी रोयणबाई ढोळs, छे व्हाळ,
व्हाळs ढोळन्ता यो बोल्या,
चन्द्रमा लाल चूड़िलो, पेराओ हो
जेमs, चूड़िलो जेम राखड़ी
म्हारा हिवड़ा रो हार घड़ाओ हो**

भोले धणियर जो सुख की नींद अपनी सेज पर सो रहे हैं। रनुबाई उन्हें पंखा झल रही है। सोलह सौ कलियों का बड़ा ही सुन्दर पंखा है पंखे से हवा देते देते वह मन की बात कहती है (मन की बात स्त्री हमेशा एकान्त में या सोते समय ही करती है)। हे स्वामी तुम मुझे लाल चूड़ियाँ पहना दो अथवा घड़वा दो, उसमें होरे के नग जड़े हों, मेरे माथे पर लगाने के लिए राखड़ी (एक आभूषण जो सिर पर लगाया जाता है) उसी रंग की घड़वा दो, जिस रंग की चूड़ियाँ हैं। उसी तरह मेरे गले के लिए हार भी घड़वा दो, जिस रंग की चूड़ियाँ हैं। उसी तरह मेरे गले के लिए हार भी घड़वा दो। रनुबाई ऐसे ही दुबली पतली सीनार है। रणुदेवी का रूप फूलझड़ी से झरते हुए फूलों के समान हैं। रनुबाई की सुन्दरता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, लावण्यमयी होती जा रही है, उसकी सुन्दरता निखार पर है।

(40)

रनुबाई, उतरो - उतरो ओ देवी नरबदा पार,
आई न उतरो अमुक भाई का ओटला ।

ओ देवी, बठण देवां वो, देवी लम्बी पटसाल,
जाजम केरा जोड़ बिछावणा ओ ।

जिमणो देवां वो, देवी गुड़- घीव भात,
खाँड - खीर का भोजन जिमाइसा ओ ।
गऊरबाई उतरो - उतरो ओ. देवी नरबदा पार ।
आई न उतरो अमुक भाई का ओटला ओ ।

ओ देवी बठणs देवां वो, देवी लम्बी पटसाल
जाजम केरा जोड़ बिछावणा ओ ।

जिमणो देवां ओ देवी, गुड़-घीव भात,
खाँड - खीर का भोजन जिमाइसा ओ ।

हे रनुदेवी नर्मदा ! पार करने के पश्चात तुम्हें निमाड़ के गाँव में अमुक भाई का घर मिलेगा, वहाँ तुम्हारे उतरने के लिए घर बाहर वाला ओटला सजाया गया है। अमुक भाई तुम्हारी भाव भीनी अगवानी करने के लिए तत्पर है, तुम्हारे बैठने के लिए लम्बी पटसाल बिछाई गई है। पटसाल पर सुन्दर जाजम भी बिछाई है उस पर तुम्हें सम्मानपूर्वक बिठाएंगे । सबसे पहले तुम्हारे प्रिय भोजन गुड़-घी खिलाकर तुम्हारा स्वागत करेंगे। फिर तुम्हें दूध की मीठी खीर खाने के लिए देंगे। यही क्रम गौर सईत और रोहण देवी के लिए गीत में दोहराया जाता है। अमुक भाई की जगह घर में बड़े से लगाकर छोटे बालक तक नाम जोड़कर गीत गाने की परम्परा है ।

(41)

तम तो भवरा डोंगर जाओ
रे म्हारा मान गुमानी ढोला ।
वहां से वाड़ी मऽ को चनन कटाड़ो
रे म्हारा मान गुमानी ढोला ।
जेको पालकड़ी घड़ावजो,
रे म्हारा मान गुमानी ढोला ।
जेमण रनुबाई कऽ बठाड़ो,
रे म्हारा मान गुमानी ढोला ।
म्हारी रनुबाई छे कामण गारा,
रे म्हारा मान गुमानी ढोला
रे म्हारा मान गुमानी ढोला ।
उन्नऽ चलता धणियर जी मोया ।
रे म्हारा मान गुमानी ढोला ।

हे स्वाभिमानी धणियर! तुम भँवरा डोंगर जाकर मेरे लिए चन्दन की लकड़ी कटवा कर ले आओ ।
यदि भँवरा डोंगर के जंगल में चन्दन नहीं मिले। तो अपने बगीचे का चन्दन कटवा लेना। चन्दन की
लकड़ी का सिंहासन बनवा लेना। जिसमें मानिनी रनुबाई को बिठाना। हमारी रनुबाई अत्यन्त कोमल,
शर्मिली और सुन्दर है उसने अपनी रूप माधुरी से धणियर राजा को मोहित कर लिया है।

वाड़ी मऽ रनुबाई खऽ नजर लगी

पान छायो मांडवो, फूल छाई वाड़ी,
वहां म्हारी रनुबाई खेलवा हो जाय।
खेलतऽ जो खेलतऽ दूध की आलु आई,
भरभर कंचोला माता दूध पिलायो ।

वहां म्हारी रनुबाई कऽ नजर सी लागी
हो, लीम लाओ, लोण लाओ नजर उतारो।

पान छायो मांडवो, फूल छाई वाड़ी।
वहां म्हारी गऊरबाई खेलवा हो जाय।
खेलतऽ जो खेलतऽ दूध की आलु आई,
भरभर कंचोला माता दूध पिलायो ।

वहां म्हारी गऊरबाई कऽ नजर सी लागी
हो, लीम लाओ, लोण लाओ नजर उतारो।

पान छायो मांडवी, फूल छाई वाड़ी
वहां म्हारी सईतबाई नऽ रोहणबाई खेलवा हो जाय
खेलतऽ जो खेलत दूध की आलु आई,
भर भर कंचोला माता दूध पिलायो
वहां म्हारी सईतबाई नऽ रोयणबाई कऽ नजर सी लागी
हो लीम लाओ, लोण लाओ नजर उतारो ।

बगीचे में नागरवेली पान के पत्तों से मण्डप बन गया है। सारा बगीचा फूलों से खिल उठा है। उस बगीचे में रनुबाई खेल रही हैं खेलते-खेलते उसे दूध पीने की याद आई। वह दौड़कर माँ की गोद में बैठकर छककर दूध पीने लगी। ऐसी अवस्था में उसे किसी ने टोक दिया, जिससे बालिका रनुबाई को नजर लग गई। उसने माँ का दूध पीना छोड़ दिया, वह अनमनी हो गई। माता कहती हैं - हे बहनों तुम नजर उतारने के लिए कोई उपाय करो। जल्दी से नीम की पत्तियां और नमक लाओ और रनु की नजर उतारो। गीत में आगे की पंक्तियों में रनुबाई, गऊरबाई, सईतबाई, रोहणबाई आदि नामों का उल्लेख करते हुए इसी बात की पुनरावृत्ति की गई है ।

(43)

म्हारी रनुबाई अति रूप आकला,
देवी नजर लगी ओ सगी माय की।

माता तारापुर को आलु झलु,
रनुबाई पर लीम लोण हो ।

म्हारी गऊरबाई अति रूप आकला,
देवी नजर लगी ओ सगी माय की।

माता तारापुर को आलु-झलु
गऊरबाई लीम लोण हो ।

म्हारी सईतबाई अति रूप आकला
देवी नजर ओ सगी माय की।

माता तारापुर को आलु झलु
सईतबाई पर लीम लोण हो ।

म्हारी रोयणबाई अति रूप आकला
देवी नजर लगी हो सगी माय की।

माता तारापुर को आलु-झलु
रोयणबाई पर लीम लोण हो ।

रनुबाई अति रूपवान है, उसके लावण्य को देखकर उसकी माता की ही नजर लग गई । तारापुर से नीम के पत्ते पर नमक बुलाया गया है उससे रनु बाई की नजर उतारी गई है नजर उतर जाने के बाद गऊरबाई का रूप पुनः खिल उठा है और वह फिर से वैसी ही खेलने लगी हैं।

लोक की यह धारणा है कि बच्चों को सगी मां या पिता की भी नजर उतारने का टोटका किया जाता है।

पारस पीपल रतन तलई हो
राणी रनुबाई हुआ पणियार

आगऽ जावां तो डर घणो लागऽ
पाछ रवां घड़ो नहीं डूबऽ
गोदी लेवां तो मयमुल भींज

पाछ रवां तो कन्हैयो खीजऽ
बेटी राया री गरज न कीजो

पग दई न घड़ो भर लीजो।
पारस पीपल रतन तलई हो

राणी गऊरबाई हुया पणियार
आग जावां तो डर घणो लागऽ
पाँछ रवां घड़ो नहीं डूबऽ
गोदी लेवां तो मयमुल भींजऽ
पाछ रवां तो कन्हैयो खीजऽ
बेटी राया री गरब न कीजो
पग दई न घड़ो भर लीजो।

विशाल तालाब के किनारे पारस पीपल का एक वृक्ष है। तालाब का जल निर्मल और पवित्र है उसके तट पर रानी रनुबाई जल भरने जाती हैं। तालाब का पानी गहरा है इसलिए आगे जाने पर उसे डर लगता है। गन्दा पानी वह ले जाना नहीं चाहती। अधिक गहरे में कपड़े भीगने का डर है। यदि कम पानी में घड़ा भरेंगे तो घड़ा जल में डूबेगा नहीं यदि घड़े को गोदी में लेकर पानी में जाएँ तो कीमती साड़ी भीगने का डर है। इतने में रनुबाई के पिता उधर से निकलते हैं और बेटी का संकोच देखकर कहते हैं - बेटी तुम बहुत बड़े घर की बेटी हो, अपने पर घमण्ड मत करो। आगे पाँव बढ़ाकर पानी को झकोल कर कपड़े भीगने की चिन्ता किये बगैर तुम तालाब से स्वच्छ जल भरकर घर जाओ पिता के कहने पर रनुबाई संकोच छोड़कर तालाब से जल भरकर घर चली जाती है।

(45)

रनुबाई न गऊरबाई पाणी संचर् या
उनकी लार लग्यो गणपती जाय।

शीशकरण को ओ देवी बावड़ी
धीर-धीर रे बाळा की तोय समझावगा

थारी नायल सी गोद भरावां
कुंभ कलस का देवी धारा बेड़ीला

सईतबाई न रोयणबाई पाणी संचर या
उनकी लार लग्यो गणपती जाय

शीशकरण की ओ देवी थारी वावड़ी
धीर-धीर रे बाळा की तोय समझावगा

थारी नायल सी गोद भरावां
कुंभ कलस का देवी थारा बेड़ीला

रनुबाई और गऊरबाई पानी लेने जा रही हैं। उनके पीछे गणेश जी जा रहे हैं शीशे जड़ी बावड़ी हैं, वे वहाँ पानी लेने जा रही हैं। गणेश जी को समझाती हैं कि तुम बावड़ी पर पानी लेने हमारे साथ मत चलो तुम धीरे-धीरे चलोगे और हमें देर होगी, इसलिए तुम यहीं रहो। घर में हम तुम्हें नारियल खोपरा देंगे, मेवे मिष्ठान देंगे। इस पर गणेश जी नहीं मानते हैं, वे मचल पड़ते हैं, आखिर वे नारियल खोपरा मिष्ठान देने के बाद भी रणुदेवी के साथ पानी लेने जाते हैं।

(46)

ऊँचो सो पिपल, खोपल्योँ ओ देवी
वहां बठी गाय गोठाण,
हाथ लाकड़ी पांय पावड़ी धणियर राजा
गाय चरावण जाय ।

बारा पिछोड़ी को पालणो रनुबाई
भांत लई जाय,
आवती गवरल धणियर नऽ देखी लिया,
मोड़ी लिवी कणियर काम,

एक भी झटकी दूसरी भी झटकी
तीसरीमऽ जोड्या बेऊ हाथ,
नई कलुम माय, नहीं मावसी,
हेडु तमारा घोड़ीला की लाद ।
टूटमान होजो हो, देवीअमुक भाई,
ऊ तमारो आणो लई जाय ।

एक ऊँचा सा पीपल का वृक्ष है उसमें नई-नई कोपलें फूट आई हैं। उसकी छाया में गायों का समूह बैठा है। हाथ में लकड़ी लेकर पाँव में पावड़ियाँ पहनकर घणियर राजा गाये चराने जाते हैं बारह, पिछोड़ी रंग के कपड़े के टुकड़े में भात का भोजन बांधकर नुबाई घणियर के लिए ले जा रही हैं। भात ले जाने में उसे देर हो गई। इस कारण घणियर जी को गुस्सा आ जाता है नुबाई को उन्होंने दूर से आते देखा तो आग बबूला हो गये उन्होंने गीले कनियर की एक बेंत तोड़ ली और तड़ातड़ रनु को मारने लगे। एक बेंत मारी दूसरी और तीसरी में रनु ने अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा- हम तो अजन्मे हैं, ना तो हमारी माता है, ना माता के समान मौसी है। हम जाएँ तो कहाँ जाएँ ? आप यदि मुझे निकालेंगे तो भी मैं कहाँ जा सकती हूँ? हाँ तुम्हारी घुड़साल में जहाँ घोड़ा बँधा रहता है, वहीं पड़ी रह सकती हूँ। तुम्हारे घोड़े की लीद निकालती रहूँगी। मैं आपसे अपने मायके जाने की भी याचना नहीं करती हूँ रनुबाई की विनम्रता देखकर घणियर प्रसन्न हो जाते हैं और रणुदेवी को गले लगा लेते हैं और कहते हैं- तुम अजन्मी हो तो क्या हुआ? आज से कलयुग तक तुम्हारी प्रतिष्ठा घर-घर में होगी। प्रत्येक पुरुष तुम्हारा भाई होगा ।

(47)

जव ना जवारा, केशर ना क्यारा,
जव म्हारा लयरा हो लेसे
धणियर जी घर बोया नुबाई नऽ सिच्या,
जब म्हारा लयरा हो लेसे।

जव ना जवारा, केशर ना क्यारा,
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।
ईश्वर जी घर बोया, गऊरबाई न सिच्या
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।

जव ना जवारा केशर ना क्यारा ।
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।
ब्रम्हा जी घर बोया, सईताबाई न सिच्या
जब म्हारा लयरा हो लेसे ।

जव ना जवारा केशर ना क्यारा
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।
चंद्रमा जी घर बोया रोयणबाई न सिच्या
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।

जव ना जवारा केशर ना क्यारा,
जव म्हारा लयरा हो लेसे ।

जौ टोकनियों में बोये गये हैं उनके (जवारे) अंकुर केशर की क्यारियों में दिन प्रतिदिन लहलहा रहे हैं धणियर जी के घर बोये गये हैं, रनुबाई ने उन्हें सिंचित किया है। जवारे दिन प्रतिदिन लहलहा रहे हैं। जौ के जवारे ईश्वर जी के घर बोये गये हैं। गऊरबाई ने उन्हें सिंचित किया है जवारे प्रतिदिन लहलहा रहे हैं। ब्रम्हा जी के घर जवारे बोये गये हैं । सईतबाई ने उन्हें सिंचित किया है। जवारे प्रतिदिन लहलहा रहे हैं। चन्द्रमा जी के घर जवारे बोये गये हैं। रोयणबाई ने उन्हें सिंचित किया है, जवारे प्रतिदिन लहलहा रहे हैं जवारे दिन दूने बढ़ रहे हैं ।

(48)

ऊँचा खेडुला न रे म्हारा हरिया जवारा
हरिया जवारा गऊ का जवारा,
वहां रे हरिण हरणी जव चरऽ
बाण साधो न रे म्हारा बलदेव भाई
गरस्या बाण सांधी नऽ मिरग मारजो,
हम कसा मारौँ नऽ रे म्हारी माता सावलड़ी
गोरी पातलड़ी बाई ओ शकुन का पोस्या,
जव चर ।

खेत में गेहूं बोये हैं, उनके अंकुर निकल आये हैं, हरे-हरे अंकुर लहलहा रहे हैं, उन हरे-हरे अंकुरों को खेत में घुसकर हिरण और हिरणी जोड़े से चर रहे हैं - हे मेरे भाई तुम किस प्रकार रखवाली कर रहे हो। तुम अपने धनुष पर अचूक बाण साधो और हिरण को मार दो।
हे माता ! मैं हिरण का किस तरह शिकार करूँ ? उसके साथ हिरणी भी चर रही है । हिरण को मार देने से हिरणी विरहणी होकर वन-वन भटकेगी, जिसका मुझे दोष लगेगा ।
खेत में जोड़े से हिरण और हिरणी का चरना शुभ माना जाता है। अतः उन्हें निर्विघ्न चरने दो। थोड़ा बहुत अंकुर खा लेने से कोई फसल कम नहीं हो जायेगी ।

(49)

म्हारा हरिया जवारा रे कि गऊड़ा लय लया,
भोला धणियर जी घर बोया जाग।

रनुबाई सींच लिया,
देवी सिंची न जाण्या हो कि
जव पेळा पड़िया ।

उनकी सरस पटोलई हो, सासु बाई न ढाँक लिया,
उनकी सेर मिठाई हो नणद बाई न छीन लिया,
म्हारा हरिया जवारा रे कि गऊड़ा लय लया,
भोला ईश्वर जी घर बोया जाग,
गऊर बाई सींच लिया,
देवी सींची नऽ जाण्या हो कि जव पेला पड़िया
उनकी सरस पटोलई हो, सासु बाई न ढाक लिया,
उनकी सेर मिठाई हो, नणद बाई न छीन लिया।

रनुबाई के पीहर में विधि विधान से बोये गेहूं के अंकुर (जवारे) तो हरे-हरे लहलहाते थे परन्तु धणियर के घर के जवारों को क्या हो गया ? जबकि रनुबाई ने उन्हें नौ दिनों तक प्रतिदिन सुबह-शाम पानी से सिंचित किया है लेकिन जवारे हरे होने की बजाय पीले पड़ गये हैं। रनुबाई की सासु ने रनुबाई को अच्छी सी साड़ी (पटोलई) देने का कहा था, परन्तु जवारों के हरे होने के स्थान पर पीले होने के कारण सासु से मिलने वाली साड़ी की उम्मीद धूमिल हो गई। सासुजी नाराज हो गई उन्होंने साड़ी देने से इन्कार कर दिया। नणदबाई ने उन्हें नेगस्वरूप एक किलो मिठाई देने के लिए कहा था, वह भी गल गई। रणुदेवी की सेवा में कहीं कोई कमी रह गई, इसीलिए ऐसा हुआ।

(50)

दूधऽ भरी तलावड़ी हो, मोतीयन बाँधी छे पाळ,
वहाँ भोळा धणियर धोती धोव वो
रनुबाई हुआ पणियार ।
धोवतो-धोवतो मध्यो के कुण घर जावां मेजवान

दवाणा मऽ रमेश भाई, राजवई रे,
उन घर मीठी बोलऽ नार ।
उन घर अम्बा आमली रे,
उन घर दाड़िम दाख ।
उन घर सूर्या केवड़ो रे,
रनुबाई मयकता जाय ।

'दूध ऽ भरी तलावड़ी हो मोतीयन बाँधी छे पाळ,
वहां भोळा, ईश्वर जो धोती धोवऽ वो,
गऊरबाई हुआ पणियार ।

धोवतो, धोवतो मध्यो रे कुण घर जावां मेजवान ।
दवाणा मऽ लोकेश भाई राजवई रे,
उन पर मीठी बोलऽ नार ।
उन घर अम्बा आमली रे,
उन पर दाड़िम दाख ।
उन घर सूर्या केवड़ो रे
गऊर बाई मयकता जाय ।

दूध भरी तलावड़ी हो, मोतीयन बांधी के पाळ,
वहां भोळा ब्रह्माजी धोती धोव वो
सईत बाई हुआ पणियार ।

धोवतो, धोवतो मथ्यो रे कुण घर जावां मेजवान ।
दवाणा मऽ बलदेव भाई राजवई रे,

उन घर मीठी बोलऽ नार ।
उन घर अम्बा आमली रे
उन पर दाड़िम दाख ।

उन घर सूर्या केवड़ो रे,
सईतबाई मयकता जाय ।

दूध भरी तलावड़ी हो, मोतीयन बाँधी छे पाळ,
वहाँ भोळा चन्द्रमा जी धोती धोवऽ वो
रोयणबाई हुआ पणियार ।

धोवतो, धोवतो, मध्यो रे कुण घर जावां मेजवान ।

दवाणा मऽ महेन्द्र भाई राजवई रे,

उन घर मीठी बोलऽ नार।
उन घर अम्बा आमली रे,
उन पर दाड़िम दाख।
उन घर सूर्या केवड़ो रे,
रोयणबाई मयकता जाय ।

रणुदेवीके राज्य में इतनी सुख समृद्धि है कि तालाब पानी के स्थान पर दूध से भरा हुआ है। उसकी पाल मोतियों से बनाई गई है। तालाब के किनारे ओस की बूंदे मोतियों का आभास दे रही हैं। वहीं पर धणियर राजा स्नान के निमित्त आये हैं। वे नहाकर अपनी धोती धोने की तैयारी कर रहे थे इतने में वहीं पर सजधज कर रनुबाई आ गई।

धणियर राजा पूछते हैं कि तुम श्रृंगार करके कहाँ जा रही हो? रनुबाई कहती हैं- दवाना ग्राम के मेरे मुंह बोले रमेश भाई के घर मेहमान के रूप में जा रही हूँ, धणियर जी पूछते हैं- तुम्हे वहाँ कौनसी चीजों ने आकर्षित किया है, अथवा वहाँ क्या है ? तो रनुबाई कहती हैं- मेरे भाई की पत्नि मीठी-मीठी बातें करती हैं। उनके घर आम और इमली के वृक्ष हैं। उनके घर पर अनार के भी वृक्ष हैंउनके घर महकने वाला केवड़ा लगा है। मैं उसी सुगन्ध पर मुग्ध हूँ। बस इन्हीं चीजों के आस्वाद के लिए अमुक भाई के घर जा रही हूँ। इसी प्रकार क्रमशः गऊर से ईश्वर राजा पूछते हैं। सईतबाई ब्रह्माजी से, रोयणबाई चन्द्रमा जी से उपर्युक्त कथन करती हैं।

घुंगरू छम छमा छम बाजे रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 घुंगरू छम छमा छम बाजे रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 सलकनपुर का चौक मा
 म्हारा भाई जमराल्डयो आयो
 ओन कुरकई संग मढायो रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 घुंगरू छम छमा छम बाजे रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारा भाई किरसाण्यो आयो
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारा भाई किरसाण्यो आयो
 ओन घौणा संग मलायो रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 घुंगरू छम छमा छम बाजे रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 सलकनपुर का चौक मा
 म्हारा भाई सोनार्यो आयो
 सलकनपुर का चौक मा
 म्हारा भाई सोनार्यो आयो
 ओन गहना संग मलायो रे
 संकलपुर का चौक मा
 म्हारी रनुबाई नाचे रे
 घुंगरू छम छमा छम बाजे रे
 संकलपुर का चौक मा

म्हारी रनुबाई नाचे रे
सलकनपुर का चौक मा
म्हारो भाई रंगरेजो आयो
ओन पील्डा संग मलायो रे
संकलपुर का चौक मा
म्हारी रनुबाई नाचे रे
घुंगरू छम छमा छम बाजे रे
संकलपुर का चौक मा
म्हारी रनुबाई नाचे रे

इस गीत में माता रनुबाई के उत्साह, नृत्य और उमंग को दर्शाया गया है, जिसमे वो बड़ी आनंदित होती हैं।

सेवा नी जाना मैया भक्ति नी जाना
हम बालक नादान भवानी थारी सेवा नी जाना
सेवा नी जाना मैया भक्ति नी जाना
सेवा नी जाना झमराल्या को लड़को
कुरकई घड़ दिन रात भावनी थारी सेवा नी जाना
हम बालक नादान भवानी थारी सेवा नी जाना
सेवा नी जाना मैया भक्ति नी जाना
सेवा नी जाना किरसान्या को लड़को
गहुडा बोंव दिन रात भवानी थारी सेवा नी जाना
हम बालक नादान भवानी थारी सेवा नी जाना
सेवा नी जाना मैया भक्ति नी जाना
सेवा नी जाना सुतारया को लड़को
बाजूट घड़ दिन रात भावानी थारी सेवा नी जाना
हम बालक नादान भवानी थारी सेवा नी जाना
सेवा नी जाना मैया भक्ति नी जाना
सेवा नी जाना रंगरेजा को लड़को
पिलो रंग दिन रात भवानी थारी सेवा नी जाना
हम बालक नादान भवानी थारी सेवा नी जाना
सेवा नी जाना मैया भक्ति नी जाना

इस गीत के जो भाव हैं वो माता जी से प्रार्थना करने के हैं कि हे माँ न तो हम भक्ति जानते हैं न पूजा विधि जानते हैं, हम केवल तेरे बालक हैं और हम सिर्फ तुझे मनाने और रिझाने आये हैं। हमसे जो भी गलती हो जाये तो हमे बालक समझकर माफ कर देना और हमारे भक्ति को स्वीकार करना।

(53)

आयो रे रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई को ममेरो
मोहन मूरलिया वालों रे
मोहन मूरलिया वालों रे
रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई का ममेरो
आयो रे रनु बाई का ममेरो

अमरापुर का आसपास मा
अमरापुर का आसपास मा
बाजुटकलाग्या ढीन्दारा रे
रनु बाई को ममेरो
बाजुटकलाग्या ढीन्दारा रे
रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई को ममेरो

अमरापुर का आसपास मा
अमरापुर का आसपास मा
गऊड़ाका लागया ढीन्दारा रे
रनु बाई को ममेरो
गऊड़ाका लागया ढीन्दारा रे
रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई को ममेरो

अमरापुर का आसपास मा
अमरापुर का आसपास मा
बाजुटकलाग्या ढीन्दारा रे रनु बाई का ममेरो
बाजुटकलाग्या ढीन्दारा रे रनु बाई का ममेरो
आयो रे रनु बाई का ममेरो
आयो रे रनु बाई का ममेरो
मोहन मूरलिया वालों रे

मोहन मूरलिया वालों रे
रनु बाई को ममेरो
रनु बाई को ममेरो
आयो रे रनु बाई का ममेरो
आयो रे रनु बाई का ममेरो

ये गीत गणगौर में गाया जाने वाला ममेरा गीत है।

माता चलते कुँकू का पगलेआ पड़ेआ वो
 असी बोलत पय पय फूल गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 असी बोलत पय पय फूल गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 माता चलते कुँकू का पगलेआ पड़ेआ वो
 माता कोंभाई लाव तुखा पावणी हो
 माता कोंभाई लाव तुखा पावणी हो
 असी कोंबहु लाग थारा पय गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 असी कोंबहु लाग थारा पय गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 माता चलते कुँकू का पगलेआ पड़ेआ वो
 माता बड़ाजी भाई लाव तुख पवाणी हो
 माता बड़ाजी भाई लाव तुख पवाणी हो
 असी लाड़ीबहु लाग थारा पाय गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 असी लाड़ीबहु लाग थारा पाय गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 माता काई कारण लवातुख पवणी हो
 माता काई कारण लवातुख पवणी हो
 अस काई कारण बोया थारा जाग गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 अस काई कारण बोया थारा जाग गंगेसरी मा गेंद गिरी वो
 माता अन्न धन का कारण लावातुख पवाणी हो
 माता अन्न धन का कारण लावातुख पवाणी हो
 अस बालूडा का कारण बोया थारा जाग गंगेसरी मा गेंद गिरी हो
 अस बालूडा का कारण बोया थारा जाग गंगेसरी मा गेंद गिरी हो
 माता चलते कुँकू का पगलेआ पड़ेआ वो
 माता चलते कुँकू का पगलेआ पड़ेआ वो

गणगौर मैया को जब हम पाहुणी बुलाते हैं तो प्रथम दिवस खड़ा रखते हैं और खड़ा लेने के लिए होलिका दहन वाले स्थान पर जाते तो ये गीत गाते हैं।

(55)

मैया खोलीदीजे बजर कीवाड
थारा दर्शन करन आ ही गया
मैया खोलीदीजे बजर कीवाड
थारा दर्शन करन आ ही गया
आ ही गया मोरी मैया आ ही गया
आ ही गया मोरी मैया आ ही गया
मैया खोलीदीजे बजर कीवाड
थारा दर्शन करन आ ही गया

थारा दरस ख मैया झमराणलो आयो
झमराणलो आयो मैया गुरखई लायो
असी रखी लिजो लाज असी गुरखई रखी लिजो लाज
थारा दर्शन आ ही गया
मैया खोलीदीजे बजर कीवाड
थारा दर्शन करन आ ही गया

थारा दरस को मैया कीरसाणौ आयो
थारा दरस को मैया कीरसाणौ आयो
कीरसाणौ आयो गौड़ा भी लायो
कीरसाणौ आयो गौड़ा भी लायो
असी गोड़ा की रखी लीजो लाज
थारा दर्शन करन आ ही गया
असी गोड़ा की रखी लीजो लाज
थारा दर्शन करन आ ही गया
मैया खोलीदीजो बजर कीवाड

थारा दरस ख मैया सोतारयो आयो
सोतारयो आयो मैया बाजूट संग लायो
थारा दरस ख मैया सोतारयो आयो
सोतारयो आयो मैया बाजूट संग लायो
असी बाजूट की रखी लीजो लाज
असी बाजूट की रखी लीजो लाज
थारा दर्शन करन आ ही गया

असी बाजुट की रखी लीजो लाज
थारा दर्शन करन आ ही गया
मैया खोलीदीजो बजर कीवाड

थारा दर्शन करन आ ही गया
थारा दरस ख मैया रंगरेजो आयो
थारा दर्शन करन आ ही गया
थारा दरस ख मैया रंगरेजो आयो
रंगरेजों आयो न पीलों भी लेयो
रंगरेजों आयो न पीलों भी लेयो
असी पीला की राखी लीजो लाज
ओ मैया म्हारी पीला की राखी लीजो लाज
थारा दर्शन करन आ ही गया
मैया खोलीदीजो बजर कीवाड
थारा दर्शन करन आ ही गया
मैया खोलीदीजो बजर कीवाड

माता के दर्शन के समय पर ये गीत गाते हैं।

असी हया की राखिले जो लाज म्हारी माए
देवा हो देवी थारा झालरा
असी हया की राखिले जो लाज म्हारी माए
देवा हो देवी थारा झालरा
हो झालरा हो मईया झालरा
झालरा हो मईया झालरा
हो असी आया की राखिले जो लाज म्हारी माए
देवा हो देवी थारा झालरा
हो मईया देवा हो देवी थारा झालरा
थारी सेवा म्ह मईया नारियल लाया
थारी सेवा म्ह मईया नारियल लाया
हो असी भेंट हमारी स्वीकार हो मां
देवा हो देवी थारा झालरा
हो असी भेंट हमारी स्वीकार हो मां
देवा हो देवी थारा झालरा
की असी आया की राखिले जो लाज म्हारी माये
देवा हो देवी थारा झालरा
हो मईया देवा हो देवी थारा झालरा
हम बालक थारा जस गावां
हम बालक थारा जस गावां
हम बालक मईया थारा जस गावां
हम बालक मईया थारा जस गावां
असी कनंठ पआन वीरजो म्हारी माये
असी कनंठ पआन वीरजो म्हारी माये
देवा हो देवी थारा झालरा
हो असी आया की राखिले जो लाज म्हारी माए
देवा हो देवी थारा झालरा
हो झालरा ...मईया झालरा
हो असी आया की राखिले जो लाज म्हारी माये
देवा हो देवी थारा झालरा
देवा हो देवी थारा झालरा

इस गीत में सभी भक्त माता जी से प्रार्थना करते हैं, की माँ हम तेरे द्वार पर आए हैं इतने उत्साह से

उत्सव में शामिल होने के लिए, बस हमारी लाज रखना, हमसे कोई गलती न हो जाये, कोई भूल न हो जाये और तेरी शरण मे हैं तो हमारी लाज रखना और हम जिस तरह से आये उसी तरह से खुश होकर जाएं, हमारे घर मे सुख समृद्धि रहे, ऐसा आशीर्वाद हमे देना।

(57)

चलो सखी रमुवासा चला
मैय्या जी का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
रनुबाई का मायक्या हो
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
कूरकई की अब रात
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
कूरकई की अब रात
झमराल्डया ख संग मा लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
झमराल्डया ख संग मा लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
मैय्या जी का मायक्या हो
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
गौड़ा की अब रात
किरसाण्या ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
किरसाण्या ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
मैय्या जी का मायक्या हो
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
गैणा की अब रात
सोनारया ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
सोनारया ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
रनुबाई का मायक्या हो
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
पेल्या की अब रात
रनुबाई का मन मा असी अवा हो

पेल्या की अब रात
रंगरेजा ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
रनुबाई का मायक्या हो
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
मेवा की अब रात
रनुबाई का मन मा असी अवा हो
मेवा की अब रात
भड़भूंज्या ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
भड़भूंज्या ख संग म लइन चला
रनुबाई का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
रनुबाई का मायक्या हो
चलो सखी रमुवासा चला
रनुबाई का मायक्या हो

जब पावणी आती है और गांव में सभी सखियों को और सभी लोगो को मालूम पड़ता है कि मैय्या जी का आगमन हो गया है तो सभी एक दूसरे को बोलते हैं चलो वहां दर्शन करके आते हैं, झालरे देते हैं, गीत गाते हैं और मैय्या के सेवा में हम भी आनंद उठाते हैं।

(58)

हाँ जी, धणियर आँगण कुवा खणाया,
हिवड़ा ऐतरो पाणी ।
जूड़ो छोड़ी न्हावण बठ्या,
रनुबाई ठकराणी ।
झाळऽ झपकऽ फुन्दो लपक,
बोलऽ या अमरीत वाणी ।
अमरीत वाणी का कुवा खणाया,
रेवा जी को पाणी ।

हाँ-हाँ धणियर जी के आँगण में रनुबाई के लिए विशेष रूप से कुँआ खुदवाया गया है उसमें छाती के बराबर पानी भरा है। रनुबाई नहाने की तय्यारी कर रहीं हैं रनुबाई ने अपने जूड़े को खोल दिया है उसके अनुपम लम्बे केश खुले हुए हैं, उन्होंने अपनी सुन्दर स्वर्ण की बिन्दिया उतार दी है। फिर अपनी चोटी में लगाने का फुन्दा भी उतार कर रख दिया है। उनकी बोली बड़ी मीठी है, उनकी मीठी बोली के कारण ही धणियर जी ने कुँआ खुदवाया है उसमें रेवा (नर्मदा) के सदृश्य पानी है या यह कहना उचित होगा कि नर्मदा स्वयं रनुबाई के लिए उस कुँए में प्रकट हुई हैं। हाँ जी, ईश्वर जी ने आँगण में कुँआ खुदवाया है उसमें छाती के बराबर पानी भरा है। गऊरबाई नहाने की तैयारी कर रही हैं। उन्होंने जूड़ा खोलकर अपनी केशराशि खोल ली है। उन्होंने स्वर्ण बिन्दिया उतार दी है चोटी में लगने वाला फुन्दा भी उतार दिया है। धणियरजी, ईश्वरजी, शिवजी, रनुबाई, गऊरबाई की अनुपम स्नान छवि पर मुग्ध हैं। रनुबाई का सौन्दर्य ऐसा है जैसे बिजली बादलों की ओट से चमक रही है।

डुलमुल-डुलमुल नदी वय,
 मोत्या वई वई जाय ।
 आड़द की पड़द रनुबाई न्हावऽ
 धणियर झाँकी-झाँकी जाय ।
 काई झाँको नऽ काई देखो वो
 कायन को कयों सिणगार ।
 रातो तो ओड्या नऽ रातो पेऱ्या,
 रात रा कय्या सिणगार ।
 रात रा कारण गरुड़ा बोया,
 दुनिया कर रे किलोळ ।
 डुलमुल-डुलमुल नदी वयऽ
 मोत्या वई - वई जाय ।
 आड़द की पड़द गरुरबाई न्हावऽ,
 ईश्वर झाँकी-झाँकी जाय ।
 काई झाँको नऽ काई देखो वो,
 कायन को कयों सिणगार ।
 रातो तो ओड्या नऽ रातो पेऱ्या,
 रात रा कय्या सिणगार ।
 रात रा कारण गरुड़ा बोया,
 दुनिया कर रे किलोळऽ

कल-कल करती हुई स्वच्छ नदी बह रही है। उसका पानी मोतियों के सदृश्य चमक रहा है परदा लगाकर रनुबाई स्नान कर रही हैं वहाँ पर धणियर राजा छुप कर परदे में झाँक रहे हैं। रनुबाई कहती हैं, आप झाँक कर क्या देख रहे हैं? मैं स्नान कर रही हूँ । धणियर जी कहते हैं - मैं देख रहा हूँ कि तुम स्नान के तुरन्त बाद कितनी सुन्दर लगोगी और कैसा श्रृंगार करोगी। रनु कहती है मैं स्नान के बाद आपके लिए ही श्रृंगार करूंगी। अपनी मन पसन्द लाल साड़ी पहनूंगी और उसके बाद गरम-गरम भोजन करूंगी। मेरे ही कारण जाग यानी गेहूँ के जवारे बोये गये हैं। इसी से दुनिया में सुख सौन्दर्य समृद्धि आई है इन्हीं कारणों से मैं श्रृंगार करके मायके जाऊंगी, दुनिया मेरी बाट जोह रही है।

(60)

जल जमना पाण कऽ गया ओ रनुबाई,
मुखड़ो धोयो नऽ टोकी खोई,
एक वारी की टीकी पावऽ रे हेमाजल,
आंगणा मऽ कुवा खणाऊं,
जल जमना पाणी कऽ गया ओ गरुर्बाई,
मुखड़ो धोयो नऽ टोकी खोई,
एक वारी की टीकी पावऽ रे हेमाजल,
आंगणा मऽ भाणीज परणावां,
जल जमना पाणी कऽ गया ओ रोयणबाई,
मुखड़ो धोयो नऽ टीकी खोई,
एक बारी की टीकी पावऽ रे हेमाजल
आंगणा मऽ जात जिमाड़ा ।

रनु एक दिन जमुना तट पर जल भरने गई। हाथ में घड़ा है, उसने घड़ा भरा, फिर हाथ पैर धोने लगी हाथ-मुँह धोने में उसकी सोने की हीरे जड़ी कीमती टीकी जल में गिर गई, उसके मस्तक पर टीकी नहीं थी। उसने जमना जल में टीकी को खूब ढूँढा पर टीकी नहीं मिली। वह बहुत दुःखी हुई उसे भय लगने लगा, यदि पिता हिमाचल को यह बात मालूम पड़ेगी तो वे जमुना में जल भरने और स्नान के लिए कभी आने नहीं देंगे। एक बार टीकी मिल जाए, तो मैं घर के आँगन में ही कुँआ खुदवा लूंगी, इसके लिए मैं ब्राह्मण, भानिज और पूरी जाति के लोगों को भोज देने को तैयार हूँ ।

ईश्वरजी हम चइत का मयना मऽ आया राज,
काई तमारो काम छे जी ।

चन्द्रावली हम गवरल को आणो लेणऽ आया राज,
गवरा राणी लई जावा जी।

ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश सो धमक राज,
गवरा राणी नई जावा जी।

ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश सो छुट्टो राज,
गवरा बेटी ना भेजा जी ।

चन्द्रावली हम लावां लावां नवरंग्या नाड़ा राज,
गवरा राणी लई जावा जी।

ईश्वरजी म्हारी गवरल को शीश सो उगाड़ो राज,
गवरा बेटी ना भेजा जी ।

चन्द्रावली हम लावां लावां दखणी रो चीर राज,
गवरा राणी लई जावा जी।

ईश्वरजी म्हारी गवरल का हाथ सो बांड्या राज,
गवरा बेटी ना भेजा जी ।

चन्द्रावली हम लावां लावां सोहन चूड़ीलो राज,
गवरा राणी लई जावा जी।

ईश्वर जी म्हारो गवरल छे काया दूध की पछई राज,
गवरा बेटी ना भेजा जी ।

चन्द्रावली हमनऽ खरचा छे दुबेरा सा दाम राज,
गवरा राणी लई जावा जी।

ईश्वर जी गौरी को लेने आये हैं। गौरी को न भेजने के लिए उनकी माँ अनेक बहाने करती हैं। कहती हैं - हे ईश्वर तुम्हारे यहाँ चैत्र मास में ऐसा कौनसा काम आ पड़ा है। जो तुम गौरी को लेने आ गये। तब ईश्वर कहते हैं - चन्द्रावली जी हम गौरी को लेने आये हैं, और गौरी को लेकर जायेंगे। चन्द्रावली कहती हैं - ईश्वर जी मेरी गौरी के सिर में दर्द है उसका सिर दर्द बन्द हो जाए तब मैं गौरी को भेज दूंगी। ईश्वर कहते हैं - मैं गौरी को सोंठ औषधि खिला दूंगा और सिर दर्द को ठीक कर लूँगा आप चिन्ता मत करो। मैं गौरी को लेकर ही जाऊँगा। चन्द्रावली कहती हैं- ईश्वर मेरी गौरी के केश खुले हैं। माथा गूँथने में देर है मैं गौरी को कैसे भेज दूँ? ईश्वर कहते हैं - मैं नवरंग के नाड़े लाया हूँ। आप गौरी का शीश गूँथ दीजिए। मैं गौरी को लेकर ही जाऊँगा। चन्द्रावली कहती है - ईश्वर मेरी गौरी के पहनने लायक अभी वस्त्र तैयार नहीं हैं, मैं गौरी को कैसे भेज दूँ। ईश्वर कहते हैं- मैं दक्षिण से बहुत बढ़िया और कीमती साड़ी लाया हूँ। आप गौरी को विदाई में वही साड़ी पहनाकर भेज दीजिए। चन्द्रावली कहती है- ईश्वर मेरी गौरी के हाथों में चूड़ियाँ नहीं हैं, मैं गौरी को खाली हाथ कैसे विदा कर दूँ। ईश्वर कहते हैं- अरे आप चूड़ियों की चिन्ता मत करो। मैं सोने की चूड़ियाँ कँगन लाया हूँ, उन्हें पहनाकर गौरी को विदा कर दीजिए। अन्त में कुंवरराज के तर्कों से हारकर अन्तिम बहाना करते हुए चन्द्रावली कहती हैं- ईश्वर मैंने गौरी का लालन-पालन कच्चा दूध पिला-पिलाकर किया है। उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला है। मैं गौरी को कैसे भेज दूँ ? ईश्वर गुस्से में कहते हैं- मैंने विवाह किया है, उसमें मेरा दुहरा दाम खर्च हुआ है। अब कुछ भी हो मैं गौरी को लेकर ही जाऊँगा। इसके आगे सासुजी की सारी बहाने बाजी घरी की घरी रह गई। आखिर गौरी को तैयार करके ईश्वर के साथ भेजना ही पड़ा। "कच्चा दूध" शब्द के प्रयोग से गौरी की किशोर वय की प्रतीति होती है। माँ का दर्द यह है कि कच्ची उम्र वाली लड़की को वह अभी ससुराल नहीं भेजना चाहती, इसीलिए इतने तर्क करती है, लेकिन दामाद के तर्कों के आगे सास निहत्था हो जाती है और हठीले दामाद के साथ गौरी को विदा करना पड़ता है किशोरवय के नव विवाहितों की मानसिकता का सुन्दर वर्णन इसमें मिलता है।

कटदुलरी मऽ हाट भर्या रस मेऊलो,
भोला धणियर मेवो सो लाया रस मेऊलो ।
राणी रनुबाई री गोद भर्या रस मेऊलो,
राणी रनुबाई नऽ वाटी नऽ जाणिया रस मेऊलो ।
बताशा न करिया तमाशा रस मेऊलो,
सिंगोड़ा नऽ दाँत लड़ाया रस मेऊलो ।
जलेबी लगऽ नऽ पियारी रस मेऊलो,
ईनो मेहन्दी नऽ हाथ रचाया मेऊलो ।
इना तमोल नऽ रात जगाई रस मेऊलो,
कटदुलरी मऽ हाट भरया रस मेऊलो ।
भोला ईश्वरजी मेवो सो लाया रस मेऊलो,
राणी गऊरबाई नऽ वाटी नऽ जाणिया रस मेऊलो ।
बतासा न करिया तमाशा रस मेऊलो,
सिंगोड़ा नऽ दाँव लड़ाया रस मेऊलो ।
जलेबी लग नऽ पियारी रस मेऊलो,
ईनी मेहन्दी नऽ रात जगाई रस मेऊलो,
इना तमोल नऽ रात जगाई रस मेऊलो ।

रणुदेवी की गोद भरने की रस्म हो गई है। घर में खुशहाली का वातावरण है। गर्भवती रणुदेवी का हर कोई पूरी तरह से ख्याल रखता है। हर कोई उसकी इच्छा पूर्ति में लगा है। लोक में विश्वास है कि गर्भवती की हर इच्छा पूर्ति करनी चाहिए इससे शिशु स्वस्थ और सुन्दर पैदा होता है। इस काम में धणियर जी, ईश्वर जी, ब्रम्हाजी, चन्द्रमाजी कैसे पीछे रह सकते हैं?

कटलरी गाँव में हाट लगा है। उसमें सब तरह की खाने की रसीली वस्तुएँ बिक्री के लिए आई हैं। धणियरजी हाट से रनु के लिए तरह-तहर के मेवे और खाने की वस्तुएँ लाये हैं। इतनी सारी इकट्ठी वस्तुओं ने समस्या पैदा कर दी है। रनु ने घर में आई वस्तुओं को पहले सबको बाँट दिया है। सबको चखाने के बाद खुद ने उन वस्तुओं का स्वाद लिया है। बताशा ने अजीब तमाशा कर दिया। बताशे मुँह में डालते ही घुल जाते हैं। उसका स्वाद बहुत मधुर है। सिंघाड़े दाँत से काटकर खाया जा रहा है। बताशे के बाद सिंघाड़े मुँह में अनूठा रस पैदा कर रहे हैं। सिंघाड़े के बाद जलेबी खाना और भी जायकेदार हो गया है। मुँह में जलेबी का रस जैसे बादलों से होने वाली वर्षा कर रहा है। ऊपर से धणियरजी द्वारा लायी गयी मेहन्दी हथेली पर रचाई तो जलेबी का रस और दुगना बढ़ गया। मेहन्दी रचने और तमोल के गीत गाने में आँखों आँखों में पूरी रात निकल गई, रतजगा हो गया। सुबह कब हो गई कुछ पता ही नहीं चला।

पस भरी चोखा नऽ मुठी भर मूंग की दाल,
 तोरनुबाई वीरा जिमाड़िया हो,
 जिमऽ जिमाड़तऽ हुई ओ बड़ी वार,
 तो एतरा मऽ आई पड़ोसणी ओ,
 बईण ओ पड़ोसेण तू म्हारी धरम की बईण,
 तो जाई नऽ सासु कऽ मत कयजे,
 बईण म्हारी जीभ आग हो जंजाळ
 तो जाई नऽ सासु कऽ कई दियो ।

रणु को लेने उनका भाई बड़ी दूर से आया है। रणु ने सोचा कि मेरा भाई भूखा होगा, अतः मैं जल्दी से उसे कुछ खिला दूँ। उसने खिचड़ी बनाने की सोची। अँजुली भर चावल तथा एक मुट्टी मूंग की दाल ली और उसे चूल्हे पर चढ़ा दिया। खिचड़ी बनने में थोड़ी देर हो गई। इतने में एक चुगलखोर पड़ोसन आ गई। पड़ोसन ने देख लिया, रणु अपने भाई के लिए खिचड़ी बना रही है। रणु ने कहा बहन तू मेरी सास को जाकर मत कहना। वरना वह नाराज़ होगी। पड़ोसन ने कहा- मेरी जीभ आग का जंजाल है। मैं तुम्हारी सास को अभी जाकर कहती हूँ। रणु उस चुगलखोर पड़ोसन के कृत्य पर अफ़सोस करती रही लेकिन रणुबाई की सास ने उसे एक भी शब्द नहीं कहा।

आज म्हारी छोटी सी गणगौर,
आई रथ मान लेवो जी गणगौर ।
बिन्दी पेर लेवो जी गणगौर,
आई रथ मान लेवोजी गणगौर ।
आज म्हारी टीका की बड़ी मौज,
आई रथ मान लेवो जी गणगौर ।
साकळई पेर लेवोजी गणगौर,
आई रथ मान लेवोजी गणगौर ।
आज म्हारी कालर की बड़ी मौज,
आई रथ मान लेवोजी गणगौर ।
बावळ्या पेर लेवो जी गणगौर,
आई रथ मान लेवोजी गणगौर ।
आज म्हारी कंगन की बड़ी मौज,
आई रथ मान लेवोजो गणगौर ।

आज मेरी छोटी-सी सबकी प्रिय गणगौर ससुराल के लिए जा रही हैं। सब लोग व्याकुल हैं। एक दिन और रणु रुक जाती तो सबके मनोरथ पूरे हो जाते। पर क्या करें, बेटी को एक दिन विदा करना ही पड़ता है। अब अगली बार मान मनौती से हम रणु धणियर का रथ रोक लेंगे। रणु सबकी मनोकामना पूरी करने वाली है।

सब लोग आग्रह कर रहे हैं- हे रणु, तुम माथे पर बिन्दी लगा लो। तुम्हें ससुराल जाना तो है ही। बिन्दी के साथ टीका भी लग जाय तो पूर्ण श्रृंगार हो जायेगा। कानों में झुमके पहन लो, फिर लटकन की तो बात ही क्या? गले में साँकली पहन लो ऊपर से तागली बड़ी सुन्दर लगेगी। बाँहों में बावळ्या पहन लो

फिर हाथ के कंगन की सुन्दरता का क्या कहना ? इस तरह रणु के गहनों का नखशिख वर्णन चलता है।

रथ बौड़ाना - रथ बौड़ाने का अर्थ एक दिन के लिए और गणगौर के रथों को रोकना। कोई एक, कोई दो या तीन रथ घर में रखता हैं। मान मनौती करने वाले ऐसा करते हैं। गाँव वालों को सामूहिक भोज दिया जाता है और उस शाम को गाजे-बाजे के साथ रथों को नदी या कुँए के किनारे ले जाते हैं और जवारे ठण्डे कर देते हैं।

रनुबाई का आँगणा मऽ लिमाड़ो वो,

वहाँ बठी कपला गाय वो सहेलड़ी,

चलो सखी देखण जावां

चारो नी खाय, माता पाणी नी पे वो,

वो दे सवा घड़ो दूध ।

उना दूध वारी म्हारी रनुबाई न्हाव ओ,

मळी मळी धोवऽ लम्बा केश ओ

सहेलड़ी चलो सखी देखण जावां ।

गऊरबाई का आँगणाम, लिमड़ो वो

वहाँ बठी कपला गाय वो सहेली,

चलो सखी देखण जावां ।

चारो नी खाय माता पाणी नी पे वो,

वो दे सवा घड़ो दूध ।

उना दूध वारी म्हारी गऊरबाई न्हावऽ वो,

मळी-मळी धोवऽ, लम्बा केश ओ,

सहेलड़ी चलो सखी देखण जावां ।

सईत बाई का आंगणामऽ लिमड़ो वो,

वहाँ बठी कपला गाय वो सहेली,

चलो सखी देखण जावां ।

चारो नी खाय माता, पाणी नी पे वो,

वो दे सवा घड़ा दूध ।

उना दूध वारी म्हारी सईत बाई न्हावऽ वो,

मळी-मळी धोवऽ लम्बा केश ओ
सहेलड़ी चलो सखी देखण जावां ।
रोयणबाई का आंगणामऽ लिमड़ो,
वहां बठी कपला गाय ओ सहेली,
चलो सखी देखण जावां ।
चारो नी खाय माता, पाणी नी पे वो,
वो दे सवा घड़ो दूध ।
उना दूध वारी म्हारी रोयण बाई न्हाव ओ,
मळी मळी धोवऽ लम्बा केश ओ,
सहेलड़ी चलो सखी देखण जावां ।

रणुबाई के आँगन में नीम का वृक्ष है। आँगन में नीम का वृक्ष होना परिवार के स्वास्थ्य के लिए शुभ माना जाता है। उस वृक्ष के नीचे कपिला गाय यानी देवताओं की गाय कामधेनु बैठी है। चलो सखी उसे देखने चलें। एक अजूबा है वहाँ, वह गाय न घास खाती है और न पानी पीती है। फिर भी सवा घड़ा यानी बहुत दूध देती है। यहाँ तक कि उस दूध से रणु स्नान करती हैं और अपने लम्बे-लम्बे बालों को उसी से धोती हैं। चलो हम उस अचम्भे को देखने चलें।

आतल पीतल की आरती रनुबाई जाई उब्या झमराल्या बार।

झमराल्यो दिसे माता टोपली ओ,

झमरालेण लागऽ छे पाँय ।

पाँय पड़ण दिजो मुखड़ो देखणऽ दिजो,

दरसण की बलिहारी ।

आतल पीतल की आरती गऊरबाई

जाई उब्या सुतार्या बार।

सुतार्यो दिसे माता बाजूट ओ,

सुतारेण लागऽ छे पाँय ।

पाँय पड़ण दिजो, मुखड़ो देखणऽ दिजो,

दरसण की बलिहारी ।

आतल-पातल की आरती सईतबाई

जाई उब्या किरसाण्या बार।

किरसाण्यो दिसे माता गऊड़ा ओ,

किरसाणेण लागऽ छे पाँय ।

पाँय पड़ण, दिजो, मुखड़ो देखणऽ दिजो,

दरसण की बलिहारी ।

आतल-पीतल की आरती रोयणबाई,

जाई उब्या बामण बार।

बामण दिसे माता जवारा ओ,

बामणेण लागऽ छे पाँय ।

पाँय पड़णऽ, दिजो मुखड़ो देखणऽ दिजो,

दरसण की बलिहारी ।

रणुदेवी पूजा की सामग्री इकट्ठी करने पीतल की आरती लेकर स्वयं सम्बंधित व्यक्तियों के यहाँ पहुँचती हैं। पारम्परिक रूप से पूजा की सामग्री बनाने वाली चाहे नीची जाति के हो या ऊँची जाति के रणुबाई समान रूप से सबके घर पहुँचती हैं। सबसे पहले झमराल के दरवाजे पर पहुँचती हैं। झमराल चकित है। वह बाँस की टोकनियाँ देता है और उसकी पत्नी रणुदेवी के चरणस्पर्श कर उसके मुख मण्डल के दर्शन कर लेती है। वह कहती है- हे माता, हमें तुम्हारे चरणस्पर्श करने दो। तुम्हारे सुन्दर मुख का जी भर के दर्शन करने दो। आज हमें तुम मना मत करना। गऊर देवी के नाम से सुतार बैठने के लिए कलात्मक बाजूट प्रदान करता है और उसकी पत्नी पाँव छूकर दर्शन करती है। सईतबाई के नाम से किसान जवारों के लिए देते हैं और उनकी घरवालियां चरण छूकर मुख मण्डल की शोभा के दर्शन करती हैं। इसी प्रकार रोहण बाई के नाम से ब्राह्मण गेहूँ को जवारों में परिणत करता है और उसकी पत्नी ब्राह्मणी चरण स्पर्श कर मनोवांछित आशीर्वाद प्राप्त कर लेती है। रणुदेवीके दर्शन से सब कामनाएँ पूरी होती हैं, इसलिए उसके दर्शन की बलिहारी है।

बाड़ी मऽ मोगरो मयक सुरंगलो,
 वहाँ घणियर राजा पाग बांध, सुरंगलो,
 म्हारी रनुबाई हिरी-फिरी देखऽ सुरंगलो,
 तम भला बण्या केशरिया सुरंगलो,
 तम भला बण्या पातलिया सुरंगलो,
 बाड़ी मऽ मोगरो मयकऽ सुरंगलो,
 वहाँ ईश्वर राजा पाग बाँधऽ सुरंगलो,
 म्हारी गऊरबाई हिरी-फिरी देखऽ सुरंगलो,
 तम भला बण्या पातलिया सुरंगलो,
 वहाँ ब्रम्हा राजा पाग बाँधऽ सुरंगलो,
 तम भला बण्या केशरिया सुरंगलो,
 तम भला बण्या पातलिया सुरंगलो,
 बाड़ी मऽ मोगरो मयकऽ सुरंगलो,
 वहाँ चन्द्रमा राजा पाग बाँधऽ सुरंगलो,
 म्हारी रोयणबाई हिरी-फिरी देखऽ सुरंगलो,
 तम भला बण्या केशरिया सुरंगलो,
 तम भला बण्या पातलिया सुरंगलो
 बाड़ी मऽ मोगरो मयकऽ सुरंगलो ।

बगीचे में सुरंगलो मोगरा खिल गया है। सुन्दर मोगरा चारों ओर महक रहा है। वहीं सुन्दर प्राणप्रिय धणियर राजा माथे पर पगड़ी बाँध रहे हैं। इधर रणुबाई धणियर राजा को पगड़ी बाँधते हुए बार-बार देख रही हैं। उनके शीश पर केशरिया पगड़ी सुन्दर लग रही है, उन पर केशरिया रंग खिल रहा है।

बगीचे में मोगरा खिल गया है। सुन्दर मोगरा चारों ओर महक रहा है। वहाँ ईश्वर राजा पगड़ी बाँध रहे हैं। गऊरबाई उन्हें बार-बार देख रही हैं, उनके शीश पर केशरिया रंग खूब फब रहा है। स्वामी पर केशरिया रंग खिल उठा है।

इसी प्रकार ब्रम्हा और सईतबाई, चन्द्रमा और रोयणबाई का नाम जोड़कर गीत गाया जाता है, जिसकी अर्थव्याप्ति वही होती है जो ऊपर लिखी गई है। केवल एक नाम बदलकर लोकगीतों का दोहराया जाना उनकी विशेषता प्रकट करता है।

"सुरंगळो" शब्द विशिष्ट है जिसका शाब्दिक अर्थ रंगीळा, छैल छबीला सभी रंग वाला, सुन्दर मीठे स्वर वाला आदि है।

चालो गजानन जोशी रे जावाँ, आछा-आछा लगन लिखावाँ गजानन

कोठारी गादी पे नोबत वाजे।

नोबत वाजे इन्दरगड़ गाजे, झिणीं-झिणीं झाँझर बाजे गजानन

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो गजानन सोनी रे जावाँ, आछा- आछा गेहणा मोलावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो गजानन बजाजी रे जावाँ, आछी-आछी चुंदड़ी मोलावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो गजानन गंधीड़ा रे जावाँ, आछी-आछी पीठी मोलावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो गजानन सिरोल्या रे जावा, आछा-आछा चूड़ा मोलावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो गजानन तमोल्या रे जावाँ, आछा-आछा पान मोलावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो गजानन मोचिड़ा रे जावाँ, आछी- आछी मोजड्याँ मोलावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

चालो रे गजानन साजन रे जावाँ, आछी-आछी वरात लेजावाँ गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

नोबत वाजे इन्दरगड़ गाजे, झिणीं-झिणीं झाँझर बाजे गजानन,

कोठारी गादी पे नोबत वाजे ॥

गीत में सर्वप्रथम गणेशजी की वन्दना करते हैं। गणेशजी से आग्रह करते हैं कि पधारो प्रभू और हम, जोशी के घर जाएँ, अच्छे लगन लिखवायें। महादेव जी और गौरी के ब्याह में कोठारी की गादी पर नोबत बज रही है। नोबत की आवाज़ से राजा इन्द्र का किला गूँज रहा है, मधुर-मधुर झाँझ बज रही है। आगे कहा है कि सुनार के यहाँ जाएँ और अच्छे-अच्छे गहने खरीदें। महाजन के यहाँ जाएँ और अच्छी-अच्छी चुनरियाँ खरीदें। गंधी के यहाँ जाएँ, अच्छी पीठ खरीदें। मनिहार के यहाँ जाएँ, अच्छे चूड़े खरीदें। तम्बोली के यहाँ से अच्छे पान खरीदें। मोची के यहाँ से मोजड़ियाँ खरीदें। सम्बन्धी के यहाँ जाएँ, अच्छी बारात ले जाएँ।

देवी में थाने पूछँ रणुबाई, थाने केरा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

में तो होना रा फूल चढ़ाविया, म्हाने होळमारा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

देवी में थाने पूछँ म्हारी सायतबाई, थाने केरा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

में तो रूपा रा फूल चढ़ाविया, म्हाने रूपाळा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

देवी म्हू थाने पूछँ म्हारी रोयणबाई, थाने केरा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

में तो आकड्या रा फूल चढ़ाविया, म्हाने आकरा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

देवी में थाने पूछँ म्हारी गउरबाई, थाने केरा मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

में तो अमल्या रा फूल चढ़ाविया, म्हाने अमल्या मळ्या भरतार,

महादेवजी रो फेटो गुलाब रो ॥

गौरी जी से पूछा - हे देवी! आपसे हम पूछ रहे हैं कि आपको स्वामी कैसे मिले? महादेवजी का साफा गुलाब का है। देवी कहती हैं कि मैंने सोने के फूल चढ़ाये, मुझे सोने जैसे मिले स्वामी। देवी सायतबाई! मैं आपसे पूछ रही हूँ कि आपको स्वामी कैसे मिले? उत्तर मिला- मैंने चाँदी के फूल चढ़ाये, मुझे सुन्दर स्वामी मिले। मैंने अर्क (अकाव) के फूल चढ़ाये, मुझे तीखे स्वामी मिले। देवी गउरबाई से पूछा, कि आपको स्वामी कैसे मिले? उत्तर मिला कि मैंने अफीम के फूल चढ़ाये, मुझे अफीमची स्वामी मिले।

ताँबा जो वरण्यो तळाव, अमरत आँबो मोरियो रे ।

आंबोला हेटे वाट, जठे गउरबाई हँसे रह्या रे।

कानूडो पूछे वात, आज गउरबाई क्यो हँसे रे।

सासरो मेळ्यो वीरा दूर, पीयर नेडो अइरयो रे।

बाबा मारो आणों लई जाय, माता ने चुरमो सँजोई मेल्यो रे ।

वीरा म्हारो आणों लई जाय, भावज चुनडी सँजोई मेली रे।

काका म्हारो आणों लई जाय, काक्यो ने चुडलो सँजोई मेल्यो रे।

मामा म्हारा आणों लई जाय, माम्याँ ने मोजइयाँ सँजोई मेली रे।

ताँबा जो वरण्यो तळाव, अमरत आँबो मोरियो रे ।

आँबोला हेटे वाट, जठे गउरबाई अनमना रे।

कानूडो पूछे वात, आज गउरबाई अनमना रे।

पीयर मेल्यो वीरा दूर, सासरो नेडो अइरयो रे।

सासरो म्हारो आणों लई जाय, सासू ने दळनु सँजोई मेल्यो रे ।

जेठ म्हारो आणों लई जाय, जेठाणी ने रसोडो सँजोई मेल्यो रे ।

देवर म्हारो आणों लई जाय, देराणी ने गोबर सँजोई मेल्यो रे ।

नणदोइ म्हारो आणों लई जाय, नणदल ने बेडलो सँजोई मेल्यो रे ।

ताँबा जो वरण्यो तळाव, अमरत आँबो मोरियो रे ॥

गीत में कहा गया है कि ताँबे के रंग का तालाब है, अमृत आम में मोर आ गये। आम के नीचे रास्ता है, वहाँ पर गउरा (गौरीजी) हँस रही हैं। कृष्ण बात पूछ रहे हैं, आज गौरीजी क्यो हँस रही हैं? गौरीजी ससुराल को बहुत पीछे छोड़कर आ गई, मायका पास में आ रहा है, इसलिए हँस रही हैं। मेरे बाबा मेरा आणा ले जा रहे हैं, मेरी माँ ने थाल में चूरमा सजाकर रखा है। मेरा भाई मेरा आणा ले जा रहा

है, भाभी ने मेरे लिए चूनर सजाकर रखी है। मेरा काका मेरा आणा ले जा रहे हैं, काकियों ने मेरे लिए चूड़ा सजाकर रखा है। मेरे मामा मेरा आणा ले जा रहे हैं, मामियों ने मेरे लिए मोजड़ियाँ सजाकर रखी हैं। ताँबे के रंग का तालाब है, अमृत आम में मौर आ गये हैं। आम के नीचे रास्ता है, वहाँ गउरबाई उदास है। कान्हा बात पूछ रहे हैं कि आज गउरबाई उदास क्यों हैं? उत्तर मिला- मायका दूर रह गया है, भाई का ससुराल पास में आ रहा है। मेरे ससुर मेरा आणा ले जा रहे हैं, सास ने मेरे लिए घट्टी में पीसने के लिए अनाज तैयार रखा है। जाकर अनाज पीसना पड़ेगा। इसी प्रकार जेठ आणा ले जा रहा है, जेठाणी ने भोजन बनाने की सामग्री तैयार करके रखी है, जाकर भोजन बनाना पड़ेगा। देवर आणा ले जा रहा है, देराणी ने मेरे लिए पशुशाला में गोबर रखा है, वह फेंकना पड़ेगा ननद ने बेड़ा तैयार कर रखा है, जाकर पानी लाना पड़ेगा। इससे गउरबाई उदास हैं।

बारे जो मणरो बाजरो, तेरे मण री जुवार ।
अण नगरी में कोई राजवी, म्हारी गणगोर हणगारो ।
अण नगरी में दीवाणजी राजवी, म्हारी गणगोर परणावो ।
आठ टका नऊ रोकड़ा, म्हारी गणगोर परणावो ।
अण नगरी में भानु राजवी, म्हारी गणगोर हणगारो ।
आठ टका नऊ रोकड़ा, म्हारी गणगोर परणावो ।
बारे जो मण को बाजरो, तेरे मण री जुवार ।
अणनगरी में कोई राजवी, म्हारी गणगोर हणगारो ।

बारह मन का बाजरा, तेरह मन की ज्वार, इस नगरी में कोई कलाकार है, वह मेरी गणगौर का श्रृंगार करे? इस नगरी में दीवानजी कलाकार हैं, मेरी गणगौर का श्रृंगार कर देंगे। आठ टका नऊ रोकड़ा देंगे, मेरी गणगौर का ब्याह करो। इस नगरी में भानु कलाकार है, मेरी गणगौर का श्रृंगार करो। आठ टका नऊ रोकड़ा देंगे, मेरी गणगौर का ब्याह करो।

कस्तूरी महँके ओ, जान आई म्हारी गवरां री ।
हगळा जान्या रे फेटाओ, ईस्वर जटा वळाइया ।
हगळा जान्या रे काने साकल्या, ईस्वर कुण्डल रळाविया ।
सब जान्या रे बागा ओ, ईस्वर खाल रळाविया ।
सब जान्या रे कंठ्यां ओ, ईस्वर नाग रळाविया ।
सब जान्या रे पेरण मोजड्याँ, ईस्वर खड़ाउ रळाविया ।
कस्तूरी महके ओ, जान आई म्हारी गवरां री ।
सब जान्या अन्तर लगइरया, ईस्वर भभूती रळाविया ।

कस्तूरी महक रही है, मेरी गवरा की बारात आयी है। सभी बराती साफे बाँधे हुए हैं। ईश्वरजी की जटा लटक रही है। सभी बरातियों के कानों में सोने की साँकल्या है। ईश्वरजी कुण्डल लटकाये हुए हैं। सभी बरातियों ने सुन्दर वस्त्र (वागे) पहन रखे हैं। ईश्वरजी मृगछाला लपेटे हुए हैं। सभी बरातियों के गले में सोने की कण्ठियाँ हैं। ईश्वरजी ने गले में साँप लपेट रखे हैं। सभी बराती मोजड़ियाँ पहने हुए हैं। ईश्वरजी ने लकड़ी की खड़ाऊँ पहन रखी है।

दीवाण जी रे पाटण राणि हेत घणों, सायब म्हाने नगरी बताड़ो,

नगरी देखण रो कोड़ घणों ॥

अणनगरी में गउरबई रो ब्याव के, हरसी परण्या रूप घणों ।

होम्या-होम्या लीलोड़ा नारेळ के, जऊ तल घी होमियाँ ।

धनु भइ ने सांता वउ रो हेत घणों, सायब म्हाने नगरी वताड़ो,

नगरी देखण रो कोड़ घणों ॥

अण नगरी में इसवर रो ब्याव के, इसवर परण्या रूप घणों ।

होम्या-होम्या लीलोड़ा नारेळ के, जऊ तली घी होमियाँ ।

दीवानजी और पाटण रानी में बहुत प्रेम है। रानी कहती हैं- साहेब! मुझे नगरी दिखाओ, मुझे नगरी देखने का शौक है। दीवानजी नगरी दिखाने ले गये। नगरी में देखा कि गउरबाई का ब्याह हो रहा है, प्रसन्नता से परिणय- सूत्र में बँधे वे बहुत सुन्दर लग रहे हैं। ब्याह के हवन में हरे नारियल, जौ और तिल्ली घी होंगे। जिसके यहाँ गीत गाते हैं, उसके परिवार के सदस्य का नाम लेकर कहा गया है कि- धनुभाई और शान्ता बहू में बहुत प्रेम है। साहेब! मुझे नगरी दिखाओ, मुझे नगरी देखने का बहुत शौक है। इस नगरी में ईश्वरजी का ब्याह है। ईश्वरजी का ब्याह हुआ, जो बहुत सुन्दर हैं। हवन में हरे नारियल, जौ, तिल्ली और घी होंगे।

देवी खळहळ-खळहळ नंदी वये, म्हारी रणुबाई धोवे चीर,

पीतामर उलट हुई रयो ॥

देवी धोवता-धोवता मतो मत्यो, ईश्वर कणधर रेवाँ रात,

पीतामर उलट हुई रयो ॥

देवी बिलाड़ा रा दीवाण राजवी, देवी जण घर मिठि बोली नार,

पीतामर उलट हुई रयो ॥

देवी दिवाणजी रळ्या बइ रे बेसणा,

पीतामर उलट हुई रयो ॥

देवी पाटण राणी लागे लुळ पाँय, देवी पाटण राणिने

दीजो डीकरो, राठोड़ा री वदजो वेल,

पीतामर उलट हुई रयो ॥

देवी बसुबाई लागे लुळ पाँय, बसुवउ ने दीजो डोकरी,

गेहलोतांरी वदजो वेल,

पीतामर उलट हुई रयो ।

महादेवजी और गौराजी जा रहे थे, रास्ते में कल-कल करती हुई नदी बह रही थी। मेरी रणुबाई वस्त्र धोने लगी, महादेवजी का पीताम्बर उसमें उलट रहा। देवी ने वस्त्र धोते हुए आपस में विचार-विमर्श किया। महादेवजी ने मत व्यक्त किया, कि देवी बिलाड़ा के दीवान राजा के समान हैं, उस घर में मधुर वाणी बोलने वाली नारी है। देवी! दीवानजी ने बैठने के लिए आसन लगाये (दोनों वहाँ पहुँचे)। दीवान जी की पत्नी पाटण रानी झुक-झुककर चरण वन्दना कर रही हैं। महादेवजी! पाटण रानी को पुत्र दो, जिससे राठोड़ों की वंश-वृद्धि हो। देवी बसुबाई झुक-झुककर चरण वन्दना कर रही हैं। बसुबाई को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दो जिससे गेहलोतों की वंश-वृद्धि हो। जिसके घर गीत गाते हैं, दीवानजी के नाम के आगे उस घर के स्त्री-पुरुष के बारे में गीत में वर्णन होता है। प्रत्येक घर की दो-चार महिलाएँ हर घर में गीत गाती हुई पूरे मोहल्ले में मंगलगीत गाती हैं।

(75)

जउ रा जवारा ने कंकूरा क्यारा,
जउ म्हारा लेहरा ले रया ॥

दीवाणजी रा वाया, पाटण राणी सींच्या,
जउ म्हारा लेहरा ले रया ॥

जउ रा जवारा ने केसर रा क्यारा,
जउ म्हारा लेहरा ले रया ॥

मधुभाई रा वाया सांताबई रा सींच्या,
जउ म्हारा लेहरा ले रया ॥

गहुँ रा जवारा ने कंकू रा क्यारा,
गहुँ म्हारा लेहरों रे रया ॥

गोविन्दभाई रा वाया, बसुबई रा सींच्या,
गहुँ म्हारा लेहरां रे रया ॥

जव (जौ) और गेहूँ के जवारे परसाई के यहाँ धोते हैं। बाड़ी में तथा घरों पर महिलाएँ गीत गाती हैं- माता के जवारे बोये हैं, क्यारियाँ कुमकुम की हैं। मेरे जौ हिलोरे ले रहे हैं। जवारे दीवानजी के द्वारा बोये गये और पाटण रानी ने पानी सींचा है। मेरे जौ (माता के जवारे) हिलोरे ले रहे हैं। जिसके घर गीत गाते हैं, उनके नाम से भी गीत में वर्णन होता है- जैसे गोविन्द के घर गीत गाते हैं, तो गीत में गाते हैं कि जवारे गोविन्द भाई ने बोये और उनकी धर्मपत्नी वसुबाई द्वारा सींचे गये हैं।

म्हारे लीप्या तो छाब्या गवरल आँगणा,
म्हारे नहिं है पगल्या रो मांडण पूत,
में माणसिया काय ने हरज्या ॥

म्हारे वाटको तो भरियो गवरल चूरमो,
म्हारे नहिं है चुरमा रो चुगण वाळो पूत,
में माणसिया काय ने हरज्या ॥

म्हारे कोरी तो मटकी गवरल जळ भर्यो,
म्हारे नहिं है पाणी रो पीवण पूत,
में माणसिया काय ने हरज्या ॥

म्हारे लीला रेसम रो गवरल घागरो
म्हारे निहिं है खोळा रो लोटण पूत,
में माणसिया काय ने हरज्या ॥

म्हारे लीप्या तो छाब्या गवरल आँगणा,

म्हारे दीदो पगल्या रो मांडण पूत,

म्हें माणसिया भले हरज्या ॥

म्हारे वाटको तो भरियो गवरल चूरमो,

म्हारे दीदो चुरमा रो चूगण पूत,

म्हें यो माणसिया भले हरज्या ॥

म्हारे कोरी तो मटकी गवरल जळ भरियो,

म्हारे दीदो पाणी रो पीवण वालो पूत,

म्हें यो माणसिया भले हरज्या ॥

म्हारे लीला रेसम रो गवरल घागरी,

म्हारे दीदो खोळा रो लोटण पूत,

म्हें यो माणसिया भले हरज्या ॥

म्हारे लीप्या तो छाब्या गवरल आँगणा,

म्हारे दीदो पगल्या रो मांडण पूत,

म्हें यो माणसिया भले हरज्या ॥

गौराजी को सम्बोधित करते हुए गीत में कहा है कि- गौराजी! मेरा घर और आँगन लिपा-पुता है, किन्तु मेरे घर-आँगन में पैर माँडने वाला पुत्र नहीं है। (पुत्र हेतु कामना की है।) गौरा जी! मेरे यहाँ चूरमे का कटोरा भरा है, किन्तु चूरमा खाने वाला पुत्र नहीं है। हम मनुष्य पुत्र के लिये लालायित हैं। गौराजी! मेरे यहाँ कोरी (नई) मटकी में जल भरा है, किन्तु पानी पीने वाला पुत्र नहीं है। गौराजी! मेरा हरे रेशम का घाघरा है, किन्तु गोदी में लोटने वाला पुत्र नहीं है। गौराजी से पुत्र प्राप्ति की कामना की है और अगले वर्ष गणगौर उत्सव के पूर्व पुत्र की प्राप्ति हुई। तब गीत में गाया गया है कि - गौराजी! मेरे घर-आँगन लिपे-पुते हैं। मुझे आपने आँगन में पैर माँडने वाला पुत्र दिया है। हम मनुष्य अच्छा अनुभव कर रहे हैं। गौराजी! मेरे यहाँ चूरमे का कटोरा भरा है। आपने चूरमा खाने वाला पुत्र दिया है।

मेरे यहाँ नई मटकी में जल भरा है, आपने जलपान करने वाला पुत्र दिया है। मेरा हरे रेशम का घाघरा है, आपने गोद में लोटने वाला पुत्र दिया है।

हरण कसन दोइ बळघा रना दे
 ईसवर राजा गाड़ी गेन्या जाय रना दे।
 वायं लगी वांजोली पुकारे रना दे,
 वांजोली ने पूतर देता जाओ रना दे ॥
 वांजोली ने पूतर नहिं देवी रना दे,
 सरवर री पाळ भँगाई रे रना दे ॥
 अंबा री डाळ मरोड़ी रे रना दे,
 बठी जो गाय उठाड़ी रे रना दे ॥
 भूखा बरामण उठाडूया रे रना दे,
 सासू नणद ने सतावी रे रना दे ॥
 हरण कसन दोइ बळघा रना दें,
 ईसवर राजा गाड़ी गेर्या जाय रना दे ॥
 वाय लगी ममता वउ पुकारे रे रना दे,
 ममता वउ ने पूतर देता जावो रे रना दे ॥
 ममता वउ ने पूतर भले देवाँ रे रना दे,
 सरवर री पाळ बंदाड़ी रे रना दे ॥
 आम्बारी डाळ सँजोई रे रना दे,
 उबेली गाय चराई रे रना दे ॥
 भूका तो बरामण जिमाडूया रे रना दे,
 सासू नणद ने सुखाई रे रना दे ॥
 हरण कसन दोइ बळ्या रे रना दे,
 ईसवर राजा गाड़ी जाय रे रना दे ॥

इस गीत में कहा गया है- हरण और कसन नामक दो बैल हैं। रनादे माता, उन्हें जोतकर ईश्वर राजा गाड़ी हाँकते जा रहे हैं। पीछे लगी हुई बाँझ पुकार रही है- रना देवी माता ! बाँझ को पुत्र देते जाओ। रनादेवी से ईश्वर जी कहते हैं- इस बाँझ को पुत्र नहीं देना, क्योंकि इसने तालाब की पाल तुड़वाई है। इसने आम की टहनी को मरोड़ी है। बैठी हुई गौमाता को उठाया है। इसने ब्राह्मणों को भूखे उठाया है और सास-ननद को दुःख दिया है। हरण- कसन दो बैल जोतकर ईश्वरजी गाड़ी हाँके जा रहे हैं।

अब जिसके घर गीत गा रही हैं, उस घर की बहू के बारे में गीत में कहा है- ईश्वरजी गाड़ी हाँके जा रहे हैं, गाड़ी में रनादेवी बैठी हैं। पीछे लगी ममता बहू पुकार रही है - रनादेवी माता ! ममता बहू को पुत्र देती जाओ । ईश्वरजी कहते हैं - ममता बहू को पुत्र देना, क्योंकि इसने तालाब की पाल बँधाई है, आम की डाल को सँजोया है, गौमाता को घास चराया है। रनादेवी इसने भूखे ब्राह्मणों को जिमाया है। सास-ननंद को सुखी रखा है।

अगर चन्दण रो किंवाड़ो, राय रूपा से वींजणों ।
अण ढोल्ये दिवाण जी पोढ्या, ढोळो पाटण राणी विंजणा ।
ढोळ ढळता ढळको जो आयो, हायां रो वींजणों ढळ गयो ।
के म्हारो वींजणों धरती ढळियो, के पाड़ोसण चोरियो ।
ना म्हारो वींजणों धरती ढळियो, ना पाड़ोसण चोरीयो ।
छोटो सो देवर हाँसो जो कीदो, दो नि देवर म्हारो वींजणों ।
जो आवे भाबज नगरी रो राजा, तोइ नि देवां वींजणों ।
जो आवे बाइ चंदणा रो वीरो, रंग भर देवां वींजणों ।

अगर चन्दण रो घड़िजे किंवाड़ो, राय रूपा से वींजणों । अगर और चन्दन का द्वार बना है, जहाँ चाँदी का पंखा रखा हुआ है। पलंग पर दीवानजी सोये हुए हैं, पाटण रानी पंखे से हवा करो। पंखा झलते-झलते धक्का लगा, जिससे हाथ का पंखा गिर गया। पाटणरानी कहती हैं कि या तो मेरा पंखा धरती पर गिरा या कि पड़ोसन ने चुराया है। मेरा पंखा दिख नहीं रहा है। छोटे-से देवर ने हँसी की, देवर से पाटण रानी कहती हैं कि मेरा पंखा दो। देवर कहता है- भाभी ! नगर का राजा भी आ जाये तो भी पंखा नहीं देंगे। अगर चन्दणा का भाई आयेगा तो पंखे में रंग भरकर देंगे।

ऊँचो पीपळ देवी खोकरो, जठे बठी गायां री गोठाण,
 हात चट्यो पांय पावड़ी, ईस्वर राजा धेनु चरावण जाय,
 बारे ने पछूड़ा रो गळनो, रनुबाई भात लइ जाय।
 रनुबई ने आवता ईस्वर देखिया, भांगी -भांगी कणियर केरी काम।
 अवळा ने सवळा ईस्वर वाळिया, मुखड़ा सुं बोल्या अवघड़ बोल।
 सड़-सड़ लागे ईस्वर कामड़ी ओ महादेव कामड़ी,
 हिवड़ा में कूचे अवघड़ बोल ।
 माय मळे नि मावसी, कुण हमारो आणों लई जाय,
 बिलाड़ा रा माधुसिंगजी राजवी, वेई तमरो आणो लई जाय ।
 माधुसिंगजी रल्या बइ रा बेसणा, पाटण राणी लागे लुळ-लुळ पांय।
 पाटण राणी ने देजो देवी डीकरो, राठोड़ा री वदजो दूणी वेल ॥

देवी! पीपल का ऊँचा वृक्ष है, पर वह पोला है। उसके नीचे गायों की गोठान बैठी है। (प्रातः से बारह बजे तक चरने के बाद छाया में पशुओं को बैठाते हैं, उसे 'गोठाण' कहते हैं।) हाथ में लकड़ी और पैरों में खड़ाऊँ पहने ईश्वरजी गौ-चारण हेतु ग्वाले बने। बारह पछूड़ा (अर्थात् बारह चद्वरों का रोटी बाँधने का कपड़ा) लेकर उसमें रणुबाई भोजन बाँधकर ले गयी। ईश्वरजी ने रनुबाई को आते देखा तो कनेर की लकड़ी के समान एक लकड़ी तोड़ी और रनुबाई की कमर पर इधर-उधर (दोनों तरफ मारी) फेर दी और अपशब्द भी कहे। क्योंकि वह भोजन देर से लायी थी। रनुबाई कहती हैं- ईश्वरजी! कामड़ी सड़-सड़ लग रही है और अपशब्द हृदय में चुभ रहे हैं। मेरी माँ और मौसी कोई नहीं है। मुझे कौन ले जाये?

गीत में कहा है कि बिलाड़ा के दीवान माधवसिंह राजा हैं, वे तेरा आणा ले जायेंगे। माधवसिंह जी ने बाई के लिए आसन लगाया, रनुबाई को महल में ले गये। पाटण रानी उनके झुक-झुककर पैरों पर पड़ रही है। देवी पाटण रानी को पुत्र देना। राठौड़ों की दुगुनी वंश-वृद्धि हो ।

ईसवर जी दाँतण कर लो नी,

महादेवजी दाँतण कर लो नी ।

पण हाँ जी, म्हारी माता दाँतण काय रा ॥

ईसवर जी रा दाँतण केळारा,

महादेवजी रा दाँतण अम्बा रा

ईसवर जी ओ नहावण कर लो नी,

महादेवजी ओ नहावण कर लो नी ।

म्हारी काक्यां ओ नहावण काँयरा,

म्हारी भाव्यां ओ नहावण काँय रा ।

ईसवर जी से नहावण गंगा को,

महादेव जी से नहावण झारी रो ।

ईसवरजी भोजन जिमलो नी,

रणुबइ भोजन जिमलो नी ।

पण हाँ जी..... । ।

म्हारी माताओ भोजन काँवण रा,

ईसवर जी ओ भोजन चुरमा रा,

रणुबइ ओ भोजन चावल रा,

पण हाँ जी..... । ।

भोजन लाओ कि भूकी जाऊँ रे वना,

झारी लाओ कि तीसी जाऊँ रे वना ।

पण हाँ जी..... । ।

तम्बु ताणों कि तावड़े जाऊँ रे वना,

मोजड़ियाँ लाओ के अलवाणि जाऊँ रे वना ।

पण हाँ जी..... ।।

थड़ो लाओ कि पाऊँ रे वना, पण हाँ जी.....।।

ईश्वरजी और रनुबाई को दातौन करने के लिए कहा है- ईश्वरजी! दातौन कर लो, महादेवजी दातौन कर लो। परन्तु हाँ जी, मेरी माता दातौन किसका करें? ईश्वरजी के लिए केले का दातौन, महादेवजी के लिए आम का दातौन है।

ईश्वरजी से कहा है- स्नान कर लो, महादेवजी स्नान कर लो। मेरी काकियाँ स्नान किससे करें? उत्तर मिला- ईश्वरजी का स्नान गंगाजी का और महादेवजी झारी से स्नान करेंगे। ईश्वरजी भोजन जीम लो, रणुबाई भोजन जीम लो। किन्तु हाँ जी, ईश्वरजी का भोजन किसका? मेरी माता का भोजन किसका (क्या) है? ईश्वरजी के लिये चुरमा का और रनुबाई के लिए चावल का भोजन है। किन्तु हाँ जी, भोजन लाओ कि भूखी चली जाऊँ, झारी लाओ कि पानी पिये बिना चली जाऊँ? किन्तु हाँ जी, तम्बू तानों कि छाया के बिना धूप में चली जाऊँ, मोजड़ियाँ लाओ कि नंगे पैर चली जाऊँ? किन्तु हाँ जी, रथ लाओ कि पैदल चली जाऊँ?

गणगौर उत्सव में माता के लिये छाया, रथ और मैदान में ठण्डक के लिए पानी छींटने आदि की व्यवस्था की जाती है।

म्हारा वाला वांयन देखो, परभात्यो तारो ऊगियो ।
 भले ऊँगो हपलाजी री कोखो, सूरज जिओ देवता जलमीयाँ ।
 भले ऊँगो राणी देरी कोखो, चन्द्रमाजी देवता जलमीयाँ ।
 सूरज जी मोटा देवो, म्हारे आँगण तेज नपे रया ।
 चन्द्रमाजी मोटा देवो, दुनियाँ में उजाळो करि रया ।
 भले ऊँगो अँजणा देरी को खो, हडुमानजी देवता जलमीयाँ ।
 हडुमानजी मोटा देवो, लंका बाळे ने सीता लावीया ।
 भले ऊँगो कोसल्या री को खो, रामजी भगवान अवतरिया ।
 भले ऊँगो देवकी जी री को खो, किसन जी भगवान अवतरिया ।
 भले ऊँगो उमा बड़ री को खो, भानो भई मानवी जलमीयाँ ।
 भानो भई मोटा लोको, म्हारी गवरा रो आणो लावीया ।

पत्नी अपने पति से कहती है कि मेरे प्यारे! पीछे देखो, भोर के तारे का उदय हो चुका है। उठो! भोर का तारा हपलाजी की कोख में उदय हुआ और सूर्यदेवता का जन्म हुआ। भोर का तारा रानी की कोख में उदय हुआ और चन्द्रदेव का जन्म हुआ। सूर्य बड़े देवता हैं, उनका तेज मेरे आँगन में तप रहा है। चन्द्रमा बड़े देवता हैं, संसार में उजाला कर रहे हैं। भोर का तारा अंजनी की कोख में उदय हुआ और हनुमानजी का जन्म हुआ। हनुमानजी बड़े देव हैं, वे लंका को जला कर सीता को लाये। भोर का तारा कौशल्याजी की कोख में उदय हुआ, भगवान राम अवतरित हुए। भोर का तारा देवकीजी की कोख में उगा और कृष्ण भगवान अवतरित हुए।

(जिसके घर गीत गाये जाते हैं, उस घर के व्यक्तियों का भी गीत में वर्णन किया जाता है, तदनुसार आगे का वर्णन है)।

भोर का तारा उमाबाई की कोख में उगा और भानो भाई ने मानव जन्म लिया। भानो भाई बड़े आदमी हैं, मेरी गौराजी का आणा (गौराजी को अपने यहाँ 'गणगौर उत्सव' के लिए मेहमान लाये।)

मगरा री खिड़कियों ओ राज, सूरज भले उगीयो ।
 पोर्या जागो सूरजी ओ राज, सूरज भले उगीयो ।
 पोर्या जागो चन्द्रमाजी हो राज, सूरज भले उगीयो ।
 देवता उठे ने पागाँ सँवारी हो राज, सूरज भले उगीयो ।
 वणरी पागों में मोतिड़ा री लूम, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो जाओ जळ जमनारे तीर, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो लेओ दाँतण झारी हाथ, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो करो जळ जमना रा अस्नान, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो लो थारा देवता रा नाव, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो दो सोना-रूपा रा दान, सूरज भले उगीयो ।
 मगरारी खिड़कियों हो राज, सूरज भले उगीयो ।
 पोऱ्या जागो मोती भइ ओ राज, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो उठे ने पाग सँवारो, सूरज भले उगीयो ।
 थारी पागों में मोतीड़ा री लूम, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो जाओ जळ गंगा रा नीर, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो करो गंगा असनान, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो लो माता गवरा रा नाव, सूरज भले उगीयो ।
 थाणा आँगणे बेन-भाणी जी, सूरज भले उगीयो ।
 थें तो दो सबने चुंदइयां रो दान, सूरज भले उगीयो ।

मकान की ऊँची खिड़कियों पर सूर्योदय का प्रकाश दिख रहा है। बच्चों जागो, सूर्य राजा अच्छे उगे हैं। बच्चों जागो चन्द्रमा जी राणा ला रहे हैं। सूर्यदेवता अच्छे उगे हैं। देवताओं ने उठकर अपनी पगड़ियाँ सँवार ली हैं, सूर्य अच्छा उगा है। उनकी पगड़ियों में मोतियों की लड़ियाँ हैं, सूर्य अच्छा उदय

हुआ है। आप जमुना के किनारे जाओ, सूर्य अच्छा उदय हुआ है। आप लोग दातौन और झारी हाथ में लो, सूर्य अच्छा उदय हुआ है। आप लोग जमुना जी के जल में स्नान करें, सूर्य अच्छा उदय हुआ है। आप लोग अपने देवताओं के नाम स्मरण करो, सूर्य अच्छा उदय हुआ है। आप लोग सोने-चाँदी का दान दो, सूर्य अच्छा उदय हुआ है। मकान की ऊँची खिड़कियों पर सूर्योदय का प्रकाश दिख रहा है। बालक मोती भाई जागो, सूर्य अच्छा उगा है। आप उठकर पगड़ी सँवारें, सूर्य अच्छा उगा है। आपकी पगड़ी में मोतियों की लड़ें हैं, सूर्य अच्छा उगा है। आप गंगाजी के तट पर जायें, सूर्य अच्छा उगा है। आप गंगाजी में स्नान करें, सूर्य अच्छा उगा है। आप गौराजी का ध्यान करें, सूर्य अच्छा उगा है। आपके आँगन में बहिन भानजियाँ हैं, सूर्य अच्छा उगा है। आप सभी को चुनरियों का दान दें, सूर्य अच्छा उगा है।

(84)

देवी धम्क्यो महिड़ारो माट, पाड़ोसण जागिया।

देवी तारो उग्यो पाछली रात, बाबाजी कदी आवसे।

देवी तारो उग्यो पाछली रात, काकाजी कदी आवसे।

देवी बाबा लाया गेणांरी गाँठ, गउरबई री आरती ।

देवी काकाजी लाया चुड़ला री जोड़, नुबाई री आरती।

देवी धम्क्यो महिड़ा रो माट, पाड़ोसण जागिया ।

देवी तारो उग्यो पाछली रात, वीराजी कदी आवसे।

देवी वीराजी लाया चूंदड़ी री जोड़, सायतबई री आरती ।

देवी धम्क्यो महिड़ा रो माट, पाड़ोसण जागिया।

देवी तारो उग्यो पाछली रात, मामाजी कदी आवसे ।

देवी मामाजी लाया मोजड़्याँ री जोड़, रोयणबाई री आरती ।

गउरबाई, रनुबाई, सातनबाई और रोयणबाई को सम्बोधित करते हुए गीत में कहा है- देवीजी भोर पूर्व छाछ करने का मटका घमका (मटके में रवाई घूमती है, तो मटके से आवाज निकली, उससे पड़ोसन जाग गयी)। देवीजी! पिछली रात्रि में तारा उदय हुआ, बाबाजी कब आयेंगे? बाबाजी आ गये तो कहाँ हैं देवी बाबाजी जेवरों की गठरी लाये हैं गउरबाई की आरती। देवी काकाजी चूड़ा लाये हैं रणुबाई की आरती । देवीजी पिछली रात्रि में तारा उदित हुआ, भाई कब आयेंगे? देवी! भाई चुनरी जोड़ लाये हैं सायतबाई की आरती। देवी पिछली रात्रि में तारा उदित हुआ, मामाजी कब आयेंगे? देवी मामाजी मोजड्या लाये हैं रोयणबाई की आरती।

हेवरियो गवरां देरा बाबाजी मोलावे रे,
हेवरियो गवरां देरा काकाजी मोलावे रे,
लावये माळण फुलरा हेवरा ॥
हेवरियो पेरे ने गवरां तावड़िये मत जावो ये,
तावड़िये मति जाओ ये,
परो ने कुम्हलाए देवि थारो हेवरो ॥
हेवरियो गवरांदे रा वीराजी मोलावे रे,
मामाजी मोलावे रे,
लावये माळण फुलरा हेवरा ॥
हेवरियो पेरे ने गवरां तावड़िये मति जाओ ये,
तावड़िये मति जाओ ये,
परो ने कुम्हलाए देवि थारो हेवरो ॥

फूलों की वेणी गवरौंजी के बाबाजी खरीद रहे हैं। वेणी गवरौंजी के काकाजी खरीद रहे हैं। वेणी (सेरा) पहनकर गौरीजी धूप में न जाओ, धूप में तुम्हारा सेरा कुम्हला जायेगा (मुरझा जायेगा)। गवरौंजी के भाई वेणी खरीद रहे हैं, मामाजी भी खरीद रहे हैं- ऐ मालन फूल के सेरे ला। सेरा पहनकर गवरौं धूप में न जाओ। देवीजी आपका सेरा धूप में मुरझा जायेगा।

दीवाणजी रा माधुसिंग जी दवडूया वागां जाय,

जाई ने चम्पेलो झंझोड़ियो ॥

झंझोड़ता रा मालन पकडूया दोई हाथ,

दोई पकड्या हाथ,

काय सरू चम्पेलो झंझोड़ियो ॥

म्हारे तो ये मालण गवरां देरो ब्याव के,

माळा हारू चम्पेलो झंझोड़ियो ॥

भाना भई रा गोविन्द भई दवडूया वागां जाय,

जाई ने चमोलो झंझोड़ियो ।।

झंझोड़ता रा मालण पकडूया दोई हाथ,

काय हारू चम्पेलो झंझोड़ियो ॥

म्हारे तो ये मालण सायदबई ने रोयणबई रो ब्याव,

गजरा हारू चम्पेलो झंझोड़ियो ॥

दीवानजी के माधुसिंग जी दौड़कर बगीचे में गये और जाकर चम्पा के झाड़ को झंझोड़ा। झंझोड़ते समय मालन ने उनके हाथ पकड़े और पूछा- किसलिये चम्पा को झंझोड़ा? उत्तर दिया- मालन मेरे यहाँ गौरादेवी का ब्याह है। माला के लिए चम्पा को झंझोड़ा। भाना भाई और गोविन्द भाई दौड़कर बगीचे में गये और चम्पा को झंझोड़ा। झंझोड़ते ही हाथ मालन ने पकड़े और पूछा चम्पा क्यों झंझोड़ा ? उत्तर मिला- मालन मेरे यहाँ सायतबाई का ब्याह है, गजरे के लिए चम्पा झंझोड़ा है।

क्या जवई गोरा क्या जवई हाँवळा,
क्या जाँई सरद पुनम रो चाँद, जवाँया ने लागो राज केवचड़ो ॥

ईस्वर जवई गोरा, महादेव जवई हाँवला,
चाँदुल जवई सरद पुनम रो चाँद, जवाँया ने लागो राज केवचड़ो ॥

कि बई गोरा कि बई हाँवळा,
कि बई हाँवणियाँ री तीज, जवाँयाँ ने लागो राज केवचड़ो ॥

रणुबई गोरा हो राज, गवरबाई हाँवळा,
सायतबई हाँवणियाँ री तीज, जवाँयाँ ने लागो राज केवचड़ो ॥

कौन से जँवाई गोरे और कौन से जँवाई साँवले हैं। कौन से जँवाई शरद पूर्णिमा का चन्द्रमा हैं? ईश्वरजी गोरे, महादेवजी साँवले, चाँदुल जँवाई शरद पूर्णिमा का चाँद हैं। जँवाइयों को यह जानने की इच्छा हुई कि कौन- सी बाई गोरी, कौन-सी साँवली और कौन-सी श्रावण की तृतीया है? रणुबाई गोरी, गौरीजी साँवली और सायतबाई श्रावण की तीज की तरह हैं। ईश्वरजी, महादेवजी और चाँदुलजी तीनों नामों से महादेव जी को पुकारते हैं।

जमना रे धोरे ऊबो रे आँको,
 रणुबाई तोड़े ईस्वरजी रो नाको,
 जमना रे धोरे ऊबो रे आँको,
 गउरबाई तोड़े महादेवजी रो नाको,
 क्योँ बोलो क्योँ बोलो राणी रा जाया,
 म्हारा पियरिया में एसी जो रीतो,
 धमण धमीजे ने गोळा तपीजे
 आवता जवाँया रा गाला रे देजो ॥
 जमना रा धोरे ऊबो रे आँको,
 सायतबाई तोड़े चाँदुल जी रो नाको ॥
 क्योँ बोलो क्योँ बोलो हउ जी रा जाया,
 म्हारा पियरिया में एसी जो रीतो,
 धमण धमीजे ने गोळा तपीजे,
 जाता जवाँयाँ रे ढोंगा पे दीजो ॥

यमुनाजी के किनारे आँका खड़ा है। रनुबाई ईश्वरजी का नाक तोड़ रही हैं। गउरबाई (गौरीजी) महादेवजी का नाक तोड़ रही है। क्योँ बोल रहे हो रानी के पुत्र? मेरे मायके में ऐसी रीति है। धम्मन धपती है, उसमें गोले तपते हैं। आते वक्त जँवाइयों के गालों पर तपे हुए गोले मारते हैं। गीत में इसी प्रकार सायतबाई द्वारा चाँदुलजी का नाक तोड़ने और जाते समय जँवाइयों के पुट्टों पर तपे गोले मारने का वर्णन किया गया है।

ईशवर गयाता ओ म्हारी हांडण्यां चरावे।
महादेव गयाता ओ म्हारी झोटडूयां रे लार।
हाँजे आया ओ म्हारी हांडण्यां गमई।
हाँजे आया ओ म्हारी झोटडूयां गमई।
म्हूँ तो ऊबी यो म्हारा काकाजी री पोळ।
म्हें तो ऊबी यो म्हारा बाबाजी री पोळ।
म्हूँ तो राखी यो म्हारा बाबाजी री लाज।
नीतर देती यो चाबुकड़ा दो-चार।
वेरण निंदड़ी नवाड़, धोवण निंदड़ी नवाड़।
थारी निंदड़ी रो म्हाने घणों रे संताप।
थारी निंदड़ी रो म्हाने घणों रे जंजाळ।

ईश्वरजी मेरी सांडणियाँ (ऊँटड़ियाँ) चराने गये थे और महादेवजी मेरी पाड़ियों के साथ गये थे।
(रनुबाई और गँवराजी कहती हैं-) शाम को मेरी सांडणियाँ गुमाकर आये, महादेवजी भी मेरी पाड़ियाँ
गुमाकर आये। मैं तो अपने बाबाजी, काकाजी के बरामदे में खड़ी हूँ। मैंने अपने बाबाजी की मर्यादा
रखी, नहीं तो उनको (ईश्वरजी और महादेवजी को) दो-चार चाबुक लगा देती, क्योंकि पशुओं को
सँभालकर वापस नहीं लाये। गीत गाते हुए महिलाएँ हँसती हैं।

ईशवर जी री वाड़ियाँ में हुवा पडूया रे लाल,
रणुबई रखवाळा जाय म्हारा लाल रे,
यो रतना गर केवड़ो रे लाल ॥
ईशवर जी रा माथे गोदड़ा रे लाल,
रणुबई रा माथ खाट म्हारा लाल रे,
यो रतनागर केवड़ो रे लाल ॥
कतरा में वेच्या गोंदड़ा रे लाल,
कतरा में वेची खाट म्हारा लाल रे,
यो रतनागर केवड़ो रे लाल ॥
घमड़ी में वेच्या गोदड़ा रे लाल,
कवड़ी में वेची खाट म्हारा लाल रे,
यो रतनागर केवड़ो रे लाल ॥

ईशवरजी की बाड़ी में फसल खड़ी है, उसको तोते खा रहे हैं। ईशवरजी और रखवाली करने जाती हैं। यह रतनागर केवड़ा है। ईशवरजी के सिर पर गोदड़े (रजाइयाँ) हैं, रणुबाई के सिर पर खटिया । कितने में गोदड़े बेचे और कितने में खटिया बेची? एक दमड़ी में गोदड़े बेचे और एक कौड़ी में खटिया बेची। यह रतनाकर केवड़ा है।

उपसंहार

हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं संगीत नाटक अकादेमी के प्रति जिन्होंने हमने एक सांस्कृतिक धरोहर को जानने, सहेजने तथा प्रलेखन करने का अमूल्य अवसर दिया।

हम उन समस्त लोक संस्कृति प्रेमी जनों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं की उन्होंने उनकी सांस्कृतिक परम्परा के प्रवाह में हमें डुबकी लगाने का अवसर दिया। उनके भरपूर सहयोग से हम गणगौर पर्व पर आधारित यह शोध परक प्रलेखन/दस्तावेज़ीकरण कर पाए।

आशा है हमारा यह प्रयास जिज्ञासुओं, लोक संस्कृति प्रेमियों के लिए प्रेरक सिद्ध होगा।

शोध व संकलनकर्ता

हेमंत देवलेकर

7987000769

विहान सोशयो कल्चरल वेलबीईंग सोसायटी, भोपाल

प्रति,
सचिव
संगीत नाटक अकादेमी
रविंद्र भवन
नई दिल्ली

दिनांक : 12 मई 2023

विषय : ICH स्कीम 2015-16 के अंतर्गत **निमाड़ के जनपदों की गणगौर परम्परा के आख्यान, लोकगीतों, नृत्य, संस्कार/विधानों के शोध प्रलेखन तथा गीतों के ऑडीओ दस्तावेजिकरण** की तीसरी रिपोर्ट आडियो, विडीओ स्वरूप में।

संदर्भ : ICH स्कीम 2015-16 के पत्र क्रमांक 28-6/ICH Sc/PAC/1303/45

महोदय,

हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि संगीत नाटक अकादेमी ने विलुप्त होती सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और प्रलेखन के संदर्भ में ICH स्कीम 2015-16 हेतु हमें चयनित कर सांस्कृतिक धरोहरों एवं परम्परा से जुड़ने का सृजनशील अवसर दिया। **निमाड़ के जनपदों की गणगौर परम्परा के आख्यान, लोकगीतों, नृत्य, संस्कार/विधानों के शोध प्रलेखन तथा गीतों के ऑडीओ दस्तावेजिकरण** विषय पर आधारित शोध कार्य करते हुए हमने मध्यप्रदेश के निमाड़ प्रांत के खरगोन, हरदा, भुवानिया, खंडवा, झाबुआ के सुदूर अंचलों- जनपदों की यात्रा की। निमाड़ के प्रमुख पर्व गणगौर के महत्व को जाना समझा। गणगौर के पौराणिक पर्व की उत्पत्ति के संदर्भ में मिथकीय कथाओं और लोक कथाओं के आधार को जाना और उनका प्रलेखन किया। विभिन्न गांवों में यात्रा करते हुए बुजुर्ग पीढ़ी की महिलाओं से गणगौर गीत सुने, पूजा पद्धति को समझा और उनकी रिकॉर्डिंग भी की तथा दस्तावेजिकरण किया। कई घरों में गीत संपदा को अंकित करके भी रखा गया है। हमने गणगौर गीत की संपदा को बड़े कृतज्ञता के साथ उनसे ग्रहण किया। चैत्र माह में होने वाली गणगौर के पर्व के हम साक्षी बने।

ICH स्कीम 2015-16 की इस तीसरी एवं अंतिम कड़ी में गणगौर पर्व से सम्बंधित पूजा अनुष्ठान, विधियों, गीत, नृत्य, लोक महत्व, इत्यादि विषयों के ऑडीओ, विडीओ संलग्न कर रहे हैं। निमाड़ के विभिन्न जनपदों में जाकर वहाँ जाकर पर्व में उपस्थित होकर तथा गणगौर के आराधकों से संवाद कर यह ध्वनि तथा छवियों का दस्तावेजिकरण किया गया है।

आशा है निमाड़ की गणगौर के सम्बंध में गीतों, कथाओं तथा पूजा विधियों का यह प्रलेखन इस विषय में जिज्ञासु तथा शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शन का काम करेगा तथा लाभकारी सिद्ध होगा।

धन्यवाद

भवदीय
हेमंत देवलेकर

विहान सोशयो कल्चरल वेलबीईंग सोसायटी, भोपाल (मध्यप्रदेश)